परिवार

(संस्मरणात्मक उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

परिवार

(संस्मरणात्मक उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

PARIWAR : Maithili Sansmarnatmak Upanyas by **Nand Kumar Mishra 'Nand'**, Gosauni Baidyanath Smriti Manch, Uphardaha, Darbhanga, 2021, ₹ **100/-**

© लेखकायत्त

प्रकाशक : **गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच**
उफरदाहा, जिला- दरभंगा
पिन- 847233 (बिहार)

प्रथम संस्करण : वर्ष 2021

पोथी प्राप्ति स्थान : विद्यार्थी पुस्तक भंडार
सकरी, दरभंगा

सहयोग राशि : ₹ 100/-

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

समर्पण

पूज्यवर पिताजी **स्व. बैद्यनाथ मिश्र**
एवं
पूजनीया माताजी **स्व. गोसाउनि देवीक**
पुण्यस्मृतिमे
सादर समर्पित ।

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

भूमिका

मनुष्यक जीवन रत्न समान होइत अछि । जहिना सोनाकेँ गलाकऽ आकर्षक अलंकार बनाओल जाइत अछि तहिना व्यक्ति समाज वा परिवारमे अनेक दु:ख-सुखक अनुभव करैत आगाँ बढ़ैत अछि आ उदात्त चरित्रक छाप छोड़ैत प्रेरणा पुरुष बनैत अछि ।

'परिवार' पुस्तकमे एहने चरित्र अछि नरेन्द्रक, ओ गरीब माता-पिताक सन्तान अछि । परिवारक एहन दयनीय स्थिति छलैक जे जखन ओ स्कूलमे पढ़ैत छल तँ समयपर स्कूलफीस नहि जमा करबाक कारणे नाम कटि जाइत छलैक । पुस्तक-कॉपीक सदा अभाव रहैत छलैक । तथापि ओ कहियो हिम्मति नहि हारलक । आगाँ बढ़ैत गेल । कोनो समस्याक समाधान ओ कौशल पूर्वक कऽ लैत छल । फलत: ओ लोकप्रिय होइत चल गेल । समाज मे अनेक दुष्ट स्वभावक लोक रहैत अछि । ओ सभ नरेन्द्रक मार्गमे बाधा उत्पन्न करबाक भरपूर प्रयास कयलक मुदा नरेन्द्रक सूझबूझक कारणे सभ असफल भेल । नरेन्द्र ओलतीक पानि जकाँ अपन मार्गपर बढ़ैत चल गेल ।

समाजमे ओ एतेक लोकप्रिय छल जे एकबेर कालीपूजामे कोनो कारणवश गाम नहि आबि सकल तँ सम्पूर्ण गामक लोक उदास भऽ गेल आ से उदासी तखने दूर भेलैक जखन छठिक पावनिमे ओ गाम आयल ।

नरेन्द्र स्वाभिमानी तँ छले संगहि अपन कुशाग्रबुद्धिक कारणे केहनो जटिल समस्याक समाधान सहज रूपेँ कऽ लैत छल ।

ओ तकनीकी शिक्षा पास कयलाक बाद विद्युत विभाग मे नोकरी करैत छल । ओकर बदली दरभंगासँ चाइबासा भऽ गेलैक । ओतऽ एक

मित्रक संग संगीतक गुरुजी लग गेल । नरेन्द्र अभिनय तथा संगीतमे विशेष अभिरुचि रखैत छल । गुरुजी विद्यालयक प्रधानाचार्य छलाह । नरेन्द्र हुनकासँ संगीतक शिक्षा सेहो लेबऽ लागल । एहीक्रममे गुरुजी केँ विद्यालयक कैशबुक लिखयबाक आवश्यकता पड़लनि । नरेन्द्र दस दिनमे एक वर्षक लेखा तैयार कऽ देलकनि । गुरुजी खूब प्रसन्न भेलथिन । आशीर्वाद दैत कहलथिन-अहाँ लेल कोनो काज असंभव नहि ।

एहि पुस्तकमे (नीलाम्बर बाबू) काकाजीसँ नरेन्द्रक आपकताक रोचक चित्रण भेल अछि तँ दिपाली आ गुरुजीक पुत्र शंकरक प्रेम संबंधकेँ रोमांटिक रूपेँ चित्रित कयल गेल अछि । मुदा शंकरक विवाह दिपालीसँ नहि होइत छैक । अन्ततः नरेन्द्रक प्रयाससँ शंकरक विवाह शर्मिला नामक कन्यासँ होइत छैक । घटनाक वर्णन अत्यन्त रोमांचक ओ कौतुहलपूर्ण भेल अछि ।

दुर्गापूजाक अवसर पर षड्यंत्र, मूर्ति भसानक समय अव्यवस्था, कालीपूजा अवसर पर भक्तिमय वातावरण आदिक चित्रण यथार्थ ओ रोचक भेल अछि ।

अन्तमे नरेन्द्रक पाँचो भाइक मिलनसार प्रवृत्तिक वर्णन प्रेरणाप्रद अछि ।

श्री नन्दकुमार मिश्र 'नन्द'क ई बारहम पोथी थिकनि । ओ साम्प्रतिक मैथिली साहित्य क्षेत्रमे लेखक रूपमे सुपरिचित भऽ गेल छथि । एहि पुस्तकमे एहन प्रसंग सब अछि जे मर्मकेँ स्पर्श करैत अछि तँ कतेको स्थल बौद्धिक-विमर्श दिस प्रेरित करैत अछि । घटनाक्रम, स्वाभाविक वर्णन, सरल ओ सहज भाषा तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एहि पुस्तककेँ अत्यन्त हृदयावर्जक बना देलक अछि । निष्कर्षक रूपमे कहल जा सकैछ जे प्रस्तुत पुस्तक मे सर्जनात्मक साहित्यक सुगन्ध पाठक वर्गकेँ सहज रूपमे भेटतनि ।

मुरलीधर झा

मकर संक्राति-14.01.2021
कबिलपुर

दू शब्द

'परिवार' पोथी एकटा संस्मरणात्मक उपन्यास थिक, जे विशुद्ध सत्य घटना पर आधारित अछि । केवल विवाद सँ बचबाक लेल एहिमे वर्णित पात्र आ स्थान काल्पनिक अछि । नरेन्द्र एकटा संयुक्त परिवारक संचालक छथि । हुनकर पालन-पोषण सेहो संयुक्ते परिवार मे भेल छलन्हि जाहि परिवारक मुखिया हुनकर ककाजी श्वेताम्बर बाबू छलाह, मुदा दुनूक सोच आ आचरणमे बड़ बेशी अंतर छलन्हि । बुझू तँ विपरीते छलाह मुदा श्वेताम्बर बाबू जँ ककरो गप मानैत छलाह तँ से नरेन्द्रेक । नरेन्द्र नेनपनहिसँ जाहि ठाम पयर-रोपि दैत छलाह, तकरा बिना पूरा कयने नहि छोड़ैत छलाह आ सेहो बलपूर्वक नहि, केवल युक्तिसँ, दयाक पात्र बनिक' ।

नरेन्द्र जाहि संयुक्त परिवार मे पोषित भेलाह, ताहिमे छल-कपट छलैक, द्वेष छलैक । सम्पूर्ण परिवारक बागडोर परिवारक मुखिया लग छलन्हि । आमद-खर्च करबाक अधिकार हुनके लग छलन्हि । हुनका विरोधमे ककरो बजबाक साहस नहि छलैक आ से केवल परिवारेटामे नहि, गामहुमे । परिणाम भेल जे केओ खाइते-खाइते मरैत छल आ केओ खयबाक लेल । नरेन्द्र जाहि संयुक्त परिवारक मुखिया छथि, ताहिमे सभकेँ अपन आमद-खर्च करबाक अधिकार छैक ।

नरेन्द्र अपना बुद्धि आ विवेकसँ सम्पूर्ण गामहिटाकेँ नहि, अपितु ओ जत' जत' जाइत छलाह, अपना आचरणसँ सभकेँ प्रभावित करैत रहलाह । कोनहु विरोधकेँ ओ अपन प्रेरणा बुझि, ओहिपर आर अधिक यत्नसँ काज करैत छलाह । विरोधसँ ओ आर बेशी उर्जान्वित होइत

छलाह । ओ कहिओ अपना विरोधीसँ उलझैत नहि छलाह । हुनकर सोच छलन्हि जँ विरोधीसँ उलझि जायब तँ सभटा उर्जा ओहीमे लागि जायत आ मुख्य मुद्दा धयले रहि जायत । ओ अपना आचरण आ कार्यकुशलतासँ विरोधीकेँ पाछाँ हटबाक लेल विवश क' दैत छलाह ।

"मुखिया मुखुसो चाहिऐ, खान-पान कहुँ एक ।
पालइ-पोषक सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक ।।"

कोनहु संयुक्त परिवारकेँ सुदृढ़ रखबाक लेल उपरोक्त कथनक पालन करब आवश्यक अछि जे केवल नरेन्द्र कयलन्हि । श्वेताम्बर बाबू ताहिमे विफल रहलाह । तेँ हुनकर संयुक्त परिवार बिखरि गेलन्हि आ नरेन्द्रक संयुक्त परिवार आदर्श प्रस्तुत कयलक ।

नरेन्द्र सनक संघर्षशील युवा प्राय: सब गाममे दू-चारिटा अवश्य होयताह । एहि तरहक घटना सेहो सभक संगे सम्पूर्ण नहि तँ आंशिको रूपमे अवश्य होयतन्हि । आवश्यकता छैक, तकरा उजागर करबाक ।

संस्मरणक प्रकाशनक लेल नागेन्द्र नाथ कश्यपक विशेष अनुरोध छलन्हि । हलांकि एहिमे विशेष रूपसँ डा. योगानन्द झा आ डा. भूवन भूषणक सहभागिता रहलन्हि, तेँ ओ लोकनि धन्यवादक पात्र छथि ।

हम विशेष रूपसँ आभारी छियन्हि सेवा निवृत्त प्राध्यापक डा. मुरलीधरझाजीक जे अपन अमूल्य समयमे सँ हमरा लेल किछु समय बहार क' क' अपन उचित सुझाव दैत 'भूमिका' लिखि उपकृत कयलन्हि ।

अंतमे गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंचक सभ सदस्यकेँ आ प्रिंटवेल दरभंगाक सभ कर्मीकेँ धन्यवाद दैत छियन्हि ।

मकर संक्रान्ति
14.01.2021

नन्द कुमार मिश्र "नन्द"
उफरदाहा, सकरी, दरभंगा
मो०-8986261756, 9608667396

परिवार

आइ नरेन्द्र सेवानिवृत्त भ' क' गाम आयल छथि । गाममे हुनकर खूब स्वागत भेलन्हि । जेम्हरे जाथि लोक सभ प्रेमपूर्वक बैसबाक आग्रह करैत छलथिन्ह । हुनका अयने गामक लोक सभ बड़ प्रसन्न छथिन । कारण नरेन्द्र बाहर रहितहुँ सभ दिन गामसँ जुड़ल रहलाह । सभक दु:ख-सुखमे खोज-पुछारि करैत रहलाह । भैयारीमे ज्येष्ठ होयबाक कारणे सेहो हुनका सभ कार्यमे गाम आयब आवश्यके छलनि । ओ आर्थिक रूपेँ ओतेक सुदृढ़ नहि छलाह, मुदा अपना आचरण आ व्यवहारसँ सभकेँ संतुष्ट रखबाक प्रयत्न करैत रहैत छलाह । गामक एहन केओ नहि छलाह जे नरेन्द्रसँ अप्रसन्न होथि । तकर एकटा आर कारण छलैक । प्रसन्नता आ अप्रसन्नताक मुख्य कारण होइत अछि स्वार्थ । स्वार्थ पैघसँ पैघ सम्बन्धक जड़िकेँ हिलाक' राखि दैत अछि । जत' स्वार्थ ऊपर भ' जायत ओहि ठाम केओ चैनसँ नहि रहि सकैत अछि । एक-दोसराक बीचक विश्वास टुटि जाइत अछि । इतिहास साक्षी अछि, रामक वनवास, महाभारत, हिन्दुस्तान आ पाकिस्तानक बँटबारा किएक भेल ? एकर एकेटा उत्तर भेटत 'स्वार्थ' । स्वार्थमे लोक आन्हर भ' जाइत अछि, विवेकहीन भ' जाइत अछि । ओकरामे उचित-अनुचितक ज्ञान नहि रहि जाइत छैक । जँ स्वार्थ नहि हो तँ अहाँसँ केओ अप्रसन्न किएक रहत ?

एक बेर कालीपूजाक अवसर पर कोनो कारणवश नरेन्द्र गाम नहि आबि सकलाह । परिवार तँ परिवार, सौंसे गामक लोककेँ अंदेशा भ' गेलैक । की कारण भ' सकैत छैक ? ओ तँ बिना कारणे कतहु रूक' बला लोक नहि छथि । कतेको गोटे कालीजीकेँ कबूला-पाती सेहो कयने

रहथिन । जखन छठिक अवसर पर नरेन्द्र गाम पहुँचलाह तँ सभ केओ संतोषक साँस लेलन्हि । सभ केओ ई जनबाक प्रयास कयलन्हि जे नरेन्द्र काली पूजामे किएक नहि अयलाह । नरेन्द्र सभक संग अपना ओहि ठाम भड़कल दंगाक विषयमे विस्तृत रूपे चर्चा कयलन्हि । कोना ओहि ठाम दंगा भड़कल, कोना कर्फ्यू लागल आ कोना ओहि ठामसँ बहरयबाक सबटा बाट बन्न भ' गेल छल ।

हठात् आइ नरेन्द्रकेँ अपन नेनपन मन पड़ि गेलन्हि । कोन धरानीसँ पढ़लनि-लिखलनि । हुनका पढ़बाक लेल परिवारसँ जे अपेक्षित सहयोग भेटबाक चाही, से नहि भेटलन्हि । कुशाग्र बुद्धिक होइतहुँ ओ ओत' धरि नहि पहुँचि पओलन्हि, जत' धरि पहुँचबाक चाहैत छलनि । तखन एतबहि पर संतोष कयलन्हि, जे कपारमे जे लिखल छलन्हि, से भेटलन्हि ।

नरेन्द्र छलाह तँ मध्यम वर्गीय परिवारक सदस्य, मुदा परिवारक मुखिया उचित ढंग सँ परिवारक संचालन नहि क' पबैत छलाह । पता नहि ई हुनकर स्वभाव छलनि वा लाचारी । किएक तँ ओहि समयमे परिवारक संग भयंकर मुकदमाबाजी चलि रहल छलैक जाहिमे टाका पानि जकाँ बहि रहल छलैक । परिवारक मुखिया हुनकर बड़का कका श्वेताम्बर बाबू छलाह । ओ बड़ स्वाभिमानी छलाह आ संगहि जिद्दी सेहो । ओ टुटि सकैत छलाह मुदा ककरो सोझाँ झुकि नहि सकैत छलाह । ओ अपना जिद्दक सोझाँ ककरो किछु नहि सुनैत छलाह । तेँ हुनकासँ केओ मुँहा-ठुट्ठी नहि करैत छलन्हि । ओ जे बाजि दैत छलाह, से ब्रह्मवाक्य भ' जाइत छलैक । ओकरा केओ नहि पलटि सकैत छलैक । तेँ नरेन्द्रक पठन-पाठनमे बड़ व्यवधान भेलन्हि । स्कूलमे फीसक अभाव सँ सभ दिन नाम कटले रहैत छलन्हि । किताब-कापीक सेहो अभावे रहलन्हि । हलाँकि ओहि समयमे पढ़ाइ-लिखाइ ओतेक महग नहि छलैक । वर्ष भरिक स्कूलक फीस तीस रुपैया आ किताब-कापी बीस रुपैया । कुल मिला-जुलाक' पचास रुपैया । मुदा एतबहु जुटायब कठिन छलैक ।

श्वेताम्बर बाबूक मानसिकता छलन्हि जे परिवारक केओ

पढ़य-लिखय नहि । जँ सब केओ पढ़िये लेत तँ खेती-गृहस्थी के करत, माल-जालक चरबाहि के करत ? तेँ ओ अपना बेटाकेँ छोड़ि ककरो पढ़यबाक पक्षमे नहि छलाह वा ई बुझू जे ओ ककरो स्कूलक फीस वा किताब-कापीक लेल टाका नहि दैत छलाह । हुनकर बेटा वर्गमे प्रथम अबैत छलथिन्ह । हुनका स्कूलक फीस माफ छलन्हि आ अन्य सुविधा कोनो ने कोनो रूपमे स्कूलेसँ भेटि जाइत छलन्हि । परिवारमे स्वेच्छासँ नरेन्द्रक छोटका कका नीलाम्बर बाबू पढ़ैत छलाह, सेहो श्वेताम्बर बाबूक कृपासँ नहि । ओ तँ दादी माँक कृपा छलन्हि जे बीच-बीचमे मदति क' दैत छलथिन्ह । नीलाम्बर बाबू अपनहुँ पढ़ैत छलाह आ परिवारक अन्य सदस्यकेँ सेहो यथासम्भव पढ़बैत छलाह । ओ जखन कखनहुँ कालेजसँ छुट्टी भेला पर गाम अबैत छलाह, तँ सब बच्चाकेँ ल' क' पढ़बाक लेल दलान पर बैसैत छलाह । संगहि अनुशासन पर सेहो ध्यान दैत छलाह । नरेन्द्रसँ हुनका विशेष स्नेह छलन्हि । हुनकर नजरि सबसँ बेशी नरेन्द्रे पर रहैत छलन्हि । कोनो गलती पर सबसँ बेशी सजा नरेन्द्रकेँ भेटैत छलन्हि । ओ नरेन्द्रक कुशाग्रता देखि चाहैत छलाह जे नरेन्द्र खूब पढ़ि-लिखिक' इनजिनियर वा पैघ अधिकारी बनथि । तेँ ओ नरेन्द्रक छोटसँ छोट गलती पर सजा दैत छलाह । हुनका गाम अबितहिँ सब बच्चा सतर्क भ' जाइत छल । नरेन्द्रक मातृक सेहो ओतेक सम्पन्न नहि छलन्हि जे आर्थिक रूपे नरेन्द्रक मदति करितन्हि । ओना तँ सभक मोनमे ई लालसा रहैत छैक जे हमर धिया-पूता पढ़ि-लिखिक' किछु बनय । से हुनको माँ-बाबूजीकेँ होइत छलन्हि मुदा जाहि ठाम अर्थक काज छलैक, ओहो सब मूक दर्शक बनि जाइत छलाह । जहिना अंग्रेज अफसरक सोझाँ कोनो भारतवासीक मुँह नहि खुजैत छलैक, तहिना ओहि परिवारमे श्वेताम्बर बाबू लग ककरो बकार नहि फुटैत छलैक । बुझू तँ सब सदस्य गुलामीक जीवन जीबि रहल छलाह ।

ओहि परिवारमे एके गोटे उचित-अनुचित पर बजनिहारि छलीह आ से छलीह नरेन्द्रक दादीमाँ, मुदा ओहो सहमियेक' बजैत छलीह । कहिओ काल श्वेताम्बर बाबू हुनको फज्झति करबासँ नहि चुकैत छलाह ।

जखन नरेन्द्र हाइस्कूलमे गेलाह, तँ फीसक अभावमे सब दिन नाम कटले रहैत छलन्हि । किताब-कापीक अभावमे गृह कार्य नहि क' पबैत छलाह आ तेँ शिक्षकक मारिक डरे वर्गसँ भागल रहैत छलाह । कहिओ ढंगसँ पढ़ि नहि पओलनि । जखन परीक्षाक समय अबैत छलैक, तखन एकटा सम्बन्धी, जे सम्बन्धमे नाना लगैत छलथिन्ह, ओ स्कूल जाक' साल भरिक फीस जमा करैत नाम लिखबा दैत छलथिन्ह आ नरेन्द्र वार्षिक परीक्षामे शामिल भ' पबैत छलाह । ओना तँ ओ व्यक्ति नरेन्द्रक पितिऔतक नाना छलथिन्ह मुदा ओ नरेन्द्रक स्वभाव आ व्यवहार देखि हुनका अपना दौहित्रो सँ बेसी मानैत छलथिन्ह । नरेन्द्रो हुनकर बड़ सम्मान करैत छलथिन्ह । कतेको बेरि ओ नरेन्द्रक लेल अपना बेटीओकेँ नीक-बेजाय कहि दैत छलाह । ओ यदा-कदा नरेन्द्रक बाबूजीकेँ कहैत छलथिन्ह, 'अपने कोनो चिंता नहि करब । एखन अहाँकेँ कष्ट अछि मुदा आगू चलिक' अहाँक हाथ केओ नहि पकड़ि सकताह । अहाँ सभसँ नीक जकाँ जीवन व्यतीत करब ।' आइ हुनकर आशीर्वाद फलित भेलनि । एहि तरहेँ नरेन्द्र कहुना क' मैट्रिक पास कयलन्हि ।

एहि बीचमे नरेन्द्र जखन कखनहुँ मामा गाम जाइत छलाह तँ अपना छोटका मामाक कापी, कलम वा कैंचा उड़ायब नहि बिसरैत छलाह । हुनकर छोटका मामा हुनकासँ दू क्लास आगू पढ़ैत छलथिन्ह । परोक्षमे ओ बड़ बजैत छलाह, मुदा सोझाँ अबितहि हँसिक' टारि दैत छलाह । जेना कि पुनः पहुँचलाक बाद नानी बजैत छलीह । हुनकर मामा-गाम अभावग्रस्त रहितहुँ स्वभाव आ व्यवहारमे एकदम निर्मल छलन्हि । स्वच्छ आचार-विचारसँ परिपूर्ण लोक । ओहि ठाम पैघसँ पैघ आ छोट सँ छोट लोक सभकेँ 'यौ' कहि सम्बोधित कयल जाइत छलैक । सभ केओ संस्कारी एहन जे बालक, युवा आ बूढ़ भोरे स्नान क' एक लोटा जल भैरव बाबाकेँ अवश्य अर्पित करैत छलथिन । तकरा प्रभावे गाम शिक्षित आ सुसंस्कृत अछि । एहि वातावरणक प्रभाव नरेन्द्रक सब भाय-बहिनिक संग हुनका गामोक लोक पर पड़लन्हि । हुनका गाममे सबकेँ सब -हौ' वा 'रौ' कहि एक दोसरकेँ सम्बोधित करैत छलथिन्ह ।

नरेन्द्र सेहो बाबू, ककाक संग नाना बाबाकेँ 'हौ' कहैत छलथिन्ह । एहि लेल हुनका नानीसँ कतेको दिन डाँट सुन' पड़लन्हि । अंततः नरेन्द्रक आदति मे सुधार भ' गेल आ धीरे-धीरे हुनका सभ भाय-बहिन मे सेहो । जखन हुनका सभक बाजबमे सुधार भ' गेल तखन गामक लोक सेहो धीरे-धीरे ओकर अनुशरण कर' लगलाह ।

नरेन्द्रकेँ नेनपनहिसँ समाजिक कार्यमे विशेष अभिरुचि छलन्हि । हुनकर आर तीनटा संगी छलथिन्ह, किशोर, शेखर आ सुमन । सभ केओ एके स्कूल आ एके वर्गमे पढ़ैत छलाह । ओहिमे सुमन सबसँ बेसी नरेन्द्रकक संग पुरैत छलाह । सुमनक बाबूजीकेँ ई सब पसिन्न नहि छलन्हि । ओ सुमनकेँ तँ डँटितहि छलथिन्ह, संगहि नरेन्द्रकेँ सेहो अनाप-सनाप गप कहि दैत छलथिन्ह । नरेन्द्र कहिओ हुनका गप सँ हतोत्साहित नहि भेलाह । ओ बुझैत छलाह जे सुमनक बाबूजी नकारात्मक सोचबला व्यक्ति छथि । गामोमे हुनकासँ ककरो गप नहि होइत छलन्हि । बुझू तँ ओ गामोमे एकरबे छलाह । हुनका गपसँ नरेन्द्रक उत्साह आर बढ़ि जाइत छलन्हि । ओ ओहि अपमानकेँ प्रेरणाक रूपमे लैत छलाह ।

नरेन्द्रमे एकटा आर विशेष गुण छलन्हि । जखन केओ हुनका कार्यक बिरोध करैत छलन्हि, तँ ओहि कार्यक गति आर बढ़ि जाइत छलैक आ मास दिनक काज एके पखमे भ' जाइत छलैक । एक बेरक गप अछि- नरेन्द्र आ सुमन सप्तम वर्गमे पढ़ैत छलाह । हुनका पाठ्यक्रममे एकटा नाटक छलैक 'प्रताप प्रतिज्ञा' । स्कूलमे छात्र लोकनि ओकर मंचन कयलन्हि । नरेन्द्र आ सुमन ओ नाटक देखि रहल छलाह । ओ सब एहिसँ बड़ प्रभावित भेलाह । ओ दुनू गोटे अपना गाममे एहि नाटकक मंचन करबाक निश्चय कयलनि । एहि लेल किछु आर लोकक आवश्यकता छलैक । साज-सामान आ अन्य व्यवस्थाक लेल किछु टाका-पाइक सेहो आवश्यकता छलैक । ओ एहि लेल किछु आर गोटेसँ सम्पर्क कयलनि । सबसँ पहिने हिनका लोकनिक भेट जानकी बाबूसँ भेलन्हि । जानकी बाबू गामक सुभ्यस्त परिवारक सदस्य छलाह । ओ दशम वर्गक विद्यार्थी छलाह । हुनका अपना बैचक विद्यार्थी पर नीक पकड़ छलन्हि । संगहि

ओ आशावादी लोक छलाह । हुनकर सोच सकारात्मक छलन्हि । तेँ नरेन्द्र आ सुमन सबसँ पहिने हुनके लग गेलाह । हुनका सब गप कहलथिन्ह । ओ हुनका सभक सोचसँ बड़ आह्लादित भेलाह । ओ कहलथिन्ह, बौआ ! हम सब कतेको बेर एहि विषय पर विचार कयलहुँ, मुदा सफल नहि भ' सकलहुँ । तथापि हार नहि मानल अछि । चलू, एक बेर आर प्रयास करैत छी । आब तँ हम सब एहि विचारक तीन गोटे भ' गेलहुँ । अभियान आर तेज भ' गेल । आब तँ ओ सब तीनू लोककेँ हिला सकैत छलाह ।

नरेन्द्र पुछलथिन्ह, "जानकी भाय ! एहि लेल अपने जे पूर्वमे प्रयास कयने छलहुँ आ सफल नहि भेलहुँ, तकर की कारण छलैक ?"

जानकी बाबू कहलथिन्ह "देखह नरेन्द्र ! हम सब तँ स्कूल, कॉलेज देखलहुँ । गामसँ बाहर भेलहुँ आ बाहरक हवा-पानि लागल, मुदा जे केओ गामसँ बहरायल नहि छथि, हुनका लेल तँ गाम एतबहिटा अछि । जेना इनारक बेंगक लेल दुनियाँ इनारे भरि होइत अछि ।"

नरेन्द्र पुछलथिन्ह, ''जानकी भाय ! हम अहाँक कहबाक अभिप्राय नहि बूझल ?"

जानकी बाबू कहलथिन्ह, "ई तँ हम-अहाँ ने बुझैत छियैक जे नाटकक मंचनसँ हमरा लोकनिक बौद्धिक विकास होयत । ककरो लग बजबाक धाक टूटत । कतहु सय-पचासक बीच निधोख बाजि सकब ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "जी हँ, इएह तँ हमरा सभक उद्देश्य आ अभिप्राय अछि । एहिसँ हमरा सभक आचार-विचार मे सेहो बदलाओ आओत । ककरा संग कोना गप-सप कयल जयबाक चाही, इहो सब तँ एहि माध्यमे सीखब ।"

जानकी बाबू कहलथिन्ह, "मुदा किछु बूढ़ लोकसभ एकर विरोध करैत छथि । हुनका लोकनिक कहब छन्हि जे ई सभ क्रिया-कलाप हमरा सभक लेल उचित नहि । एहिसँ धिया-पूतामे उद्दण्डता बढ़त । धिया-पूता बेकहल भ' जायत । ई काज नीक लोकक लेल नहि । कहबी छैक, 'बुड़ि होअय से नाच देखय । इएह उदाहरण देताह ।''

सुमन कहलथिन्ह, "तेँ नाटकक मंचन आर आवश्यक अछि । देखैत नहि छियैक, बगलक गाममे दुर्गापूजामे नाच होइत अछि । देखनिहारक करमान लागि जाइत अछि, मुदा शब्द अशुद्ध भाषा टेढ़ आ राग बेसुरा । एहिसँ हमर अगिला पीढ़ी की सीखत ? इएह काज जँ हम सब करब, एकटा पढ़ल-लिखल समाज करत, तँ जतबहि करत से नीक आ शुद्ध करत । ओकर नीक जकाँ तैयारी करत, रिहर्सल करत ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "कोनो नव काज मे विरोध आ विरोधीक सामना तँ करहिटा पड़त । जेना ऊँच स्थानसँ नीचा कुदबामे लोककेँ डर होइत छैक आ कूदि गेला सँ ओ डर स्वतः खतम भ' जाइत छैक । तहिना लीकसँ हटि जँ कोनो काज करब, तँ ओकर विरोध स्वाभाविके अछि मुदा सफल होइतहिँ ओएह आधार बनि जाइत छैक आ सभ दिससँ ओकर स्वागत होइत छैक । हँ, एहि लेल ई सोचब आवश्यक अछि जे काज नीक आ जनोपयोगी होयबाक चाही । दोसर दृष्टिमे विरोधसँ सोच सुदृढ़ होइछ आ ओहिसँ शक्ति सेहो भेटैछ आ ओ शक्ति मूल शक्तिसँ बेसी उर्जावान होइछ । तेँ विरोधीकेँ बुझयबाक कोशिश करब उचित अछि ।

सुमन कहलथिन्ह, "एहिमे की छैक । हम सब विरोधी केँ बुझयबाक प्रयत्न करब । जँ मानि गेलाह तँ ठीक आ जँ नहि मानलनि तँ हुनकर बाट अलग आ हमरा सभक अलग ।"

जानकी बाबू कहलथिन्ह, ''आइसँ पाँच वर्ष पूर्व जखन हम सब एकर बीड़ा-पान उठौने रहियैक तँ एकाधकेँ छोड़ि सौंसे गामक लोक एकर विरोध कयने छलन्हि मुदा हमरा सभक बुझौलाक बाद सभ गोटे तँ सही बाट पर आबि गेलाह । मात्र दुइये गोटे एकर प्रबल विरोधी बाँचि गेल छथि ।"

सुमन पुछलथिन्ह, "के...के...?"

जानकी बाबू कहलथिन्ह, "एकटा तँ अहींक बाबूजी आ दोसर हुनके परम मित्र सर्वेश बाबू । तखन सर्वेश बाबू अवसरवादी लोक छथि ।

ओ जेम्हरे जीत देखताह, तेम्हरे टघरि जयताह, मुदा अहाँक बाबूजी ओएह करताह जे एक बेर बाजि देलथिन ।"

सुमन कहलथिन्ह, "हमरो सएह अनुमान अछि । हमरा बाबूजीकेँ तँ केओ किछु कहिओ नहि सकैत छन्हि । जएह कहथिन्ह, हुनके किछु अटपट बाजि देथिन्ह । ओना एकटा हुनका विरोध कयने की भ' सकैत छन्हि ? एसकर वृहस्पतिओ झूठ ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "से तँ छैक मुदा हमर उद्देश्य तँ से नहि अछि । हम सभ जे किछु कर' चाहैत छी से ककरा लेल, अही समाजक लेल ने । तेँ हमरा सभक प्रयास रहबाक चाही जे हम सभ सब गोटेकेँ मनाबी, सभक तर्ककेँ अपना बुद्धि आ ज्ञानसँ काटी आ जँ हम सभ एहिमे सफल भ' गेलहुँ तँ हम सभ विजयी भ' गेलहुँ । काल्हिसँ रोकनिहार-टोकनिहार केओ नहि रहत ।"

सभ केओ मिलिक' प्रयास शुरू कयलनि । बाहरसँ नाटकक सामग्री यथा पर्दा-पोशाक मँगबाओल गेल । एकटा डाइरेक्टर जे सभकेँ अपन-अपन अदाकारीक लेल उचित निर्देश दैत छलाह, सेहो आने गामसँ बजाओल गेल छलाह । नाटकक नाम छलैक 'नल-दमयंती' । एक मास धरि सब कलाकारकेँ खूब अभ्यास कराओल गेलन्हि आ सरस्वती पूजाक अवसर पर नाटकक मंचन भेल । सब दिससँ ओकर प्रशंसा होअय लागल । हिनको सभकेँ जे एकटा धुकधुकी छलन्हि से खतम भ' गेलन्हि । एहिसँ एकटा फायदा इहो भेलन्हि जे सुमनक बाबूजी आ सर्वेश बाबूक बीच जे दोस्ती छलन्हि, ताहिमे दरारि आबि गेलन्हि । बिना कोनो प्रयासक हिनका सभक एकटा विरोधी कम भ' गेलथिन्ह ।

गप भेलैक जे हिनका सभक सब गतिविधि पर सर्वेश बाबूक नजरि रहैत छलन्हि । ओ देखलन्हि जे सुमनक बाबूजीक विरोधक बादो सुमन एहिमे शामिल छथि । हुनका बुझेलन्हि जे सुमनक बाबूजी हमरा संग विश्वासघात क' रहल छथि । एहेन नहि हो जे हम एसगर पड़ि जाइ । ओ नाटक होयबासँ दू दिन पूर्व जानकी बाबू लग पैरवी कयलन्हि ।

ओ चाहैत छलाह जे हुनको बेटा ओहिमे शामिल कयल जाथि । जानकी बाबू एकटा छोट-छीन भूमिका हुनको द' देलथिन्ह । छोट-छीन भूमिका एहि लेल देलथिन्ह, कदाचित् जँ विश्वासघातो करताह तँ हमरा सभक काज नहि गड़बड़ायत । अही परिप्रेक्ष्य मे सुमनकेँ सेहो छोटे-छीन भूमिका देने छलथिन्ह, मुदा एहन किछु नहि भेलैक । सब काज तँ भ' गेलैक मुदा सुमनक पितिऔत केँ जे 'नल'क भूमिकामे छलाह, अपने पित्तीक कोपभाजन होअय पड़लन्हि । बात एतेक बढ़ि गेलैक जे हुनका किछु दिनक लेल गाम छोड़ पड़लन्हि । हुनका जीवनक ओ पहिल आ अन्तिम नाटक रहलन्हि ।

जखन लोक एकटा सीढ़ी चढ़ि जाइत अछि, तँ ओकर उत्सुकता आर बढ़ि जाइत छैक दोसर सीढ़ी चढ़बाक लेल । तहिना ई मोद मंडली निरंतर आगू बढ़ैत रहल आ सब विरोधी पाछाँ छुटि गेलथिन्ह । गामक अन्य लोकक सौहार्दपूर्ण प्रोत्साहन आ शुभकामना एहि मोद मंडलीकेँ भेटैत रहलैक ।

नरेन्द्र एतेक सरल चित्तक लोक छलाह जे ओ सहर्ष सभक सेवा-टहल करैत रहैत छलाह । ओ स्कूल जाथि वा नहि मुदा जँ ककरो कोनो काज छैक आ से नरेन्द्रसँ होयब सम्भव छैक, तँ नरेन्द्र अपन पयर पाछाँ नहि करैत छलाह ।

एक दिन नरेन्द्र स्कूल जा' रहल छलाह । केओ गोटे हुनका सोर कयलथिन्ह । हुनका बुखारक दवाइ केर आवश्यकता छलन्हि । हुनकर देह बुखारसँ धह-धह जरि रहल छलन्हि । ओ ठीकसँ ठाढ़ो नहि भ' सकैत छलाह । ओहि दिनमे दवाइ सर्वत्र नहि भेटैत छलैक । ताहि लेल कमसँ कम दस किलोमीटर जायब आ दस किलोमीटर आयब आवश्यक छलैक । नरेन्द्र सोचमे पड़ि गेलाह । जँ स्कूल जयताह तँ दवाइ नहि आओत आ जँ दवाइ अनताह तँ स्कूल छुटि जयतन्हि । नरेन्द्र स्कूल जयबा सँ बेसी दवाइकेँ प्राथमिकता देलन्हि । ओ दबाइ आनि ओहि व्यक्तिकेँ देलथिन्ह । ओ व्यक्ति नरेन्द्रकेँ खूब आशीर्वाद देलथिन्ह मुदा हुनकर देल गेल आशीर्वाद नरेन्द्रकेँ कोनो काज नहि देलकन्हि । ओहि दिन वर्ग मे

मास्टर साहेब किछु गृहकार्य देने छलथिन्ह । सब बच्चा गृहकार्य बनाक' ल' गेल मुदा नरेन्द्र अनुपस्थित रहबाक कारण एहिसँ अनभिज्ञ छलाह । मास्टर साहेब हुनका एहि अवज्ञाक लेल दण्डित कयलथिन्ह जकरा नरेन्द्र हँसैत-हँसैत स्वीकार क' लेलन्हि । पढ़बासँ नरेन्द्रकेँ बहुत अभिरुचि छलन्हि । ओ अपने तँ जे किछु मुदा एहि चिंतामे सतत रहैत छलाह जे हुनकर पिठिया भाय-बहिन सभ कोना पढ़त । ओ नहि चाहैत छलाह जे जे कोनो असुविधा हुनका संगे भेलन्हि, से कोनो अन्यक संग होअय । हुनका रहबाक लेल घर नहि छलन्हि । खेती-बारीक लेल बाबूजीकेँ बड़द नहि छलन्हि मुदा नरेन्द्र एहि सब पर ध्यान नहि द' केवल परिवारक स्वास्थ्य आ शिक्षा पर ध्यान देलन्हि आ सब भाय-बहिनकेँ यथासाध्य पढ़ेलन्हि । नीलाम्बर बाबू चाहैत छलथिन्ह जे नरेन्द्र आगू पढ़थि, आइ.एस-सी. मे नाम लिखाबथि मुदा नरेन्द्र एहि लेल तैयार नहि छलाह । ओ जल्दीये नौकरी पयबाक लेल आतुर छलाह जाहिसँ अपना भाय-बहिनकेँ पढ़ा सकथि । एहि मादे ओ अपना मामाक ओहि ठाम गेलाह । मामा रेलवेमे नौकरी करैत छलथिन्ह । ओ मामाकेँ सब गप कहलथिन्ह । मामा कहलथिन्ह, ''एखन रेलमे बिना तकनीकी शिक्षाक नौकरी नहि भेटैत छैक । तेँ अहाँ सबसँ पहिने आइ.टी.आइ. क' लीअ' ।''

नरेन्द्र मामाक सलाह पर आइ.टी.आइ. मे नामांकन करौलन्हि । नरेन्द्रक एहि आचरणसँ नीलाम्बर बाबू रुष्ट भ' गेलाह । ओना हुनकर रुष्ट होयब स्वाभाविके छलन्हि, मुदा ओ नरेन्द्रक कमजोरी नहि बुझैत छलथिन्ह आ नरेन्द्र अपन कमजोरी खूब नीक जकाँ बुझैत छलाह । जे केओ दू बेरमे मैट्रिक पास कयलक, सेहो तृतीय श्रेणी मे ओ आइ.एस-सी. कतेक बेरमे करतैक । तेँ नरेन्द्रक निर्णय उचित छलन्हि । ओ दरभंगामे अपन बड़का मामा भरतजीक डेरा पर रहब शुरू कयलन्हि । चाउर-दालि तँ गामेसँ अनैत छलाह मुदा टाकाक अभाव छलन्हि, तेँ ओ टाका नहि द' सकलाह । एक मासतँ बड़ सुन्नर बीतल, तकर बाद उछन्नरि शुरू भेल । कहिओ दालि तँ तरकारी नहि आ कहिओ तरकारी तँ दालि नहि । नरेन्द्रकेँ ई बुझबामे नहि अबैत छलन्हि जे एना किएक भ' रहल छैक ।

ओ नित्य छओ बजे संस्थान जाइत छलाह आ तीन बजे दुपहरमे आपस अबैत छलाह । तावत प्रायः घरक अन्य लोक भोजन क' लेने रहैत छलाह । तेँ नरेन्द्रकेँ ई मात्र संयोग बुझयलन्हि । ओ एहिपर ध्यान नहि देलन्हि । मामी एकान्त मे मामासँ पूछैत छलथिन्ह, ''की, नरेन्द्र सभदिन एतहि रहताह ? हुनका रहने हमरा बाल-बच्चाकेँ बहुत दिक्कत होइत अछि । एनातँ हमरो बजट गड़बड़ा जायत । आब तँ एक मास भ' गेलन्हि । आब कहिऔन जे अपन डेरा अलग करताह ।''

मुदा मामा गपकेँ टारि दैत छलथिन्ह । लोकक नजरिमे नरेन्द्रक बड़की मामी बड़ नीक लोक रहथिन आ मामा भरत बाबू बड़ अधलाह । कतेको गोटेक मुँहे हुनका बड़की मामीक प्रशंसा आ भरतबाबूक खिधांस सुनल रहनि जखन कि नरेन्द्रक दृष्टिमे स्थिति ठीक ओकर उनटा छलैक । बड़का मामा बड़ सुहृदय लोक छलाह आ बड़की मामी 'बिष कुम्भं पयः मुखम्' ।" हँ, एकटा कमी बड़का मामामे अवश्य छलन्हि, से प्रायः सभ मामामे छन्हि आ अन्य लोकमे सेहो कमोवेश देखल गेल अछि । ओ बड़की मामीक इशारा पर नचैत छलाह । कोनो प्रकारक निर्णय बिना मामीक विचारे नहि लैत छलाह । हमरा बुझने इहो उचिते गप भेलैक । कारण कोनो निर्णय लेलाक बाद ओहिसँ उनटबाक नौबत नहि अबैत छलन्हि । अन्यथा आइ-काल्हि तँ एहनो होइत छैक जे लोक किछु बाजि दैत अछि आ बादमे पुनः ओहिसँ उनटि जाइत अछि ।

एक दिन बड़का मामा नरेन्द्रकेँ कहलथिन्ह, "बौआ । अहाँ एतहि रहब, की कोनो दोसर डेराक इन्तजाम करब ?" नरेन्द्र तँ अवाक् रहि गेलाह । ओ तँ मामासँ एहन प्रश्नक उमेदो नहि कयने छलाह कारण मामाकेँ तँ नरेन्द्रक सब स्थितिक जनतब छलन्हि आ सबसँ बेसी नरेन्द्रकेँ मानोदान ओएह करैत छलाह । नरेन्द्र पुछलथिन्ह, ''की एहि ठाम हमर गुंजाइश नहि भ' सकैत छैक ? हम तँ सोचने छलहुँ जे एतहि मामाक शरणमे रहि अपन शिक्षा पूर्ण करब ।"

मामा कहलथिन्ह, "से तँ ठीक अछि मुदा हमरो तँ परिवार पैघ अछि आ जगहक कमी छैक । दू-चारि दिनक लेल कोनो बात नहि मुदा

ओहिसँ बेसीमे कठिनाइ छैक । दू कोठलीक डेरामे हम अपनहि नौ गोटे कोना रहि रहल छी, से तँ अहूँ देखिये रहल छी । तखन कोनो हड़बड़ी नहि छैक, आरामसँ डेरा ताकि लिअ' ।''

नरेन्द्र सोचमे पड़ि गेलाह । डेरा कत' भेटत, ओहि लेल तँ टाकाक आवश्यकता होयतैक । ओ टाकाक इन्तजामक लेल गाम गेलाह । गाममे बाबूजीक मन बड़ जोर खराब छलन्हि । टाकाक अभावमे हुनकर उपयुक्त उपचार नहि भ' रहल छलन्हि । ओ चुपचाप आपस आबि गेलाह । ओ संस्थानसँ अयलाक बाद चारि बजे संध्यासँ दस बजे रात्रि धरि दरभंगाक सड़क पर घुरैत रहैत छलाह । एहि आशामे जे केओ भलमानुष आबि हुनकर दुःख दूर करताह । हलाँकि ई सब नानी-दादीक खिस्सा-पिहानी थीक, जे बचपन मे सुनाओल जाइत छलैक । एकरा जीवनक वास्तविकतासँ कोनो सरोकार नहि छलैक । केओ भेटलन्हि तँ नहि मुदा एक दिन मामा अवश्य पुछलथिन्ह, "नरेन्द्र । अहाँ एतेक राति धरि बाहर की करैत छी ? सिनेमा देखैत छलहुँ की ? कहैत छी जे टाका-पाइ नहि अछि । तखन सिनेमा देखबाक लेल कत' सँ आबि जाइत अछि ?"

नरेन्द्र मामाक गपक कोनो उत्तर नहि देलथिन । ओ चुपचाप सब किछु सुनि लेलन्हि । ओ बुझैत छलाह जे एखन हमर परिस्थिति अनुकूल नहि अछि । एखन केओ किछु बाजि सकैत छथि । मामाकेँ तँ ई अधिकार छन्हियेँ । ई अलग गप अछि जे ओ वस्तुस्थितिकेँ बुझि नहि रहल छथि वा बूझ' नहि चाहैत छथि । मामा आ मामी तीन-चारि दिनक लेल बाबाधाम चल गेलाह । एहि ठाम डेरा पर बच्चा सभकेँ नरेन्द्रक भोजन बन्न करबाक निर्देश द' गेलथिन्ह । रातिक दस बाजि गेल । नरेन्द्र भोजनक प्रतीक्षामे बैसल रहलाह । सभ केओ सुतबाक उपक्रममे लागि गेल । नरेन्द्र अपना ममिऔत बहिनसँ पुछलथिन्ह, ''बुच्ची ! आइ हमरा भोजन नहि देलहुँ ?''

"माँ-बाबूजी तँ बाहर गेल छथि आ हमरा सभक लेल ओतबहि द' क' गेल छथि, जाहिमे हम सब कोनो तरहेँ अपन निर्वाह क' सकब । तेँ अहाँक भोजन नहि बनाओल अछि ।" ममिऔत बहिनिक उत्तर छलन्हि ।

नरेन्द्र जल पीबि ओछाओन धयलन्हि । प्रातःकाल ओ समय पर इन्स्टीच्यूट गेलाह आ ओहि ठामसँ अयलाक बाद अपन चाउर-दालिसँ खिच्चड़ि बनौलन्हि । बर्त्तन आ चुल्हा मामीयेक उपयोगमे अनलन्हि । जीवनमे पहिल बेर नरेन्द्र भानस कयलन्हि । तेँ खिच्चड़ि तँ जे से मुदा बर्त्तन अवश्य विशेष कारी भ' गेलैक । एहि लेल सेहो कतेक किछु सुनलनि आ विदा भ' गेलाह दरभंगाक सड़क पर बौआइक लेल ।

ओ एकटा सम्बन्धीक ओहि ठाम लहेरियासराय पहुँचलाह । कहल गेल छैक, जखन लोक ककरो एकटा बाट बन्न क' दैत छैक, तँ भगवान ओकरा लेल कतेको बाट खोलि दैत छथिन्ह ।' ओ सम्बन्धी नरेन्द्रक पितिऔतक नाना छलथिन्ह । ओ नरेन्द्रकेँ नीक जकाँ जनैत छलथिन्ह । हुनका नरेन्द्रक विषयमे सब किछु बूझल छलन्हि । ओ नरेन्द्रकेँ देखितहि कहलथिन्ह, "आबह...आबह... बौआ ! गाम घरक की हाल-चाल ? आइ कोना बाट बिसरि गेलह ?"

"बाबा ! अहाँकेँ तँ बूझल होयत जे हम रामनगर आइ.टी.आइ. मे पढ़ैत छी," नरेन्द्र कहलथिन्ह ।

बाबा कहलथिन्ह, "हँ...हँ...से तँ बुझले अछि आ इहो बूझल अछि जे दरिभंगामे मामाक डेरा पर रहैत छह ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "बाबा हमरा संग किछु एहेन परिस्थिति भ' गेल, जे हम अपन पढ़ाई पूर्ण नहि क' सकब ।"

बाबा पुछलथिन्ह, "से किएक, एहन की भ' गेलह ? कनेक फरिछा क' तँ कह' ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "हमर गुंजाइश मामाक डेरामे नहि भ' रहल अछि । ओ पहिनेसँ नौ गोटे छथि आ कोठली छन्हि दुइयेटा । हम चाहैत छी जे कतहु अन्यत्र डेरा ली, मुदा ओहि लेल कैंचाक आवश्यकता होयतैक जकर अभाव अछि ।"

बाबा कहलथिन्ह, "एहि तरहक गप डेरा खाली करबाक विषयमे

तोरा केओ कहलथुन्ह वा तोँ अपने सोचि रहल छह ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "हम अपनहुँ सोचि रहल छलहुँ, किएक तँ दरिभंगासँ आइ.टी.आइ. बहुत दूर छैक आ मामा सेहो इशारा कयने छलाह ।"

बाबा कहलथिन्ह, "हम हुनकर मानसिकता बुझि गेलहुँ । जत' नौ गोटे रहि सकैत अछि, ओत' दसम किएक नहि ? तखन तँ आइ-काल्हि लोक चाहैत अछि जे अपने परिवारसँ सेहो माय-बापकेँ छोड़िक' मतलब राखी । ओ तँ मायो-बापक खोज-पुछारि नहि करैत छथि, अहाँ तँ भागिन छियैन्हि । कोनो गप नहि, अहाँ की सोचिक' आयल छी आ हमरासँ की अपेक्षा करैत छी ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "बाबा ! हम जँ कतहु अलगसँ डेरा लेब, तँ ओकर भाड़ा लागत आ भोजन आदिक इन्तजाम सेहो कर' पड़त ।"

बाबा कहलथिन्ह, "हँ...से तँ कर' पड़त । तखन...।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "तखन सोचने छी जे कतहु एहेन टयूशन भेटि जाइत, जत' अपनहु पढ़ितहुँ, बच्चोके पढ़बितहुँ आ भोजन वा रहबाक समस्या सेहो नहि रहैत ।"

बाबा कहलथिन्ह, "बड़ उत्तम विचार छह । एहि तरहेँ हमरा इलाकामे कतेको गोटे पढ़ि रहल छथि । हमहुँ तोरा लेल इएह सोचने छलहुँ मुदा हम तोहर मनक भाव बूझ' चाहैत छलहुँ । एहिमे एकटा दिक्कत भ' सकैत छह ?"

नरेन्द्र पुछलथिन्ह, "की दिक्कत भ' सकैत अछि ?"

बाबा कहलथिन्ह, "तोहर बड़का कका श्वेताम्बर बाबू तँ बड़का नाक बला लोक छथुन्ह । ओ ई कोना बर्दास्त करथुन्ह । एहन नहि होअय जे तोँ कोनो दोसरे झंझटमे पड़ि जाह । तेँ कनेक नीक जकाँ विचारि लएह । हलाँकि एहिमे कोनो कलंकबला गप नहि छैक । विद्यार्थी आ ब्राह्मणक लेल भीखो माँगब अनुचित नहि । खास क' विद्याध्ययनक लेल

सब दिनहिसँ ई उचित माध्यम रहल अछि । भगवान कृष्णो तँ सब तरहेँ सम्पन्न रहितहुँ गुरुकुलेमे रहि भिक्षाटन क' क' विद्याध्ययन कयलन्हि । तोँ तँ श्रम करब' । तेँ ई कोनो अनुचित काज नहि भेलैक । तखन तँ सभक अपन-अपन सोच होइत छैक ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "बाबा ! हमरा पढ़बाक अछि । अपन जीवन देखबाक अछि । एहि लेल जिनका जे सोचबाक होन्हि से सोचथु । एहि लेल किनकोसँ सम्बन्ध टुटओ वा जुटओ, कोनो फर्क नहि पड़ैत अछि । हम तँ एखनहुँ एकटा सम्बन्ध तोड़ियेक' आबि रहल छी ।"

बाबा कहलथिन्ह, "ठीक छै, जखन तोँ एतेक दृढ़ छह, तँ अवश्य किछु ने किछु इन्तजाम होयबे करतैक । तोँ आइ भरि ओहि ठाम रहि सकैत छह ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "हँ...हँ... बाबा । आइ भरि तँ रहिये सकैत छी । हमर सामानो सब तँ ओतहि अछि । ओहो लयबाक लेल तँ जायहि पड़त ।"

बाबा कहलथिन्ह, "ठीक छै, तोँ काल्हि संध्याकाल अपन सब सामान ल' क' आबि जाह । हमहू तावत् कोनो ने कोनो इन्तजाम करैत छी ।"

बाबाक आश्वासन पाबि नरेन्द्र खूब प्रफुल्लित छलाह । ओ बहुत पैघ चिंतासँ मुक्त भ' गेलाह । हुनकर सबटा दुःखक अन्त होअयबला छलन्हि । ओ पुनः मामाक डेरा पर अयलाह आ ककरोसँ कोनो गप-सप नहि कयलन्हि । गर्मीक समय छलैक । भोजन होटलेमे क' लेने छलाह । चुपचाप अपन ओछाओन बहार क' नीलाकाशक कोरमे सूति रहलाह । आइ हुनका आकाशक तरेगन बड़ नीक बुझना जाइत छलन्हि । आइ ओ चिंतामुक्त बुझा रहल छलाह । ओ कल्पनाक अथाह सागरमे डूबि गेलाह । प्रातः काल नियत समय पर उठि नित्यक्रियासँ निवृत्त भ' अपन इन्स्टीच्यूट जयबाक लेल तैयार भेलाह । मामा-मामी तँ एखन धरि तीर्थसँ आपस आयलो नहि छलथिन मुदा हुनका आइ जायब आवश्यक छलन्हि । ओ मामा-मामीक प्रतीक्षामे एहन सुअवसरकेँ गमाब' नहि चाहैत छलाह ।

मामा-मामी तँ सेहो इएह चाहैत छलाह । तेँ हुनकर प्रतीक्षा करब ओ उचित नहि बुझलनि । नव स्थान पर जयबाक जे उत्सुकता होइत छैक से हुनकहु छलन्हि । ओ इन्स्टीच्यूटसँ अयलाक उपरान्त ठीक चारि बजे सब सामानक संग बाबाक ओहि ठाम पहुँचि गेलाह । अही बीचमे बाबा सेहो अपना बालकक माध्यमसँ देकुलीमे रहनिहारि अपन बेटीसँ गप कयने रहथि । हुनका मात्र एकटा बालक छलन्हि । एकटा भेलाक कारण ओ ततेक दुलारू छलैक जे ओकरा सम्हारब अत्यन्त कठिन छलैक । तेँ हुनका एकटा मास्टरक नितांत आवश्यकता छलन्हि आ सेहो ओहेन जे ओहि ठाम रहि सदरिकाल बच्चाकेँ नियंत्रणमे राखए ।

नरेन्द्रकेँ पहिने तँ बड़ कठिनाइ भेलन्हि । कारण अधिक कड़ाइ केने बच्चाक बाबी बीचमे टपकि पड़थि मुदा कहुनाक' नरेन्द्र ओकरा सही बाट पर अनबामे सफल भ' सकलाह । ओ गृहस्वामी नरेन्द्रक पितिऔतक मौसा-मौसी छलथिन्ह । तेँ नरेन्द्र सेहो ओही सम्बन्धकेँ कायम रखलन्हि । नरेन्द्रक आचार-विचार आ व्यवहार कुशलतासँ मौसा-मौसी सेहो प्रसन्न रहैत छलथिन्ह । नरेन्द्रकेँ कखनहुँ नहि बुझाइत छलन्हि जे ई हमर अपन मौसा-मौसी नहि होथि । मौसा-मौसी सेहो नरेन्द्रकेँ अपने जकाँ बुझथि । मुदा ई प्रेम सभक लेल सोहनगर नहि रहल । हुनके पितिआइन सौंसे हल्ला कर' लगलथिन्ह, "नरेन्द्रक चालि-ढालि ठीक नहि छन्हि । हमरा बहिन-बहिनोइकेँ नाको दम भ' गेल छन्हि । ओसभ हमरा सम्बन्धक खातिर दम सधने छथि । ओ लोकनि नरेन्द्रक व्यवहारसँ आरिज भ' गेल छथि । एहन नहि देखल अछि जे खाइतहुँ अछि आ बच्चाकेँ पढ़बितहुँ नहि अछि । हुनक अभिप्राय जे एहि ठामक लोक ई बुझथु जे नरेन्द्र हुनके बहिन-बहिनोइक ओहि ठाम रहि अपन गुजर करैत अछि मुदा ओ ई नहि सोचैत छलीह जे केओ कतहु मँगनीमे नहि रहैत अछि । किछु लेबाक लेल किछु ने किछु देब' सेहो पड़ैत छैक । इतिहास साक्षी अछि जे विद्यार्थी आ शिक्षकक लेल ई अनुचित नहि अछि । ई कार्य केवल नरेन्द्रे नहि करैत छलाह । एहेन कतेको गोटे छलाह आ ओहि ठाम अन्य गृहस्वामी सेहो एहन शिक्षकक विषयमे नरेन्द्रसँ पूछैत छलाह मुदा नरेन्द्रक घरक लोककेँ

बड़ कष्ट होइत छलनि । ओ सब कइओ की सकैत छलाह । ई तँ नरेन्द्रक स्वयं केर निर्णय छलन्हि । नरेन्द्र ककरो दबाबमे अपन निर्णय बदलि नहि सकैत छथि, से सभ केओ बुझैत छलाह आ नरेन्द्रकेँ होस्टलमे राखि पढ़यबाक सामर्थ सेहो नहि छलन्हि ।

नरेन्द्रक एकटा भौजी छलथिन्ह । ओना नरेन्द्र सब भाय-बहिनमे अपनहि जेठ छलाह । तखन भौजी छलथिन्ह अपने पितिऔतक कनियाँ । कहबाक लेल ओ भाय पितिऔत छलथिन्ह मुदा आचार-व्यवहारमे सहोदरोसँ बेशी । ओ नरेन्द्रके खूब मानैत छलथिन्ह । अपने तँ भाय सेहेब कलकत्ता धयने छलाह आ भौजी सासु-ससुरक उछन्नरिसँ उबि क' नैहर वास क' रहल छलीह । भौजी देखबा-सुनबामे बड़ सुन्नरि छलीह । जेहने रूप-रंग तेहने आचार-विचार छलन्हि । सासु-ससुरसँ नहि पटबाक कारण छलन्हि जे भैया कलकत्तामे टयूशन क' क' समय बिता रहल छलाह । पता नहि हुनका ओहिसँ कतेक आमदनी होइत छलन्हि । ओ घरमे किछु नहि दैत छलाह । हुनका माँ-बाबूजीकेँ होइत छलन्हि जे भैया कमाक' भौजीकेँ दैत छथि मुदा एहन गप नहि छलैक । ओ तँ अपनहि नैहर पर आश्रित छलीह । भौजी नरेन्द्रकेँ खूब मानैत छलथिन्ह । कारण नरेन्द्र हुनकर समवयस्क दीअर छलथिन्ह । दुनू गोटेमे सब रंगक खुलिक' गप-सप होइत छलन्हि आ एखनहुँ होइत छन्हि । ओनातँ आब भौजी सत्तरिक वयस पार क' गेल छथि मुदा एखनहु हँसी-चौलक ओएह अंदाज नेनपनेबला । भौजीकेँ जखन ई गप कानमे गेलन्हि तँ ओ नैहरमे छलीह । हुनका नरेन्द्र पर पूर्ण विश्वास छलन्हि । ओ नरेन्द्रकेँ खूब नीक जकाँ जनैत छलथिन्ह । हुनका एहि गपमे कनेको सत्यता नहि बुझेलन्हि, तथापि हुनकर कान ठाढ़ भ' गेलन्हि । ओ सोचलथिन्ह जँ एकर निवारण उचित समय पर नहि होयत तँ भ' सकैत अछि जे नरेन्द्र कोनो दिक्कतमे ने पड़ि जाथि । ओ तुरंत लहेरियासराय आबि नरेन्द्रकेँ भेट करैत पुछलथिन्ह, "बौआ ! किछु सुनलहुँ अछि, की ई सत्य अछि ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "भौजी ! अहाँकेँ एहि गप पर विश्वास भ' गेल ?

भौजी कहलथिन्ह, "नहि, हमरा तँ विश्वास नहि भेल मुदा शंकाक निवारण तँ आवश्यक छैक । यावत् से नहि करब, तावत् मनमे धुकधुकी लगले रहत आ कतहु किछु बाजिओ नहि सकैत छी । हम अहीँक लेल खासक' आयल छी ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "एहिमे कोनो सत्यता नहि छैक । अहाँ तँ ओहि व्यक्तिक चरित्र जनितहिँ छी । ओ तँ गामहुँमे एम्हर के ओम्हर करैत रहैत अछि । एक दोसरकेँ बझबैत रहैत अछि । जखन भगवान नहि देने छथिन्ह, तखन तँ ओ लोककेँ अपना पयरक तरमे राख' चाहैत अछि आ जँ देने रहितथिन्ह तँ पता नहि की की करैत ।"

भौजी कहलथिन्ह, "हँ...हँ...से तँ हम ओकरा आ ओहि ठामक लोककेँ खूब नीक जकाँ चिन्हैत छियैक । सभ केओ सूपक भाँटा जकाँ इम्हर सँ ओम्हर गुड़कैत रहैत अछि । बिना मतलबक पसाही लगबैत रहैत अछि । हमहूँ तँ ओकरे सभक मारल रने-वनेक खाक छानि रहल छी । ओकरा सभकेँ जँ दुमुँहाँ साँप कहल जाय तँ कोनो अतिशयोक्ति नहि होयत ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "ओकर एकहिटा अभिप्राय छलैक । ओ अपनाकेँ हमरा सभसँ ऊँच क' स्थापित कर' चाहैत अछि । लोक ई बुझथु जे नरेन्द्र हमरे बहिनिक ओत' पेट पालि रहल छथि । एहिसँ हमरा सोझाँ नरेन्द्रक परिवारक मूड़ी झुकल रहतैक ।"

भौजी कहलथिन्ह, "कतहु केओ ओहिना तँ नहि रहैत अछि आ ने केओ रखैत अछि । बच्चाकेँ पढ़बैत अछि आ ओहि एवजमे भोजन करैत अछि । कोनो सदावर्त्ततँ नहिये ने पबैत अछि । मास्टर राखि जे केओ बच्चाकेँ पढ़बैत छथि ओ मास्टरक मजबूरीक फायदा उठबैत छथि । ओहिसँ बेसी खर्च ट्यूशन पढ़यबामे छैक । तखन एहिमे मिलाजुलाक' दुनूक फायदा छैक । हमरो नैहरमे एकटा मास्टर रहैत छथि । ओ साँझ आ भिनसर बच्चा सभकेँ पढ़बैत छथि आ दिनमे अपन स्कूल करैत छथि । हुनकर गाम करीब स्कूलसँ तीस किलोमीटर छन्हि । ओतेक दूरसँ नित्य

आयब-जायब सम्भव नहि छलन्हि । तेँ ओ एकटा डेरा ताकि रहल छलाह । अही क्रममे ओ हमरा भैयाक भेट कयलथिन्ह । भैया हुनका सोझाँ प्रस्ताव रखलन्हि, "दलान पर एकटा कोठली अछि, ओ अहाँकेँ भेटि सकैत अछि मुदा ओहि ठाम भोजन बनयबामे दिक्कत होयत । एहिसँ नीक अपने हमरे ओहि ठाम रहि भोजन सेहो करब आ समय पर स्कूल सेहो जायब । साँझ-भिनसर दू टा बच्चा छैक, तेकरा पढ़ा देल करबैक । मास्टर साहेब तैयार भ' गेलाह आ एखन धरि करीब एगारह वर्षसँ रहि रहल छथि । आब तँ ओ घरक सदस्य जकाँ छथि । कतेको सर-सम्बन्धीक ओहि ठाम सेहो चल जाइत छथि ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "से ओकरा ओतेक ज्ञान रहितैक तखन ने । इनारक बेंग तँ इनारे भरिक ने गप करत । ओ दुनियाँक विषयमे की बुझतैक ।"

भौजी कहलथिन्ह, "मुदा दाबी तँ छैक जे सभसँ बेसी हमहीं बुधियारि थिकहुँ ।

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "आइ-काल्हि धरती पर मूर्खक जन्मे नहि होइत छैक । सही मायनेमे जे मूर्ख अछि, ओकरो ई दावी रहैत छैक जे हम बड़ बुधियार छी । तखन किछु लोक एहनो होइत छथि जे मुर्ख रहितहुँ व्यवहारिक ज्ञान आ सामाजिक रीति-रेवाजमे निपुण मानल जाइत छथि । सामाजिक कोनो काजमे जाधरि ओ आगाँ नहि जयताह, ताधरि काज शुरू नहि होयत । तेँ सौंसे दुनियाँक ज्ञान हुनके भ' गेलन्हि, ई कोनो जरूरी नहि छैक ।

भौजी कहलथिन्ह, "ठीक छै बौआ ! हम तँ ई गप बुझितहि छलहुँ । हमरा जे समाद कहलक हम ओकरो कहि देने छलियैक । हमर नरेन्द्र एहेन कोनो काज नहि क' सकैत छथि, जाहिसँ ककरो मान-सम्मान पर आघात होयतैक ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "तखन एहि गपकेँ जाहि कानसँ सुनलहुँ, ओही सँ बाहर क' दिअ' । एखन हम जाहिमे लागल छी, से पूर्ण कर'

दिअ' । एखन हम अपन लक्ष्य केँ छोड़ि एम्हर-ओम्हर नहि उलझ' चाहैत छी । जँ उलझि जायब तँ अपन लक्ष्यसँ भटकि जायब । एखन हमर परीक्षाक घड़ी अछि । तेँ ई सब बर्दास्त कर' पड़त । भौजीकेँ नरेन्द्र पर पूर्ण विश्वास छलन्हि । ओ नरेन्द्र दिससँ आश्वस्त भ' गेलीह । ओ काकी जे एतेक फतूर उड़ौने छलीह, हुनकर इएह तँ काज छलन्हि, एम्हरकेँ ओम्हर करब । तकर बाद जँ ओहि विषय पर केओ किछु बजबो करए तँ भौजी ओहिपर कान नहि दैत छलीह । भौजी जाइत-जाइत बाजि गेलीह, "बौआ ! अहाँ तँ अपने बुझनुक लोक छी । अहाँ तँ हमरो सभकेँ सम्हारैत रहलहुँ, तथापि कनेक सचेष्ट रहब । ई दुनियाँ बड़ खराप छैक । ऊपरसँ मीठ-मीठ बाजत आ तरे-तर नस्तर चलाओत ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, ''अहाँ एकर चिंता जुनि करू भौजी । हम दुःखकेँ दुःख नहि, भगवानक कृपा बुझैत छियैक । जँ लोककेँ दुःख नहि होयतैक तँ अपन-आनकेँ कोना चीन्हत । कोना बुझत जे के दोस्त आ के दुश्मन छथि । तेँ लोककेँ दुःखसँ बिचलित नहि होयबाक चाही । दुःख-सुखतँ जीवन चक्र थीक । दुःखक बाद सुख आ सुखक बाद दुःख इएह तँ विधिक विधान थीक । हमर आदर्श तँ हमर माय अछि । कतबहु दुःखमे ओकरा मुँहक हँसी विलुप्त नहि भेलैक अछि । हम तँ एसकर दुःख काटैत छी आ ओ नौ गोटेक संग दुःख काटि रहल अछि । ओकरा अपना भरि पेट भोजनो नहि भेटैत छैक । देह पर उपयुक्त वस्त्रक अभाव आ ऊपरसँ घरक मुखियाक यदा-कदा ताना दिनचर्या बनि गेल छैक । तथापि कहिओ ओकर मुँह मलिन नहि देखलियैक । ओ दुःखमे जीवाक अपन स्वभाव बना लेलक अछि । ओकरहि संग अपन जीवन बिता रहल अछि । अही आशा पर जे कहिओ ने कहिओ भगवान ओकरो तकथिन्ह ।"

भौजी कहलथिन्ह, "से तँ सत्ये कहि रहल छी । अपना टोल भरिमे तँ काकीये छथि जिनकर कौखन मन उदास नहि रहैत छन्हि । सतत मुँह पर मुस्काने रहैत छन्हि । हम तँ देखने छियैन जे एक दिन बाबी कोनो गपे काकी पर बाजि रहल छलीह आ काकी हुनका पयर लग ठाढ़ि भ' क' हँसैत छलीह । हम सभ तँ हुनके देखिक' जीबि रहल छी । नहि तँ

ओहि ठाम जीबाक लेल की छैक ? ने लोके नीक आ ने बोले वचन ।"

आठ-दस दिन बितलाक बाद नरेन्द्रक बाबी गंगा स्नानक बहन्ने लहेरियासराय स्टेशन पर अयलीह । बाबी नरेन्द्रकेँ बड़ मानैत छलीह । हुनका ई फतूर बर्दास्त नहि भ' रहल छलन्हि । ओ एहि गपक तहमे जाय चाहैत छलीह । ओ समाद पठा क' मौसीकेँ स्टेशन पर बजबौलथिन्ह । नरेन्द्रकेँ एकर कोनो भनक नहि छलन्हि । ओ तँ पढ़बाक लेल इन्स्टीच्यूट गेल छलाह । मौसी जखन स्टेशन पर अयलीह तँ बाबीकेँ देखलथिन्ह । ओ पयर छूबि बाबीकेँ गोर लगलथिन्ह । बाबी हुनका सौभाग्यवती आ पुत्रवती रहबाक आशीर्वाद देलथिन्ह । मौसी बाबीकेँ पहिनहिसँ चिन्हैत छलथिन्ह । ओ कतेको बेर बहिनिक धिया-पूताक उपनयन-मुंडनमे हुनका गाम गेल छलीह । तेँ मौसी प्रायः सभकेँ चिन्हैत छलथिन्ह ।

बाबी कहलथिन्ह, "कनियाँ ! हम सिमरिया गंगा स्नानक लेल जा रहल छी । मन मे आयल जे अहाँक भेट क' कनेक नरेन्द्रक हाल-चाल बुझि ली । तेँ कष्ट देलहुँ । कोनो दिक्कत तँ नहि भेल ?"

मौसी कहलथिन्ह, "ई तँ हमर अहोभाग्य जे हिनकर दर्शन भेल । हिनका सभक दर्शन कत' पायब । आब तँ माइयोक जगह पर इएह सभ छथि । आशीर्वाद देथु जे सब परिवार ठीक-ठाक रहैक ।"

बाबी कहलथिन्ह, "खूब आशीर्वाद दैत छी । भगवान एक सँ एकैस करथि । सोहाग अचल रहए आ कोखि जुड़ायल रहए । आब ई कहू जे नरेन्द्र तंग तँ नहि करैत अछि । ओकर नेनपन एखन नहि गेलैक अछि । जँ किछु गलतीओ करए तँ अपन बच्चा बुझि माफ क' देबैक ।"

मौसी कहलथिन्ह, "माँ जी ! ई केहन गप करैत छथि । नरेन्द्र मास्टर नहि हमर बेटा छथि । हमरा दुःख-सुखमे संग रहैत छथि । जे किछु सूखल-पूखल भेटैत छन्हि, खा लैत छथि । हुनकर चिंता ई एकदम नहि करथु । हुनकासँ हमरा बड़ पैघ अवलम्ब भेटल अछि । हमर बेटा जे बहसल छल धीरे-धीरे नीक बाट पकड़ि रहल अछि । हँ, जँ मास्टर कोनो शिकायत केने होथि, जँ हुनका कोनो तकलीफ भेल होन्हि, तँ

अवश्य कहथु । हम ओकर सुधारक प्रयत्न करब ।"

बाबी कहलथिन्ह, "नरेन्द्र तँ किछु नहि कहने छथि मुदा ककरो-ककरो मुँहेँ सुनलहुँ जे ओ अहाँक संग नीक व्यवहार नहि क' रहल छथि । ओ एहि सम्बन्धक नाजायज फायदा उठा रहल छथि आ अहाँ सम्बन्धक लाजे किछु बाजि नहि रहल छी ।"

मौसी कहथिन्ह, "ई गप के कहलकन्हि ? जे केओ ई गप बाजल छन्हि, ओ हमर हितैषी नहि दुश्मन थीक । ओ चाहैत अछि जे कहुना मास्टर एत' सँ भागि जाथि आ हमर बेटा बिगरि जाय । हम दोसराक जनमलकेँ भुरूक नहि उठयबैक । ई सब गप मिथ्या छन्हि ।"

बाबी कोना कहितथिन्ह जे अहीँक बहिन एतेक फतूर उठौने अछि । ओ कहलथिन्ह "गामक कतेक लोक बाजार आ कचहरी अबैत छथि । ओहीमे सँ ककरो मुँहे सुनलियैक । केओ खास गोटे हमरा लग नहि बाजल अछि । ओना तँ नरेन्द्र ठीके-ठाक अछि मुदा कनेक जिद्दी स्वभावक अछि । कोनो बातक जिद्द पकड़ि लेत तँ ओकरा धयने रहि जायत ।"

मौसी कहलथिन्ह, "हमरा लग तँ बड़ सुन्नर जकाँ रहैत छथि । कहिओ काल कोनो कारणवश हुनकर मौसा तमसायल रहैत छथिन तँ हमरा ओएह बचबैत छथि । हम हुनका खराब कोना कहबनि ।"

बाबी पुनः पुछलथिन्ह, "तखन की गाम-घरमे कोनो खराब व्यवहार करैत अछि ?"

मौसी कहलथिन्ह, "हम सेहो नहि कहबन्हि । कोनो गप रहितैक तँ उपराग अवश्य अबैत मुदा आइ धरितँ हुनकर उपराग हमरा केओ नहि बाजल अछि ।" हलाँकि नरेन्द्रक संग एकटा प्रेम-प्रसंग चलि रहल छलन्हि, जाहिमे कन्या पक्षक सहमति छलन्हि । एहि लेल मौसीकेँ कोनो तरहक उपराग वा उलहन नहि भेटल छलन्हि । हमरा सोझाँ तँ सब केओ हुनकर बड़ाइये करैत अछि । कतेको गोटे हमरा सँ पुछने होयताह, "मास्टर हमरो बच्चाकेँ नहि पढ़ा देताह ?" हम कहैत छियैक जे ई गप तँ मास्टरे ने कहताह ।"

बाबी कहलथिन्ह, "ठीक छै कनियाँ, आब अहाँ जाउ । बहुत देरी भ' गेल । आब हमरो गाड़ी अबितहि होयत ।"

मौसी कहलथिन्ह, "ई नीक गप भेलनि ? एहि ठामसँ ई बिना किछु खयने-पीने चल जयतीह । आधा घंटा समय देथु तँ हम हिनकर भोजन ल' क' अबैत छियैन्हि ।"

बाबी कहलथिन्ह, "नहि...नहि...एतेक कष्ट जुनि करू । हम तँ तीर्थक लेल बहरायल छी । तेँ कतहु किछु खयबो-पीबो नहि करब । बस आब जे किछु होयतैक से गंगास्नानक उपरान्त सिमरियेमे ।"

मौसी पुनः बाबीकेँ गोर लागि घर चल अयलीह ।

पता नहि बाबी सिमरिया गेलीह वा नहि । एहि तरहेँ द्वन्दक बीच नरेन्द्रक तकनीकी शिक्षा पूर्ण भेलन्हि आ जत' हुनकर छोटका कका नीलाम्बर बाबू नौकरी करैत छलाह, नरेन्द्रो ओतहि पहुँचि गेलाह । तकनीकी शिक्षाक दौरान नरेन्द्रकेँ जीवनक बड़ कटु अनुभव भेलन्हि । बहुत ऊँच-नीच देख' पड़लनि । बहुत तीत-मीठक एहसास भेलन्हि आ अपन-आनक पहिचान सेहो भेलन्हि । कतेको पुरान सम्बन्ध पाछाँ छुटि गेलन्हि आ नव सम्बन्ध जुटि गेलन्हि । एक तरहेँ बुझू तँ ओ कुम्हारक आबासँ तपिक' बहरयलाह आ इएह अनुभव, दृढ़ संकल्प हुनकर जीवनक बाट प्रशस्त कयलक । ओ दुःखसँ दुःखी अवश्य भेलाह जे मानवक प्रवृत्ति अछि मुदा घबरयलाह नहि आ ककरो एकर आभासो नहि होअय देलन्हि । ओ दुःखसँ अनुप्रेरित भ' ओकरा अपन कवच बनौलन्हि । नरेन्द्रकेँ ककाजी लग अयला मासो दिन नहि भेल छलन्हि कि हुनका ककाजीक प्रयाससँ किरानीक नौकरी भेटि गेलन्हि । ओ कार्य हुनका मनोनूकूल नहि छलन्हि । ओहिमे हुनकर मन नहि लगैत छलन्हि । किछु दिनक बाद विभागेमे विद्युतज्ञक बहालीक लेल विज्ञापन बहरायल । नरेन्द्र सेहो आवेदन कयलन्हि । साक्षात्कारक लेल बजाओल गेलाह मुदा नरेन्द्रकेँ तेहेन प्रश्न पुछल गेलन्हि जकर ओ उत्तर नहि द' सकलाह । प्रश्न बड़ उटपटाङ्ग छलैक । नरेन्द्र ओकर मतलबे नहि बुझि पओलन्हि ।

जँ ओ प्रश्न सामान्य विषय केर होइत तँ हुनका ओतेक कष्ट नहि होइतन्हि मुदा प्रश्न हुनका विषय सँ सम्बन्धित छलैक आ ओहि विषयक नरेन्द्र टौपर छलाह । तेँ हुनका अनसोहाँत लागब स्वाभाविके छलन्हि मुदा बेसी सवालो-जवाब करब उचित नहि बुझेलनि, किएक तँ ओ विभागमे कार्यरत छलाह । डेरा पहुँचला पर काकाजी पुछलथिन्ह, "केहेन भेलहु साक्षात्कार ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "साक्षात्कार तँ नीक नहि भेल । हमरा सँ उटपटांग प्रश्न पुछल गेल । हम बुझि नहि सकलहुँ जे एना किएक भेल ।"

ककाजी कहलथिन्ह, "हम तँ सेहेबकेँ कहि देने छलियन्हि । तखन एना किएक भेलहु ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "कहि नहि सकैत छी ।"

नरेन्द्रक बहाली तकनीशियन के पद पर नहि भेलन्हि मुदा नरेन्द्रकेँ ओहि प्रश्न पर खुदबुद्दी लगले रहलन्हि । ओ कतेको गोटेसँ ओकर उत्तर पुछने होयताह मुदा केओ समाधान नहि कयलन्हि । सभ केओ इएह बाजथि जे ई प्रश्ने उटपटांग बुझना जाइछ । किछु दिनक बाद हुनका कोनो कार्यवश ओएह अधिकारी बजौलथिन्ह । तावत् ओहो विभागमे पुरान भ' चुकल छलाह । प्राय: सब अधिकारीसँ चिन्ह-परिचय भ' गेल छलन्हि । कार्य खतम भेलाक बाद ओ हुनकासँ ओहि प्रश्नक उत्तर पयबाक अपेक्षा कयलन्हि जे हुनकासँ साक्षात्कारक समयमे पुछल गेल छलन्हि । प्रश्न सुनि ओ अधिकारी मूड़ी उठौलन्हि आ गौरसँ नरेन्द्र केँ देखि हँसैत कलथिन्ह, "अहाँके एखन धरि ई गप मने अछि । हमरा तँ भेल जे बिसरि गेल होयब ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "श्रीमान् । किछु एहेन गप होइत छैक जे लोक जीवन भरि नहि बिसरैत अछि । हमरा लग एहन कोनो प्रश्ने नहि अछि जकर उत्तर हम नहि द' सकैत छी, मुदा एहि प्रश्नकेँ सुनि हम निरुत्तर रहि गेलहुँ ।"

ओ अधिकारी कहलथिन्ह, "अहाँक सोच सही अछि । ई कोनो प्रश्ने नहि भेलैक । हम सभ पहिनहिसँ मन बना चुकल छलहुँ जे अहाँकेँ

एहि पदसँ दूर राखल जाय । किएक, से अहाँक ककेजी कहताह । दोसर गप एहिसँ की फर्क पड़ैत छैक । अहाँ तँ ओहिसँ सुन्नर लेखा सम्वर्गक काज क' रहल छी । एहिमे बड़ स्कोप छैक । बहुत प्रमोशनक गुंजाइश छैक ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "श्रीमान् । हॉवी वा अभिरुचि कोनो वस्तु होइत छैक वा नहि । हम जतेक यत्नपूर्वक तकनीकी कार्य क' सकैत छी, ओतेक दोसर काज नहि । तेँ हमर इच्छा एहन छल । तखन तँ जे विधाताक इच्छा होयतन्हि सएह होयतैक ।"

ओ अधिकारी कहलथिन्ह, "सएह होइत छैक । नौकरीकेँ पढ़ाइसँ कोनो मतलब नहि रहैत छैक । अहाँ पढ़लहुँ किछु आ काज करब किछु । पढ़ब तँ केवल ज्ञानोपार्जनक लेल आवश्यक छैक । हमरे सभकेँ देखू ने, की पढ़लहुँ आ कोन काज क' रहल छी । इनजिनियर होइतहुँ भाउचर बनाब' मे लागल रहैत छी । भ' सकैत छल जे अहूँकेँ अन्य पद पर बहाली भेलाक बादो इएह काज कर' पड़ैत ।"

नरेन्द्र अपन डेरा चल अयलाह । मनमे उद्वेग तँ बहुत अयलन्हि मुदा ककाजीसँ पुछबाक साहस नहि भेलन्हि । हर व्यक्तिक अलग सोच होइत छैक । कोनो जरूरी नहि छैक जे अहाँक सोचसँ सभक सोच मिलैत होअय । किछु दिनक बाद ककाजी अपने मने वा ओहि अधिकारीकेँ कहला पर नरेन्द्रकेँ कहलथिन्ह, "हम नहि चाहैत छलहुँ जे तोहर बहाली विद्युतज्ञक पद पर होअ' ।"

नरेन्द्र पुछलथिन्ह, "से किएक ?"

ककाजी कहलथिन्ह, "ओहि काजमे जानक बड़ जोखिम रहैत छैक । कखन की होयतैक, से केओ नहि बुझैत अछि । सदरि काल ओकरा सभकेँ खतरेसँ खेल' पड़ैत छैक ।"

नरेन्द्र पुछलथिन्ह, "तखन अपने पैरवी जे कयने छलहुँ....?"

ककाजी कहलथिन्ह, पैरवी तँ हम उन्टा कयने छलहुँ । हम जनैत

छलहुँ जे अहाँ साक्षात्कारमे अवश्य पास करब । किएक तँ अहाँक रिजल्ट तकनीकी शिक्षामे बड़ नीक अछि । तेँ हम सेहेबकेँ कहने छलियन्हि जे हम नहि चाहैत छी जे नरेन्द्रक बहाली एहि पद पर होन्हि । कदाचित जँ हम मना करबन्हि, तँ हुनका कष्ट होयतन्हि । तेँ अपनेसँ आग्रह जे हुनका कहुना फेल क' देबन्हि ।"

एहिसँ नरेन्द्रकेँ कष्टो भेलन्हि आ खुशी सेहो । नरेन्द्रकेँ बुझबामे आबि गेलन्हि जे ककाजी हुनका कतेक मानैत छलथिन्ह । ओ नहि चाहैत छलथिन्ह जे नरेन्द्रक संग कोनो अप्रिय घटना घटित होन्हि । एकरा लेल ओ नरेन्द्रकेँ सेहो कहि सकैत छलाह मुदा सोचैत छलाह जे एहिसँ नरेन्द्र पर कोनो प्रतिकूल असरि नहि पड़नि । एक बेर ओ ककाजीक गपक अवज्ञा क' चुकल छलाह । छबीस जनवरीक अवसर पर कार्यालयक किछु अधिकारी आ कर्मचारी नाटकक मंचन पर विचार-विमर्शक' रहल छलाह मुदा हुनका लोकनिक बीच एकटा समस्या छलन्हि । ओहि नाटकमे एकटा स्त्री पात्र छलैक, से लेनिहार केओ नहि । संध्याकाल एकटा अधिकारी नरेन्द्र लग अयलाह आ पुछलथिन्ह, "नरेन्द्रजी ! अपने विद्यार्थी जीवनमे नाटकक मंचन कयने छी ?''

ओना तँ नरेन्द्र अपना गाममे नाटकक जन्मदाते छलाह । ओहिलेल कतोक संघर्ष कर' पड़ल छलन्हि मुदा से व्यक्त नहि क' कहलथिन्ह, "जी नहि..., एखन धरितँ नहि कयलहुँ अछि ।"

ओ अधिकारी ओहि ठामसँ विदा होअय लगलाह तँ नरेन्द्र हुनकासँ पुछलथिन्ह, "एना किएक श्रीमान् ! अयलहुँ आ जा रहल छी, समस्या की अछि ?"

ओ अधिकारी नरेन्द्रकेँ सभ गप कहलथिन्ह । हुनका अनुसारे ओहि दलमे स्त्रीपात्र लेनिहार केओ नहि छलाह । नरेन्द्र कहलथिन्ह, "तकलीफ नहि मानब श्रीमान् । अहाँ सभक बीच सही मायनेमे नाटक खेलनिहार केओ नहि छथि । नाटकक पात्रतँ निर्देशक तय करैत छथि । नाटक केनिहार नहि । नाटक केनिहारकेँ कोनो पात्रसँ परहेज नहि होयबाक चाही ।"

अधिकारी बजलाह, "अपने ठीक कहैत छी । तखन निर्देशक जे निर्णय लेताह अपने मानि लेबैक ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "अवश्य मानि लेबैक मुदा हम जखन नाटकमे भाग लेबाक लेल तैयार होयब तखन ने ।

ओ अधिकारी पुछलथिन्ह, "एहिमे आपत्ति की ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "आपत्ति कोनो खास नहि । कनेक गार्जियनसँ अनुमतिक आवश्यकता छैक ।"

ओ अधिकारी चल गेलाह आ नरेन्द्र डेरा पर आबि काकीसँ पुछलथिन्ह । काकी सीधा लोक । ओ आफीसक गुटबाजी आ तामझामसँ अनभिज्ञ छलीह । ओ नरेन्द्रकेँ अनुमति द' देलथिन्ह । दोसर दिन पुनः ओ अधिकारी नरेन्द्रसँ पुछलथिन्ह, "की नरेन्द्रजी ! की विचार कयल ?"

नरेन्द्र अपन स्वीकृति द' देलथिन्ह । नरेन्द्रकेँ स्त्रीपात्र भेटलन्हि आ ओ जोर-शोरसँ तैयारी मे जुटि गेलाह । रिहर्सल शुरू भेल । नरेन्द्र तँ ओहि आफीसक लेल नव लोक छलाह । हुनका आफीसक गुटबाजीक विषयमे किछु बुझल नहि छलन्हि । एकटा गुट नाटकक पक्षमे छल तँ दोसर ओकर विरोधी । नीलाम्बर बाबू सेहो विरोधीये गुटक छलाह आ नरेन्द्र एहिसँ एकदम अनभिज्ञ । हलाँकि नीलाम्बर बाबूकेँ कोनो गुटसँ मतलब नहि छलन्हि । ओ एहि सभमे रहितहुँ नहि छलाह । हुनका मात्र काजसँ मतलब रहैत छलन्हि । मुदा ओहि विरोधी पक्षक अधिकारी जे शर्माजीक नामसँ जानल जाइत छलाह, नीलाम्बर बाबूकेँ बड़ मानैत छलथिन्ह । सम्भवतः नरेन्द्रक बहालीमे शर्माजीक विशेष भूमिका छलन्हि । तेँ नीलाम्बर बाबू हुनकासँ उपकृत होयबाक कारणे हुनक एहसानक तरमे दबल छलाह । ओ हुनक आदेशक अवहेलना नहि क' सकैत छलाह । जखन शर्माजीकेँ पता लगलन्हि जे नीलाम्बर बाबूक भातिज नरेन्द्र सेहो ओहि नाटकमे भाग लेने छन्हि आ ओ नीलाम्बर बाबूक गप-टारि नहि सकैत अछि, संगहि नरेन्द्र स्त्रीक भूमिकामे छथि, तखन ओ लोकनि अपन योजना बनौलन्हि आ नीलाम्बर बाबूकेँ एहि लेल दबाब देल गेलन्हि जे

ओ अपना भातिजकेँ नाटकसँ हटा लेथि ।

नाटक होयबामे मात्र दू दिन शेष छलैक । नरेन्द्र रिहर्सलक लेल डेरासँ विदा भेलाह । नीलाम्बर बाबू हुनका बजौलथिन्ह आ पुछलथिन्ह, "कत' जाइत छह ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "रिहर्सलक लेल ।"

नीलाम्बर बाबू कहलथिन्ह, "तोरा ई नाटक नहि करबाक छह ।"

नरेन्द्र तँ स्तब्ध रहि गेलाह । ओ ककाजीसँ एहेन अपेक्षा नहि करैत छलाह । ओ ककाजीसँ सोझाँ-सोझी गपो नहि क' सकैत छलाह । ओ तँ काकीसँ अनुमति प्राप्त कयने छलाह । काकीक माध्यमे ककाजीकेँ पहनहिसँ एहि विषयमे बुझल छलन्हि मुदा ओ मना नहि कयलथिन्ह, तखन आइ किएक ? ई तँ हुनका मनोवृत्ति पर अंकुश लगायब भेल । नरेन्द्र अपन साहस बटोरि पुछलथिन्ह, "से किएक ?"

ककाजी कहलथिन्ह, "हम सभ नहि चाहैत छी जे ओ ग्रुप एहिमे सफल होअय । तेँ तोरा एहिसँ हटि जयबाक छह ।"

नरेन्द्रक स्थिति साँप-छुछुन्नरि सनक भ' गेलनि । एक दिस अपन स्वाभिमान आ दोसर दिस ककाजीक आदेश । ककाजीक आदेश तँ नरेन्द्रक लेल ब्रह्मवाक्य छल मुदा जँ ओकर पालन करैत छथि, तँ काल्हिसँ आफीसमे सभ केओ हुनकर खिल्ली उड़ाओत । गद्दार कहतनि, टाँगघिच्चा कहतनि आ तकर सामना ओ कोना करताह । ओ दुविधामे छटपटा रहल छलाह । अनायास हुनका दिमागमे एकटा युक्ति अयलनि । ओ बजलाह, "ठीक छै ककाजी ! हम अहाँक आदेशक पालन करब मुदा अहूँकेँ हमर एकटा काज कराब' पड़त ।"

नीलाम्बर बाबू पुछलथिन्ह, "कोन काज ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "अहाँ तुरंत हमर बदली कतहु अन्यत्र करबा दिअ', संगहि कार्य विरमित सेहो । ने हम एहि ठाम रहब आ ने नाटक खेलब मुदा एहि ठाम रहिक' एहेन नहि भ' सकैत अछि । नाटक वा

कोनो सांस्कृतिक कार्यक्रम हमरा मनोवृत्तिसँ जुड़ल अछि । एहिसँ हमर स्वाभिमान आहत होयत आ हम कतहुकेँ भ' क' नहि रहब ।"

नीलाम्बरबाबू नरेन्द्रक उत्तर सुनि स्तब्ध रहि गेलाह । हुनका नरेन्द्रसँ एहन आशा नहि छलन्हि । ओ तँ बुझैत छलाह जे नरेन्द्र सएह काज करताह जे हम कहबन्हि, मुदा एहि ठाम तँ दाँव उनटा पड़ि गेलन्हि । कदाचित् बदली कराओ देथिन तँ विरोधी नाटक धरि कार्य विरमित नहि होअय दितन्हि आ देखारो भ' जइतथि । तेँ ओ चुप रहि गेलाह । नरेन्द्र सेहो जीवनमे पहिल बेर ककाजीक आदेशक अवज्ञा कयने छलाह ।

नरेन्द्रकेँ नेनपनेसँ गीत-नाद पसिन्न छलन्हि । हुनकर बड़का मामा हुनका कतोक रंगक गीत सिखौने छलथिन्ह मुदा सब अधकिचुए, पूर्ण कोनो नहि । ताहुमे बेसी जोड़ि-जाड़िक' देहाती फकड़ा । जेनाकि 'भोर भेलै हे सखी भिनसरबा भेलै हे । दरशनमा सन हरवाह सब खेत जोतिये देतै हे' आदि-आदि आ नरेन्द्र जखन-तखन तकरे गुनगुनाइत रहैत छलाह ।

एक बेरक गप अछि । नरेन्द्र तेसर वर्गमे पढ़ैत छलाह । स्कूलसँ मेधावी परीक्षा लेल चयनित भेलाह आ ओही क्रममे परीक्षा देबाक लेल गुरुजीक संग बहेड़ा गेलाह । लिखित आ मौखिक परीक्षाक बाद गीत गयबाक अवसर भेटलन्हि, मुदा नरेन्द्रकेँ कोनो गीत पूर्ण रूपेँ नहि अबैत छलन्हि । ओ गीत गयबामे अपन असमर्थता व्यक्त कयलन्हि । ओही क्षण हुनकर नजरि ककाजी पर पड़लन्हि, जे कनेक काल पहिने परीक्षा केन्द्र पर साइकिलसँ पहुँचल छलथिन्ह । ककाजी ई दृश्य देखि रहल छलाह । ओ नरेन्द्रकेँ किछु इशारा कयलन्हि, मुदा नरेन्द्र हुनकर इशारा नहि बुझलन्हि आ डरे कानय लगलाह । ओही दिन ककाजी घर पहुँचला पर नरेन्द्रकेँ कहलथिन्ह, "जँ हम कहिओ तोरा मुँहसँ गीत गबैत सुनलहुँ तँ चमड़ा उधेड़िक' राखि देबहु । ओही दिनसँ नरेन्द्रक गीत गायब बन्न भ' गेलन्हि । खास क' तखन, जखन ककाजी गाममे रहैत छलाह । किछु दिनक बाद नरेन्द्र खूब सुन्नर गीत गाब' लगलाह । स्कूलमे प्रार्थना सेहो हुनके अगुआइमे होइत छलैक । ककाजी सेहो ककरो मुँहे ई गप सुनने

छलाह । हुनको इच्छा नरेन्द्रसँ गीत सुनबाक होइत छलन्हि मुदा नरेन्द्रक विवशता छलनि, ओ ककाजीक सोझाँ गाबिये नहि सकैत छलाह ।

एक दिन एहनो अवसर आयल । ककाजीक ओ अधिकारी शर्माजीक बदली भ' गेलन्हि । जयबासँ पूर्व किछु गोटे हुनका डेरा पर हुनका प्रति अपन निष्ठा व्यक्त करबाक लेल पहुँचलाह । ओहिमे एकटा ककाजी सेहो छलाह । ककाजीकेँ देखितहि शर्माजी पुछलथिन्ह, "नीलाम्बर बाबू ! अहाँक भातिज तँ कलाकार अछि । कलाक लेल ओ पहिल बेर अहाँक अवज्ञा कयलक, जेना कि अहीँ बाजल छलहुँ । हमर इच्छा ओकरासँ किछु सुनबाक अछि । कनेक ओकरा बजाओल जाओ ।"

ककाजी कहलथिन्ह, "श्रीमान् ! एखन धरि हमरो ई सौभाग्य नहि भेटल अछि । कारण ओ हमरा सोझाँमे गाबिये नहि सकैत अछि । ओकरा एहि ठाम बजायब व्यर्थ होयत । जँ ओकर गीत सुनबाक अछि तँ हमहीं एहि ठामसँ चल जाइत छी ।"

शर्माजी कहलथिन्ह, "जी नहि, अहाँके कतहु जयबाक आवश्यकता नहि अछि । जँ ओ सही मायनेमे कलाकार होयताह तँ हमरा लोकनिक आग्रहकेँ मानि लेताह । एहेन हमर विश्वास अछि ।"

नरेन्द्र बजाओल गेलाह । शर्माजी कहलथिन्ह, "नरेन्द्रजी ! सुनैत छी जे अहाँ बड़ सुन्नर गीत गबैत छी, ताहूमे खास क' विद्यापतिक । मिथिलामे विद्यापतिक गीत बड़ प्रशस्त अछि । कनेक हमहूँ सुन' चाहैत छी जे ओहिमे की खूबी छैक । जे गीत देवाधिदेव महादेवकेँ मोहित क' सकैत अछि, नौकर बनबाक लेल विवश क' सकैत अछि, ताहिमे किछु तँ विशेषता अवश्य होयतैक ।"

नरेन्द्रक स्थिति लोथ सनक भ' गेलन्हि । हुनकर हाथ-पयर सब सुन्न बुझना जाइत छलन्हि । ओ एखन धरि ककाजीक सोझाँमे गीत गओने नहि छलाह आ जँ नहि गओताह तँ हुनका भीतर नुकायल कलाक विकास कोना होयत ? ओ साहस बटोरि मुड़ी गोंतने बजलाह, "हम कोनो गायक तँ नहि छी । तखन अभिनय अवश्य करैत छी । तथापि हम अपनेकेँ

निराश नहि करब मुदा त्रुटिक लेल पहिनहि क्षमा चाहैत छी ।"

ओ सबसँ पहिने एकटा विद्यापतिक गीत गओलनि, "आजु नाथ एक व्रत महासुख लागत हे...।" सबकेओ वाह...वाह...कयलनि आ दोसरोक फरमाइश भ' गेल । एहि तरहेँ नरेन्द्र ओहि ठाम पाँचटा गीत गओलनि । मिठाइ आ बिस्कुटक जलखै भेटलन्हि संगहि वाहवाही सेहो । ओहि दिनसँ नरेन्द्रक मनक डर भागि गेल । आब ओ ककाजीक सोझाँ सेहो गबैत छथि ।

ककाजीमे बहुत गुण छलन्हि, मुदा एकटा बड़ पैघ अवगुण सेहो आ से छलनि आँखि मूनि क' काकीक गप पर विश्वास करब । ओना ई कोनो खराब गप नहि भेलैक । पति-पत्नीक तँ सम्बन्धे विश्वास पर चलैत अछि । जँ एक-दोसर पर विश्वास नहि करत तँ काजे नहि चलतैक मुदा आँखि मूनि क' नहि करबाक चाही । विश्वास करबासँ पूर्व ओकर सत्यताक जाँच अवश्य करबाक चाही । अन्यथा कौखन माँथा झुकिओ सकैत अछि ।

एक दिनक गप थिक । रवि दिन छलैक आ ऑफिस बन्न छलैक । नरेन्द्र डेराक बगलमे एकटा मास्टर साहेब निरंजन बाबूक ओहि ठाम बैसि गप-सप क' रहल छलाह । ककाजी आफीसक काजसँ पटना गेल छलाह । निरंजन बाबू पुछलथिन्ह, "नरेन्द्रजी ! आब तँ नौकरी भ' गेल । आबहु विवाह-दान करब वा नहि ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "विवाह तँ अवश्य करब मुदा ई निर्णय गार्जियन ने करताह ?"

निरंजन बाबू पुछलथिन्ह, "कनियाँ केहन चाही ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "जँ हमरा विचारसँ होयत, तँ कनियाँ शिक्षित आ गृहकार्यमे निपुण होयबाक चाही ।"

निरंजन बाबू पुछलथिन्ह, "तिलक कतेक लेबैक ?"

नरेन्द्र उत्तर देलथिन्ह, "एहि विषयमे हम किछु नहि कहि सकैत छी । ई सभ गार्जियन तय करताह ।"

निरंजन बाबू पुछलथिन्ह, "अहाँक गार्जियन के छथि, बाबूजी वा ककाजी ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "ककाजी ।"

तावत् काकी आबि गेलीह । हुनका अबितहि नरेन्द्र चुप भ' गेलाह आ हुनका चुप होइतहि निरंजन बाबू सेहो गपकेँ बदलि देलन्हि । दोसर विषय पर गप कर' लगलाह । काकी अंतिम शब्द ककाजी सुनने छलथिन्ह । हुनका एकर दोसर अर्थ लागि गेलन्हि । ओ पुछनहु छलथिन्ह मुदा गपकेँ दोसर विषय पर घुमा देल गेल छलैक । काकी कनेक शंकालु प्रवृत्तिक सेहो छलथिन्ह । ओ सब किछु बुझबाक प्रयास करैत छलीह । खाहे ओ गप हुनकासँ सम्बन्धित हो वा नहि मुदा ओ सब ठाम अपन टांग घुसिअयबे करितथि । ककाजी जखन डेरा अयलाह तँ काकी कहलथिन्ह, "एकटा गप बुझलहुँ ?"

ककाजी पुछलथिन्ह, "कोन गप ?"

काकी कहलथिन्ह, "नरेन्द्र अरोसी-पड़ोसीक संग घरक अदखोइ-बदखोइ बतियाइत छथि । काल्हि ओ निरंजन बाबूक संग बतिया रहल छलाह आ हमरा देखितहिँ दुनू गोटे चुप भ' गेलाह । जखन हम पुछलियन्हि तँ गपकेँ घुमा देलन्हि । ककाजीकेँ बड़ तामस भेलन्हि । ओ प्रात:काल आफीसक लेखापाल जे डेराक बगलेमे रहैत छलाह आ ककाजीक मित्र सेहो छलथिन्ह, केँ बजौलथिन्ह आ नरेन्द्रक खिचाई शुरू कयलनि । नरेन्द्र किछु बाज' चाहथि तँ ककाजी हुनका डाँटि दैत छलथिन्ह । ओ चुपचाप सब किछु सुनैत रहलाह । एहिमे ककाजीक कोनो दोष नहि छलन्हि । हुनका तँ जे काकी कहलथिन्ह, तदनुरूप हुनकर तामस उचित छलन्हि मुदा गप तँ से नहि छलैक । असली गप तँ ने ककेजी बुझैत छलाह आ ने काकीये । मात्र अनुमाने पर एतेक घमासान भ' रहल छलैक । ककाजी जनैत छलाह जे नरेन्द्र हुनका सोझाँ झूठ नहि बाजि सकैत छलथिन्ह । तथापि ओ काकीक झूठ पर आँखि मूनिक' विश्वास कयलन्हि । जखन युधिष्ठिरक अर्धसत्य सुनि गुरु द्रोण भ्रमित भ' सकैत

छलाह, तँ ककाजीक कोन गप । ओ तँ साधारण लोक छलाह । ओ लेखापाल सेहो नरेन्द्रकेँ बड़ फज्झति कयलथिन्ह । ओ कहलथिन्ह, "अहाँक लेल नीलाम्बर बाबू की नहि कयलन्हि आ बदलामे अहाँ हुनका इएह सब द' रहल छियैन्हि । जँ कृतज्ञता नहि द' सकलहुँ तँ कृतघ्नो नहि बनू । तावत् ककाजी कोनो कार्यवश डेराक भीतर चल गेलाह ।

नरेन्द्र लेखापालजी सँ कहलथिन्ह, "श्रीमान्, सबटा हमरे गलती थीक मुदा हमर एकटा अनुरोध मानल जयतैक ?"

लेखापाल पुछलथिन्ह, "केहेन अनुरोध ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "कनेक निरंजन बाबूसँ पुछल जाओ जे हमरा हुनका बीचमे कोन गप होइत छल ।"

निरंजन बाबू बजाओल गेलाह आ लेखापाल पुछलथिन्ह, "अहाँ आ नरेन्द्र रवि दिन-दुपहरमे कोनो गप-सप करैत छलहुँ ?"

निरंजन बाबू कहलथिन्ह, "जी हँ, करैत तँ छलहुँ ।"

लेखापाल पुन: पुछलथिन्ह, "की गप करैत छलहुँ । गपक प्रसंग की छलैक ।"

तावत ककाजी सेहो आपस आबि गेलाह । तखन निरंजनबाबू ओहि गपक विस्तृत वर्णन कयलन्हि तँ सभक मुँह लटकि गेलन्हि । लेखापाल सेहो मुँह लटकौने अपना डेरा दिस विदा भ' गेलाह आ ककाजी सेहो चुपचाप भीतर कोठलीमे चल गेलाह । ई घटना नरेन्द्रक हृदय पर बड़ चोट कयलकनि । हुनका काकीपर जतेक श्रद्धा छलनि से ध्वस्त भ' गेलनि । ओ कका-काकीकेँ अपना माँ-बाबूजी सँ बेसी आदर-सम्मान दैत छलथिन्ह । नरेन्द्रक माँ-बाबूजी हुनकर जन्म अवश्य देलथिन्ह मुदा हुनका सब तरहेँ परिपक्व बनयबामे कका-काकीक योगदान बड़ महत्वपूर्ण छलन्हि । से नरेन्द्र बुझैत छलाह आ अपन नुकसानों क' क' ओकर भरपायी करबाक प्रयत्न करैत रहलाह । नरेन्द्र अपना माँ-बाबूजीक गपकेँ टारि सकैत छलाह मुदा कका-काकीक गप हुनका लेल लक्ष्मण रेखासँ बढ़ि क' छलन्हि ।

नरेन्द्रकेँ गीत-नाद, पूजा-पाठ, अभिनयक संग पत्र लेखनमे सेहो अभिरुचि छलन्हि । ओ कोनो विषयकेँ चिट्ठीक माध्यमे सुगमतासँ कहि दैत छलाह । हुनकर एकटा पितिऔत भाय विकास पदाधिकारी छलथिन्ह । हुनकासँ नरेन्द्रकेँ बरोबरि पत्राचार होइत रहैत छलन्हि । संयोगवश एहि घटनाक तुरंत बाद नरेन्द्रकेँ भैयाक चिट्ठी अयलन्हि । ओ चिट्ठी डेराक पतासँ अयलनि । ओहि समयमे नरेन्द्र डेरा पर उपस्थित नहि छलाह । कका-काकीकेँ शक भेलन्हि जे नरेन्द्र अवश्य एहि घटनाक विषयमे हुनका किछु लिखने होयथिन्ह । चिट्ठी फाड़िक' पढ़ल गेल मुदा ओहिमे कोनो आपत्तिजनक गप जे हुनका लोकनिकेँ अनुमान छलन्हि, से नहि छलैक । तखन हुनका लोकनिकेँ संतोष भेलन्हि । पुन: ओ चिट्ठी नरेन्द्रकेँ हाथमे दैत काकी कहलथिन्ह, "चिट्ठी पहिनहिसँ फाटल छलैक । एकरा एहि ठाम केओ नहि फाड़ने अछि । मुदा नरेन्द्रकेँ एहि जासूसीक भान भ' गेलन्हि । ओहो कोनो मूर्ख तँ नहि छलाह आ विद्यार्थी जीवनमे बहुत तपाओल गेल छलाह जेना माँटिक बर्त्तन कुम्हारक आबासँ तपिक' बहराइत अछि । ओ तुरंत भैयाकेँ चिट्ठी लिखलथिन्ह, "अहाँक चिट्ठी एहिठाम फाड़िक' पढ़ल जा रहल अछि । तेँ आब हमरा-अहाँक बीच पत्राचार बन्न रहत । जखन भेट-घाँट होयतैक, तैखन हाल-समाचार होयतैक ।"

किछु दिनक बाद नरेन्द्रकेँ एकटा टेलीग्राम भेटलन्हि "माय दुखित छथि, शीघ्र गाम आबू" । नरेन्द्र गाम अयबाक लेल आतुर रहथि । हुनकर आतुरता देखि कका-काकी व्यंग्य करैत छलथिन्ह । मुदा नरेन्द्र ओहि व्यंग्यक भाव नहि बुझि पओलन्हि । जखन गाम अयलाह तँ माँ केँ ठीक-ठाक देखि ओ अचंम्भित छलाह । पता चललनि जे हुनकर विवाह तय भ' गेलन्हि । ओ तार तँ मात्र हुनका बजयबाक बहन्ना छलैक । तखन हुनका कका-काकीक द्वारा कयल गेल व्यंग्य बुझबामे अयलन्हि । विवाह मात्र चारि दिनक बाद होयत । नरेन्द्र बहुत प्रयास कयलन्हि जे विवाहक दिन कमसँ कम आठ दिनक बाद होयबाक चाही । मुदा कन्या पक्षक लोक सेहो अपन मजबूरी देखौलन्हि । हुनको समांग जे बाहरसँ छुट्टी ल' क' आयल छलथिन्ह, तनिका सभक छुट्टी खतम भ' रहल छलन्हि ।

अंतत: नरेन्द्रक प्रस्ताव अस्वीकार क' देल गेलन्हि । ओ तुरंत आपस अयलाह, कका काकीकेँ गाम ल' जयबाक लेल, मुदा ओ लोकनि विवाहमे नहि गेलाह । नरेन्द्र बहुत अनुनय-विनय कयलथिन्ह मुदा कका-काकी पर कोनो असरि नहि भेलन्हि । पता नहि हुनका लोकनिक संगे किछु मजबूरी छलन्हि वा कोनो बहन्ना कयने रहथिन, कहि नहि सकैत छी । नरेन्द्र एसकरे अयलाह । पूर्व निर्धारित समय पर विवाह भेलन्हि । कनियाँ बड़ सुन्नरि भेटलथिन्ह । नरेन्द्रक माय कनियाँकेँ देखि खूब प्रसन्न छलीह । ओ जेहने कनियाँक अपेक्षा करैत छलीह, तेहने भेटलथिन्ह मुदा हुनका मनमे ई भरोस नहि छलन्हि जे हुनकर बेटा-पुतोहु हुनकर अपूर्ण कार्यकेँ पूर्ण करथिन्ह । एहिमे हुनको कोनो दोष नहि छलन्हि । कोनो तरहक कल्पनाक दूइटा आधार होइछ । एकटा व्यक्तिक स्वभाव आ दोसर सामाजिक परिवेश । नरेन्द्रक माय तँ अपनहि आँगन मे अपने दियादिनी आ जाउत-पुतोहुमे सदरि काल घमासाने देखैत छलीह । की हथियाक मेघ बरिसत, ओहूसँ बेसी अलंकार वृष्टि देखैत छलीह । टोल-पड़ोसक लोकक भीड़ लागि जाइत छलैक । दुनूमे केओ उन्नैस नहि । देखनिहारे थाकि जाइत छल मुदा ओ दुनू नहि । किछु दिनक बाद चुल्हा फूट भ' गेलन्हि आ दुनू सासु-पुतोहु फराक भ' गेलीह । तेँ नरेन्द्रोक माँक मन सशंकित छलन्हि । हुनक सोच उचित छलन्हि मुदा सभ केओ एके रंगक नहि होइत छैक । किछु अपवादो तँ होइत छैक । जँ से नहि तँ हिरण्यकशिपुक घरमे प्रह्लादक जन्म कोना भेलन्हि, लंकामे विभीषण कोना भेलाह ।

किछु दिनक बाद नरेन्द्र दुर्गा पूजाक छुट्टीमे गाम आयल छलाह । हुनकर माँ भोजन करैत काल नरेन्द्रक सोझाँ एक बट्टा दूध राखि देलथिन्ह । नरेन्द्र बट्टा भरि दुध देखितहि चकित भ' गेलाह आ माँ सँ पुछलथिन्ह, "एतेक दूध की होयतैक ? हम तँ दूध नहि खाइत छी ?

माँ कहलथिन्ह, "जे खयबह से खाह, बाँकी छोड़ि दिहक ।"

नरेन्द्र पुछलथिन्ह, "ककरा लेल...?"

माँ कहलथिन्ह, "कनियाँक लेल ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "ई सब हमरा लग नहि करू । घरमे एहेन नियम बनाबू जे सभक लेल सुलभ होअय वा सभ केओ ओकर पालन क' सकए, एहेन नहि जेकरा लेल काल्हि सेहो अहीँकेँ माथा पच्ची कर' पड़ए आ दोष देबैक बेटा-पुतोहुक । अहाँकेँ जकरा जे किछु देबाक हो, से दिऔक मुदा ऐंठ किएक, निरैंठे दिऔक । हम एहि घरमे ओएह वस्तु ग्रहण करब, जकर इन्तजाम सुगमतापूर्वक सभक लेल होयतैक । एहेन नहि जकरा लेल मुँहतकौअलि होयतैक । बट्टो भरि दूध ओहिना पड़ले रहि गेल । नरेन्द्र ओकरा छूबो नहि कयलन्हि । ओ दूध नहि खाइत छलाह । ओना तँ अभावक कारण नहि खाइत छलाह मुदा बहन्ना बनबैत छलाह जे दूध खयने पेट खराब भ' जाइत छन्हि । दोसर गप हुनकर नियम छलन्हि, हम ओएह वस्तु खायब जे घरमे सब केओ खायत । परिवारिक स्थिति ओहेन नहि छलन्हि जे सभक लेल दूध उपलब्ध कराओल जाइत । तेँ नरेन्द्र सेहो परहेज करैत छलाह । ओहि दिनसँ ओ एकटा आर नियम अपना लेल बनौलन्हि । आगाँमे भोजनक सामग्री ओतबहि लेथि, जतेक भोजन करथि । ऐंठ नहि राखथि । ऐंठ रखने तँ केवल हुनके कनियाँटा खयतीह आ निरैंठ रहतैक तँ दोसरो केओ खा सकैत छलैक । माँ पुनः आग्रह कयलथिन्ह तँ नरेन्द्र कहलथिन्ह, "एहेन परम्पराकेँ एहि घरमे नहि चलाउ । इएह परम्परा तँ हमरा घरकेँ सत्यानाश कयलक । तकरे फल तँ हम सब भोगि रहल छी । केओ खाइते-खाइते मरैत छलैक आ केओ खयबाक लेल ।"

नरेन्द्र देखने छलाह जे श्वेताम्बर बाबूक आगाँमे भरि बट्टा दूध-भात पड़ैत छलन्हि । ओ आधा खाइत छलाह आ आधा बड़की काकी खाइत छलथिन्ह, सेहो अफरि क' । शेष घरक लोककेँ मड़ुओक रोटीमे घिच्चम-तीड़ी होइत छलन्हि । श्वेताम्बर बाबू घरक श्रेष्ठ छलाह । सभ केओ हुनकर इज्जति करैत छलथिन्ह । ओ नित्य चारि घंटा पूजा-पाठ करैत छलाह । शेष भाय लोकनि हरबाह-चरबाह जकाँ खेतमे काज करैत छलथिन्ह । ओनातँ काज करब कोनो अधलाह गप नहि भेलैक । जँ कमायब नहि तँ खायब कोना ? मुदा सभ गोटे केँ मिलिक' काज

करबाक चाही । दू गोटे बनिहार जकाँ खटत आ एक गोटे फुटानी करत । ई सामंती प्रवृत्तिक प्रतीक भेलैक । अधिकांश संयुक्त परिवार अही सब कारणसँ विखंडित भ' जाइत अछि । सभकेँ ल' क' चलबाक ककरो प्रवृत्तिये नहि छैक । सभ अपन स्वार्थ देखैत अछि । खाहे ओ घर हो, गाम हो वा देश । ओना श्वेताम्बर बाबू नरेन्द्रक आचार्य गुरु छलथिन्ह आ प्रेरणाश्रोत सेहो । नरेन्द्र हुनकर परिवारिक आचरणक विपरीत चलैत छलाह ।

किछु दिनक बाद नरेन्द्र गाम आयल छलाह । ओ श्वेताम्बर बाबूक भेट कयलथिन्ह आ पयर छूबि क' गोड़ लगलथिन्ह । श्वेताम्बर बाबू नरेन्द्रकेँ आशीर्वाद दैत कहलथिन्ह, "नरेन्द्र ! तोँ साँप पोसि रहल छह ।" ओहि समयमे नरेन्द्र अपना छोट भायकेँ इंजिनियरींगक पढ़ाई पढ़ा रहल छलाह । हुनका श्वेताम्बर बाबूक ई गूढ़ गप बुझबामे नहि अयलन्हि ।

ओ पुछलथिन्ह, "ककाजी ! हम अहाँक गपक अभिप्राय नहि बुझल ?"

श्वेताम्बर बाबू कहलथिन्ह, "एखन बुझबो नहि करबहक । जखन समय अओतैक तँ स्वयं बुझि जयबह । हम कोना-कोनाक' छोटका भायकेँ पढ़ौलहुँ आ ओ हमरे सिरमे लागि गेल । हमरा देख' तक नहि चाहैत अछि ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "साँपो तँ लोके ने पोसैत अछि । जँ ओकर स्वभाव डँसब छैक तँ लोकक स्वभाव पोसब । सभ अपना स्वभावक वशीभूत अछि । दोसर गप काल्हि की होयतैक, से लोक आइये कोना बुझि जायत । एक दिन तँ सभ केओ मरबे करत । सब किछु अही ठाम रहि जायत । तखन लोक एतेक परिश्रम किएक करैत अछि ? अहाँ जे आम खाइत छी से गाछ अपनहिकेँ रोपल छल ? नहि ने । तहिना अहूँ जे रोपि देबैक तँ केओ ने केओ खयबे करत ।"

नरेन्द्र आ श्वेताम्बर बाबूक सोचमे इएह अंतर छलन्हि । नरेन्द्रक सोच सकारात्मक छलन्हि आ श्वेताम्बरबाबूक सोच नकारात्मक । तथापि विपरीत सोचक होइतहुँ दुनू गोटेमे नीक सामंजस्य छलन्हि । तकर एकटा

आर कारण छलैक । नरेन्द्र श्वेताम्बर बाबूक संग कोनो विषय पर उकटा-पैंची नहि करैत छलाह । ओ अपना तर्क सँ हुनका मना लैत छलाह । श्वेताम्बर बाबू नीलाम्बर बाबूसँ एहि लेल उखरल रहैत छलाह जे ओ हुनकर सभटा पोल खोलिक' राखि देलथिन्ह । श्वेताम्बर बाबू घरक बखारी काटि सासुरक बखारी भरैत छलथिन्ह । एहि रहस्य पर सँ पर्दा उठौनिहार नीलाम्बरे बाबू छलाह । शेष दुनू भाय तँ किछु बुझितहि नहि छलाह । ओ दुनू तँ रामभक्त हनुमाने बुझू । केवल खेतमे बोनिहार जकाँ कमायब जनैत छलाह । इएह सभ वस्तु स्थिति नरेन्द्रक प्रेरणाश्रोत बनल । नरेन्द्र अपना आपकेँ एहि सभसँ बचयबाक प्रयास करैत रहलाह । अपनासँ छोट भाय-बहिनकेँ पढ़यबाक लेल प्रयत्न कयलन्हि जकर परिणाम स्वरूप तीन भाय बी.ए. आ दूटा भाय एम.ए. छथिन्ह । सब भाय प्राइवेट नोकरी करैत अपन गुजर-बसर क' रहल छन्हि । नरेन्द्रक बहिन मे सँ केओ ढंगसँ नहि पढ़लथिन्ह । हलाँकि नरेन्द्र ओहि लेल बहुत प्रयत्न कयलन्हि । ओ एकटा बहिनक विवाह अपन सामर्थसँ बाहर खूब नीक घरमे करौलन्हि मुदा बहिनोइ शराबी निकलि गेलथिन्ह । सबटा जमीन-जथा बेचि क' पीबि गेलथिन्ह आ किछु दिनक बाद अपनहुँ गुजरि गेलाह । ओहि बहिनकेँ बड़ कष्ट होइत छन्हि । तखन तँ जकरा जे प्रारब्धमे छैक से तँ भोगहि पड़तैक । नियति पर ककरो वश नहि चललैक अछि । हुनका आशा छलन्हि जे दोसर बहिनिक विवाहमे आर भाय किछु मदति करताह मुदा केओ किछु नहि कयलथिन्ह । ओहो अपना ओकातिक मुताबिक हुनके कर' पड़लन्हि । ओ गरीब घरमे चल गेल छथिन्ह । हुनका सेहो जीवन-यापनमे बड़ कष्ट होइत छन्हि । ओना घरतँ कोनो पैघ वा कमजोर नहि होइत छैक, जँ ओकर समांग कमासुत होथि, मुदा जँ समांगे गजेरी आ निठल्लू भ' जाथि, तखन तँ भगवाने भरोसे । तेसर बहिनिक विवाह मध्यमे परिवारमे भेलन्हि । ओ बहिनोइ बेसी पढ़ल-लिखल तँ नहि छलथिन्ह मुदा बड़ कमासुत छलथिन्ह । अपन फैक्ट्री छलन्हि जाहिमे अपनहु खटैत छलाह आ किछु मजदूरोकेँ खटबैत छलाह । ओ बहिन सुख सँ जीवन काटि रहल छलथिन्ह मुदा कपारक लिखल के मेटि सकैत अछि । ओ बहिन अल्पे वयसमे विधवा भ' गेलथिन्ह । बहिनोइ

एकटा दुर्घटनामे मारल गेलथिन्ह । हुनका दूटा बेटी आ एकटा बेटा छन्हि । दीअर वा भैंसुर केओ एहन नहि जे सबकेँ ल' क' चलि सकथि । तखन हुनको दिन कहुना क' कटि रहल छन्हि ।

किछु दिनक बाद नरेन्द्रक संग एकटा घटना घटित भेल । जाड़क मास छलैक । ओ बहिनिक द्विरागमनमे गाम गेल छलाह । एहि ठाम दरभंगामे डेरा सून देखि चोर डेराक ताला तोड़ि देलकन्हि आ केवल चौकी छोड़ि सब किछु ल' गेलन्हि । नरेन्द्रक संग ओतबहि कपड़ा बाँचि गेल छलन्हि, जतबा देह पर छलन्हि । अही बीच नरेन्द्रक बदली दरभंगासँ चाइबासा भ' गेलन्हि । पहिने तँ ओ बड़ चिंतित भेलाह । पुनः सोचलनि, "भगवान जे करैत छथि से नीके होइत छैक । भ' सकैत अछि जे एहिमे हमरे किछु कल्याण होअय । इहो भ' सकैत अछि जे एहि जाड़मे ओहि व्यक्तिकेँ हमरोसँ बेसी कपड़ाक जरूरत होयतैक । एखन जयबामे कष्ट अवश्य होयत आ बिना कष्टे किछु भेटबो तँ सम्भव नहि अछि । किछु पयबाक लेल किछु गमायब जरुरीये होइत छैक ।" कतेको संगी सभ डेरौलकन्हि सेहो । चाइबासा नीक जगह नहि छैक । ओत' अपराधिक घटना विशेष होइत रहैत छैक । ओत' केओ सुरक्षित नहि अछि । नरेन्द्र पर एकर कोनो प्रभाव नहि पड़लन्हि । हुनका मनमे कनेको डर नहि भेलन्हि । ओ सोचलनि, होनीकेँ के टारि सकैत अछि । जे होयबाक होयतैक से तँ होयबे करतैक । बादमे जे होअ' मुदा हमरा लेल तँ एखन दरभंगे खराब रहल जे एक तरहेँ नाङ्गट बना देलक । एहिसँ खराब आर की भ' सकैत छैक ? ओ एहि बदलीकेँ भगवानक प्रसाद बुझि चाइबासाक लेल विदा भ' गेलाह ।

नरेन्द्र आफीस जा' क' अपन योगदान देलन्हि आ काज शुरू कयलन्हि । आफीसमे एकटा बंगाली मित्र बनि गेलन्हि आ ओकरेसँ नरेन्द्र संगीतक चर्चा कयलन्हि । ओ मित्र एकटा संगीतक गुरुजीसँ भेट करौलथिन्ह, जिनका खोजमे नरेन्द्र बचपनहिसँ छलाह । गुरुजीक नाम छलन्हि पं० श्री राम नाथ मिश्र । गुरुजी संगीतमे विशारद छलाह । आकाशवाणी सँ हुनकर गीतक प्रसारण होइत छलनि आ कतेको अंतराष्ट्रिय मंचसँ अपन प्रस्तुती

द' चुकल छलाह । ओ चाइबासा मे एकटा संगीत विद्यालय चला रहल छलाह । विद्यालय खूब पैघ आ भव्य छलैक । ओहिमे प्रत्येक वर्ष शास्त्रीय संगीतक आयोजन होइत छलैक जाहिमे देश-विदेशक गायक, वादक, नर्त्तक अबैत छलाह । ओहो लोकनि गुरुजी सँ प्रभावित भ' कम पारिश्रमिक लैत छलाह आ शेष राशिसँ विद्यालय संचालन होइत छलैक । गुरुजीक सानिध्यमे नरेन्द्र सेहो संगीत शिक्षा शुरु कयलन्हि । ओहि ठामक वातावरण नरेन्द्रकेँ बड़ नीक लगलन्हि । हुनकर इच्छा भेलनि जे एतहि रहि क' संगीत साधना करी आ आफ़ीस सेहो । ओ गुरुजीसँ एकर अनुमति चाहलनि । गुरुजी कहलथिन्ह, "एखन तँ अहाँ आयब शुरूहे कयलहुँ अछि । हम यावत् अहाँक आचरणसँ परिचित नहि भ' जायब, तावत् अनुमति कोना द' सकैत छी । हमरा किछु दिनक समय दिअ' ।

नरेन्द्र चुप रहि गेलाह । गुरुजीक उत्तर समीचीन छलन्हि । केओ सम्भ्रान्त लोक इएह कहैत । हलाँकि नरेन्द्र सरकारी सेवामे छलाह । सएह परिचय काफी भेल मुदा सरकारी सेवामे की उचक्का नहि रहैत अछि । समूचा प्रतिष्ठानकेँ बेचि क' खा जाइत अछि । करीब तीन-चारि मासक बाद गुरुजीक संग एकटा समस्या आबि गेलन्हि । हुनका विद्यालयक कैश बुक लिखनिहार केओ नहि भेटैत छलन्हि । ओ एकटा दोसर स्कूलक किरानीसँ लिखौने छलाह मुदा गलती भ' गेल छलैक । गुरुजी ओकर पारिश्रमिक रोकि लेलथिन्ह आ कहलथिन्ह," एहिमे अंकेक्षकक अनुरूप सुधार क' दिऔक आ अपन पारिश्रमिक ल' जाउ । मुदा ओ किरानी एक नम्बरक पाजी आ अड़ियल सेहो छल । ओ कहैत छलैक जे पहिने हमर भुगतान करू, तखन हम ओकर सुधार करब । अही विषय पर दुनू गोटेमे बहसा-बहसी भ' रहल छलनि । सम्भवतः ओ किरानी कोनो दोसर प्रांतक छल । ओ आवेशमे आबि क' बाजि देलक, "अही लेल हम सब बिहारी पर विश्वास नहि करैत छी ।" पता नहि एहिसँ गुरुजी पर की असरि भेल होयतन्हि मुदा नरेन्द्र जे ओतहि संगीतक रियाज क' रहल छलाह, हुनका ई गप तीर जकाँ चुभि गेलनि । गुरुजी ओकरा डाँटिक' भगा देलथिन्ह । जखन ओ किरानी चल गेल तखन नरेन्द्र गुरुजीसँ पुछलथिन्ह, "श्रीमान् !

की भेलैक अछि, ओ व्यक्ति किएक एतेक शोर क' रहल छल ?"

गुरुजी सहजतासँ नरेन्द्रकेँ कहलथिन्ह, "अहाँकेँ एहि सभसँ कोन काज अछि । अहाँ अपन रियाज करू । ई सब गप अहाँ नहि बुझबैक ।"

नरेन्द्र दुनू गोटेक गपसँ सब किछु तँ नहि मुदा बहुत किछु बुझि चुकल छलाह । ओ तँ मात्र अपना दिस आकृष्ट करबाक ध्येयसँ गुरुजीसँ पूछि रहल छलथिन्ह । ओ बेर-बेर पुछलथिन आ गुरुजीक ओएह उत्तर छलन्हि । नरेन्द्र पुनः पुछलथिन्ह तँ गुरुजी तेना बिगड़ि गेलथिन्ह जेना ओहि किरानीसँ भेल अपमानक सबटा बिष नरेन्द्रे पर उतारि देलन्हि । मन पड़ैत अछि गोस्वामीजीक कथन जेकर उल्लेख रामायणमे कयने छथि-

"अति संघर्षण जँ कर कोई । अनल प्रगट चंदन तेँ होई ।।"

चानन जे शीतलताक प्रतीक थिक, ओकरो बेसी रगड़लासँ, ओहिमे सँ आगि बरैत अछि । ताहू मे ओहि किरानीक व्यवहारसँ गुरुजीक हृदय तँ दगधल छलन्हिये । हुनक तामस स्वाभाविक छलन्हि । एहि स्थितिमे नरेन्द्रोकेँ एतेक खोर-खार नहि करबाक चाहैत छलनि मुदा ओहो अपना स्वभावसँ लाचार छलाह । ओ अपना उत्सुकताकेँ रोकि नहि सकैत छलाह । ओ कोनो समस्याक समाधान तुरंत करैत छलाह । कनेक कालक बाद गुरुजी पुनः कहलथिन्ह, "नरेन्द्र, एकरा अन्यथा नहि लेब । हम नाहक अहाँ पर तामस कयलहुँ । ओहि किरानीक व्यवहारसँ हमरा अपार कष्ट भेल । पाँच सय टको ल' लेलक आ सही ढंगसँ काजो नहि कयलक । ऊपरसँ आर मँगैत छल ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "श्रीमान् । ओकरा गप सँ ककरो कष्ट होइतैक । हमहूँ ओही वेदनासँ तड़पि रहल छलहुँ आ तेँ बेर-बेर अपनेसँ आग्रह करैत रहलहुँ । हम पुनः अपनेसँ आग्रह करब, जे की गप छैक, कहल जाओ ।" ओना अपने नहि कह' चाहैत छी तँ कोनो गप नहि, मुदा भ' सकैत अछि जे ओकर समाधान हमरा लगमे होअय । नरेन्द्रकेँ बुझा गेल छलन्हि जे विषय-वस्तु एकाउन्ट सम्बन्धी छलैक आ से तँ नरेन्द्र क'ए सकैत छलाह ।

गुरुजी पुछलन्हि, "अहाँ विद्यालयक एकाउन्ट बना सकैत छी ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "अवश्य बना सकैत छी । अही कार्यक लेल विभाग हमरा दस हजार टाका दरमाहा दैत अछि । हम आफीसोमे इएह सब करैत छी ।"

आब तँ गुरुजी एकदम बक्क रहि गेलाह । हुनका तँ बुझू डूबैतकेँ तिनकाक सहारा भेटि गेलन्हि । ओ भरि पाँज क' नरेन्द्रकेँ पजिया लेलथिन्ह । नरेन्द्रक लेल चाह-पान मँगबौलथिन्ह । कतबो नरेन्द्र मना कयलन्हि- श्रीमान्, हम चाह-पान नहि खाइत छी । मुदा गुरुजी कत' मान' बला छलाह ।

ओ कहलथिन्ह, "नरेन्द्र, हम अहाँक गुरु थिकहुँ ने ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "जी श्रीमान् !"

गुरुजी कहलथिन्ह, "तखन हम अहाँकेँ जे कहैत छी से करू ।" नरेन्द्र गुरुजीक गप मानबाक लेल विवश भ' गेलाह आ चाह-पान खयलन्हि । दोसर दिनसँ नरेन्द्र लेखा कार्यमे लागि गेलाह आ दस दिनमे एक वर्षक लेखा तैयार कयलन्हि । गुरुजी ओहि लेखाक संग अंकेक्षक ओहि ठाम गेलाह । अंकेक्षक ओकरा देखि बड़ खुश भेलाह आ गुरुजीसँ कहलथिन्ह, "एहिसँ पूर्वबला सेहो अही व्यक्तिसँ बनबाओल जाय जे एकरा बनौने छथि । अंकेक्षक इहो पुछलन्हि, जे ई व्यक्ति के छथि ? कनेक हमरो हुनकासँ भेट करबाउ ।"

दोसर दिन गुरुजी नरेन्द्रकेँ ल' क' अंकेक्षक लग गेलाह । दुनू गोटेमे परिचय भेलन्हि । अंकेक्षक नरेन्द्रक कार्यसँ पूर्ण संतुष्ट छलाह । विदा होयबाकाल अंकेक्षक महोदय नरेन्द्रकेँ एकटा लाल पेंसिल दैत कहलथिन्ह, "नरेन्द्रजी कनेक एकरो भाउचर सभ पर चला देबैक । अनेरे एतेक बोझ गुरुजी किएक उठौताह ।"

"गुरुजी किएक उठयताह । बोझ उठयबाक लेल तँ हम छियैन्हियेँ । गुरुजीकेँ तँ केवल आदेश करबाक छन्हि," नरेन्द्र कहने छलथिन्ह ।

ओहि दिनसँ नरेन्द्र मात्र नामक लेल गुरुजीक शिष्य छलथिन्ह । व्यवहारमे मित्रवत् भ' गेल रहथिन । ओना ओहो नरेन्द्रक पिताक वयसकेर छलाह । तेँ नरेन्द्र गुरुवते मानैत रहलथिन्ह । एकटा संगीत शिक्षक जिनकर नाम छलन्हि हनुमान मिश्र, ओ एहि सम्बन्धसँ अनभिज्ञ छलाह । एक दिन ओ नरेन्द्रकेँ कहलथिन्ह, "नरेन्द्र, एकटा गप पुछू ?"

"अवश्य पुछू श्रीमान्," नरेन्द्र उत्तर देलथिन्ह ।

हनुमान मिश्रजी कहलथिन्ह, "अहाँ गुरुजीक सोझाँ जे कुर्सी पर बैसैत छी से हमरा पसिन्न नहि अछि । की अहाँकेँ से नीक लगैत अछि ? हम बुझैत छी जे विभागमे अहाँ पैघ आफीसर छी मुदा एहि ठाम तँ विद्यार्थीये छी, गुरु शिष्यक सम्बन्ध अछि ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "श्रीमान् ! हम विभागहुमे छोटे पद पर छी, आ एहि ठामतँ सहजहि विद्यार्थी छी । गुरुजीक सोझाँ कुर्सी पर बैसब हमरो अनसोहाँत लगैत अछि मुदा एहिमे हमर कोनो दोष नहि अछि ।"

हनुमान मिश्रजी पुछलथिन्ह, "तखन केकर दोष छै ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "श्रीमान् ! की हम अहाँक सोझाँ कहिओ एहेन धृष्टता कयल अछि ? अहाँक कोनो आदेशक अवहेलना कयल अछि ?"

"नहि से तँ नहि कयल अछि । हमरा संग तँ जे व्यवहार एक गुरुक संग होयबाक चाही, सएह करैत छी । तेँ हम अहाँसँ पुछबो कयल अछि । ओहुना दोसर विद्यार्थीक अपेक्षा अहाँसँ हमरा विशेष लगाव अछि," हनुमान मिश्रजी कहलथिन्ह ।

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "ई हमर विवशता अछि । हम जखन सतरंजी पर बैसि काज करैत छी तँ गुरुजी हमर डेन पकड़िक' उठा दैत छथि आ कुर्सी पर बैसा दैत छथि आ ततबहि नहि, सोझाँमे टेबुल पर हमरा लेल चाह आ पान राखि दैत छथि । जँ हम किछु बजबाक प्रयास करैत छी तँ" हम अहाँक गुरुजी थिकहुँने, गुरुजीक गप कटबाक नहि चाही से कहिक' हमर मुँह बन्न क' दैत छथि । आब अहीं कहू, हम की क' सकैत छी ?

हमरा बुझने तँ एकर एकेटा उपाय अछि जे हम एहि ठाम आयब छोड़ि दी ।"

हनुमान मिश्रजी बजलाह, "नहि, नहि, एहेन काज तँ नहिएँ करू, मुदा एकर किछु तँ कारण होयतैक । एक साधारण विद्यार्थीक लेल उन्टा गंगा बहायब कनेक अप्रत्याशित बुझायल ।"

"जी ! कारण छैक ने" नरेन्द्र कहलथिन्ह आ हनुमान मिश्रजीकेँ ओहि किरानी सँ ल' क' अंकेक्षक धरिक वृत्तान्त सविस्तर सुना देलथिन्ह । हनुमान मिश्रजी बजलाह, "ओ आब बुझल । तखन तँ ई आव-भगत अनुचित नहि । मिथिलाक लोकक सेवाक लेल तँ देवगण लालायित रहैत छथि, हम सभ तँ मानवे थिकहुँ ।"

एक दिन गुरुजीकेँ युवा खेल मंत्रालय सँ एकटा पत्र भेटलन्हि । पत्रक मोताबिक किछु दिन पूर्व विद्यालयकेँ दस हजार टाका अनुदान स्वरूप देल गेल छलैक । तकरे उपयोगिता पत्र पठायल जयबाक छलैक । गुरुजी नरेन्द्रकेँ उपयोगिता प्रमाण पत्र तैयार करबाक लेल कहलथिन्ह । उपयोगिता प्रमाण पत्र तैयार करबा सँ पूर्व ई बुझब आवश्यक छलैक जे अनुदान कोन कार्यक लेल भेटल छलैक आ ओकर उपयोग ओहि कार्यमे कयल गेलैक वा नहि, आ जँ नहि कयल गेलैक तँ ओ राशि सरकारकेँ आपस करब अनिवार्य छलैक । नरेन्द्र गुरुजीकेँ वस्तु स्थिति सँ अवगत करा देलथिन्ह । आब समस्या छलैक जे ओ पूर्ण राशि बैंकमे जमा छलैक । बैंकक आदान-प्रदान मंत्री आ प्राचार्यक हस्ताक्षरसँ होइत छलैक । मंत्री महोदय कांग्रेसी नेता आ स्वतंत्रतासेनानी छलाह, संगहि अति कंजूस सेहो । हुनका बुझायब आ कुकुरक नाङ्गरि सोझ करब दुनू बरोबरि, से कहब गुरुजीक छलन्हि । मंत्रीजीक कहब छलन्हि जे राशिकेँ बचाक' राखू, जाहिसँ समय पर कोनो ठोस काज कयल जाय । नरेन्द्रक सुझाव पर गुरुजी कमीटीक बैसार बजौलन्हि, जाहिमे नरेन्द्रकेँ सेहो बजौलथिन्ह । बैसारमे अनचिन्हार लोककेँ देखि मंत्री महोदय पुछलथिन, "ई के थिकाह आ एहिमे कोना अयलाह ?

गुरुजी कहलथिन्ह, "श्रीमान् ! ई विद्यालयक खाता-बही तैयार करैत छथि आ ओकर अंकेक्षण करयबामे हमर सहयोग सेहो ।

मंत्री महोदय कहलथिन्ह, "ठीक अछि, तखन बैसारक अभिप्राय कहल जाओ ?"

गुरुजी बिहार सरकारक, पत्र दैत कहलथिन्ह, "एकरा पढ़ल जाओ ।"

मंत्री महोदय कहलथिन्ह, ''ई एतेकटा पत्र एतेक जल्दी के पढ़त ! एहिमे की छैक से बाजू ने ?"

गुरुजी नरेन्द्रकेँ इशारा कयलथिन्ह आ नरेन्द्र कहलथिन्ह, "श्रीमान् ! जँ एहि राशिकेँ उचित मदमे तय समय सीमाक अंदर खर्च नहि कयल गेल होयतैक, तँ एहि राशिकेँ पुनः सरकारकेँ आपस करब अनिवार्य अछि । संगहि पुनः दोसर बेर अनुदान नहि भेटत । सएह एकर शर्त्त अछि । अपने सुनैत होयबैक जे करोड़क करोड़ रूपैया राज्य सरकार वर्षक अन्तमे केन्द्र सरकारकेँ आपस करैत अछि मात्र अही शर्त्तक कारण ।"

मंत्री महोदय बजलाह, "आब की उपाय होयतैक ?" सब केओ एक दोसराक मुँह देख' लगलाह । पुनः मंत्री महोदय बजलाह, "नरेन्द्रजी ! एकर कोनो उपाय भ' सकैत छैक ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, ''श्रीमान् भ' अवश्य सकैत छैक । मुदा कनेक कठिनाह छैक । सब किछु पिछातिये तारीखमे कयल जेतैक । हमरा सभटा बही-खाता बदलिक' पुनः लिख' पड़त आ अपने लोकनिकेँ पिछातिये तारीखमे एकटा प्रस्ताव लेब' पड़त ।"

मंत्री महोदय कहलथिन्ह, "एतेक तँ अहूँकेँ विद्यालयक लेल करबेक चाही । तखन प्रस्ताव कोन तरहक लेल जयतैक ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "प्रस्ताव एहि तरहेँ होयतैक" विद्यालयक लेल किछु सामग्री खरीदब आवश्यक अछि । एहि लेल सरकारसँ अनुदान सेहो आबि गेल अछि मुदा मंत्री महोदय शहरसँ बाहर छथि । अपेक्षित राशिक निकासी बैंक सँ नहि भ' सकत । तेँ कोनो व्यक्ति तीन माहक

लेल दस हजार रुपैया विद्यालयकेँ प्रदान करी । मंत्री महोदयकेँ अबितहिँ ओकरा आपस क' देल जायत ।"

सभ केओ नरेन्द्रक प्रसंशा कर' लगलाह आ मंत्री महोदय तुरंत चेक पर दस्तखत कयलन्हि आ सब कागजी कार्य पूर्ण भेल । नरेन्द्रक एहि चमत्कारसँ गुरुजी अति प्रसन्न भेलाह ।

अचानक एक दिन हनुमान मिश्रजी आ गुरुजीमे किछु कहा-सुनी भ' गेलन्हि । हनुमान मिश्रजी विद्यालय आयब छोड़ि देलन्हि । ककरो कोनो विषय-वस्तुक जानकारी नहि भेटल मुदा सब केओ चाहैत छलाह जे हनुमान मिश्रजी पुनः विद्यालय आबथि । हनुमान मिश्रजी ने गुरुजीसँ बेसी ज्ञानी छलाह आ ने सुरीला मुदा विद्यार्थीकेँ सिखयबाक अद्‌भुत ढंग जे हुनका मे छलन्हि से ककरोमे नहि । प्रायः ई गुण कमे लोकमे भेटैत अछि। हनुमान मिश्रजीक अभाव सब विद्यार्थीकेँ खटकि रहल छलैक मुदा गुरुजीक सोझाँ बाजत के ? सब केओ नरेन्द्रसँ आग्रह कयलक जे अहाँ एहि विषय पर गुरुजीसँ गप करू । ओ अहाँक गप अवश्य मानताह । नरेन्द्र सेहो चाहैत रहथि जे हनुमान मिश्रजी पुनः आबथि मुदा घटनाक कारण तँ ओ नहि जनैत छलाह । कदाचित् गुरुजी हुनकर गप मानि लेताह मुदा जँ हनुमान मिश्रजी नहि मानथि, तखन ? जँ पहिने हनुमान मिश्र केँ मनौताह आ जँ गुरुजी नहि मानथि तखन की होयतैक ? तेँ ओ निश्चय कयलन्हि जे पहिने गुरुजीकेँ मनायब । नरेन्द्र सबसँ पहिने गुरुजीसँ गप कयलन्हि । पहिने तँ गुरुजी गपकेँ टरकयबाक प्रयास कयलन्हि मुदा नरेन्द्रक हठ देखि ओ अपन सहमति द' देलथिन्ह । ओ नरेन्द्र सनक कामधेनुकेँ रुष्ट नहि कर' चाहैत छलाह । नरेन्द्र खाता-बहीक माध्यमे हुनकर राजदार सेहो भ' गेल छलथिन्ह । गुरुजी कहलथिन्ह, "ठीक छै, ओ आबथु मुदा हम हुनका बजयबाक लेल नहि जयबन्हि ।"

"ई अहाँ हमरा पर छोड़ि दिअ' । हम हुनका मनायब । जखन ओ आबि जयताह, तखन अपने कहबन्हि जे, आबह, किएक रूसल छलह," नरेन्द्र कहने छलथिन्ह ।

गुरुजी कहलथिन्ह, "ठीक छै, एतेक गप हम बाजि सकैत छी ।"

आब नरेन्द्र हनुमान मिश्रजीक ओहि ठाम पहुँचलाह । ओहि ठाम पहिनेसँ जमघट लागल छलैक आ अधिकांश गुरुजीक विरोधीये छलाह, जे हनुमान मिश्रजीकेँ मक्खन लगा रहल छलाह । घटनाक चर्चा हुनमाने मिश्रजी कयलन्हि । एहिपर बड़ी काल धरि मंथन होइत रहल । अंतमे नरेन्द्र कहलथिन्ह, "श्रीमान् ! एकरा अन्यथा नहि लेब । एहिमे दुनू गोटेक गलती अछि । ओ अपन गलती स्वीकार कयलन्हि आ हमरा अहाँकेँ बजयबाक लेल पठौने छथि । आब अपने अपन गलती स्वीकार करू आ हमरा संगे विद्यालय चलू ।"

हनुमान मिश्रजी कहलथिन्ह, "हम कोना बुझबै जे ओएह अहाँकेँ पठौने छथि । की अहाँकेँ हमरासँ प्रेम नहि अछि ? की अहाँ अपने मने हमरा ओहि ठाम नहि आबि सकैत छी ?"

"अवश्य आबि सकैत छी । एक बेर नहि अनेको बेर आबि सकैत छी मुदा एखन हम अपने मनसँ नहि आयल छी । एखन हम गुरुजीक समदिया बनि क' आयल छी," नरेन्द्र कहने छलथिन्ह ।

हनुमान मिश्रजी कहलथिन्ह, "हमरा विश्वास नहि भ' रहल अछि ।

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "ओ विद्यालय गुरुजीक थिकन्हि, हमरा बाबूजीक नहि । ओ जँ नहि चाहताह तँ हम अहाँकेँ कत' ल' क' जायब । ओहो चाहैत छथि । सब विद्यार्थी हुनका एहि लेल अनुरोध कयलकन्हि । हमरो सभक इच्छा अछि जे अहाँ ओहि ठाम चली ।"

ओहि ठाम उपस्थित एकटा वृद्ध गुरुजीक विरोधमे किछु बजलाह तँ नरेन्द्र कहलथिन्ह, "श्रीमान् ! आगि जँ मिझयबाक प्रयोजन हो तँ ओहिमे जल ढारब उचित अछि, घी नहि ।"

हनुमान मिश्रजी सेहो नरेन्द्रकेँ बड़ मानैत छलथिन्ह । ओहो नरेन्द्रक अनुरोधकेँ टारि नहि सकलाह । पुनः नरेन्द्रक संग विद्यालय अयलाह । गुरुजी हुनका बजाक' आदरक संग बैसौलथिन्ह आ मास

दिनक झंझट एक क्षणमे खतम भ' गेल । एहिसँ गुरुजीक स्नेह नरेन्द्रक प्रति आर बढ़ि गेलन्हि । ओ कतेको गोटे लग नरेन्द्रक सूझ-बूझक सराहना कयलथिन्ह । संगहि नरेन्द्रकेँ पुत्रवत् मान' लगलाह ।

गुरुजीकेँ दू टा बालक छलथिन्ह, महादेव आ शंकर । महादेव मुंबइमे रहैत छलथिन्ह । ओतहि संगीतक प्रचार-प्रसार करैत अपन जीविकोपार्जन करैत छलाह । परिवार सेहो संगहि छलन्हि । दोसर पुत्र शंकरजी संगहि रहैत छलथिन्ह । एके घरमे रहितहुँ गप-सप बड़ कम होइत छलन्हि । ओ एखन अविवाहिते छलथिन्ह आ गुरुजी हुनकर विवाह करयबाक लेल आतुर छलाह मुदा ओ किनको नाक पर माँछी बैस' नहि दैत छलाह । एहिसँ गुरुजी बड़ चिन्तित रहैत छलाह ।

एक दिनक गप अछि । नरेन्द्र विद्यालयमे संगीतक साधना क' रहल छलाह । ओहि ठाम आर विद्यार्थी छलैक । तावत् गुरुजी सेहो आबि गेलाह आ सभकेँ अपन पाठ पढ़ा छुट्टी द' देलथिन्ह । केवल नरेन्द्रकेँ रोकि लेलथिन्ह आ पुछलथिन्ह, "नरेन्द्र अहाँक बुद्धि बड़ प्रखर अछि । की अहाँ मिथिलाक रहनिहार थिकहुँ ?"

नरेन्द्र उत्तर देलथिन्ह, "जी, गुरुजी ।"

गुरुजी कहलथिन्ह, "हम सभ सुनैत छलहुँ जे मिथिलाक लोक बहुत ज्ञानी आ विलक्षण प्रतिभाक होइत छथि । एखन सद्यः देखि रहल छी । एकटा हमर व्यक्तिगत काज अहाँ क' सकैत छी ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "अपने आदेश तँ करिऔक श्रीमान् ! जँ सम्भव होयतैक तँ अवश्य होयतैक ।"

गुरुजी कहलथिन्ह, "अहाँक लेल किछु असम्भव नहि अछि । अहाँ तँ तेहन-तेहन समस्याक समाधान कयल अछि, जकरा विषयमे सब सोचिओ नहि सकैत अछि । जेना कि हनुमानजीबला गप्प । हम अहाँकेँ तँ कहि देलहुँ मुदा हमरा विश्वास नहि छल जे ओ एतेक आसानीसँ मानि जायत मुदा अहाँ चुटकी बजाक' ओकर समाधान क' लेलहुँ । तेँ हमरा आब पूर्ण विश्वास भ' गेल जे अहाँ जे ठानि लेब, से अवश्य पूर्ण होयत ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "अपने कह' की चाहैत छी ?"

गुरुजी कहलथिन्ह, "अहाँ तँ जनैत होयब जे हमर दोसर बालक शंकरजी अविवाहित छथि । हम सब अथक प्रयास कयलहुँ हुनकर विवाह करयबाक लेल, मुदा ओ तैयार नहि होइत छथि । की हुनका विवाहक लेल तैयार करबामे अहाँ हमरा सभक मदति क' सकैत छी ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "श्रीमान् ! हम एहेन गारंटी तँ नहि द' सकैत छी । तखन हम प्रयास अवश्य करब ।"

गुरुजी कहलथिन्ह, "अहाँ जँ प्रयास करब तँ कार्य अवश्य होयतैक । एहन हमर विश्वास अछि ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "ठीक छै श्रीमान् ! हम किछु करैत छी'' आ ओ एहि कार्यमे लागि गेलाह । जखन ओ तहमे गेलाह, तँ पता चललनि जे शंकरजी शहरक मध्यमे संगीत विद्यालय चला रहल छलाह । ओहिमे केवल बालिका लोकनिकेँ संगीत सिखाओल जाइत छलन्हि । मुख्य विद्यालय जाहिमे गुरुजी स्वयं रहैत छलाह, से शहरक अंतमे छलैक जे बालिकाक लेल सुगम आ सुरक्षित नहि छलैक । तेँ शंकरजी एहि स्थानक चयन कयने छलाह । ओ स्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयक परिसर छलैक । तेँ ल' क' सब तरहेँ सुरक्षित छलैक । ओहिमे एकटा बंगाली बालिका 'दीपाली घोष' नृत्यक शिक्षा ग्रहण करैत छलीह । ओ विशेष काल शंकरजीक घरो पर जाइत-अबैत छलीह आ निर्विघ्न रूपेँ अपन नृत्य साधना क' रहल छलीह । अही क्रममे दीपाली शंकरजीक संग अपन प्रेमालाप बढ़ौलक वा ई बुझू जे हुनका अपना प्रेमपाशमे ओझरओलक । दीपालीकेँ शंकरजीसँ प्रेम छलैक वा नहि मुदा शंकरजी ओकरा बिना रहबाक कल्पनो नहि क' सकैत छलाह । एहि तरहेँ ओ अधिक सँ अधिक समय हिनका संग रहि क' अपन नृत्य साधना पूर्ण कयलक आ हिनका विवाहक आश्वासन द' चलि देलक । किछु दिन धरि दुनू गोटेमे पत्राचार होइत रहलन्हि । पता नहि एखन की स्थिति छन्हि ।

एतेक गप गुरुजी नरेन्द्रोकेँ नहि कहने छलथिन्ह । ओ तँ एकटा

शंकरजीक मित्र भेटि गेलथिन्ह आ ओएह सभटा गप कहलथिन्ह । एतेक गप बिना बुझने जँ नरेन्द्र किछु कर' चाहितथि तँ ओ निश्चित रूपसँ असफल भ' सकैत छलाह । बिना बिमारी बुझने ओकर उपचार सम्भव नहि । आब नरेन्द्र एकदम आश्वस्त छथि जे ओ अवश्य सफल होयताह । समय खाहे जे लगौक । एक दिन नरेन्द्र बालिका विद्यालय गेलाह आ शंकरजीक भेट कयलन्हि । पहिने तँ शंकरजी अकचकयलाह जे एहि ठाम बिना हमरा अनुमतिकेँ के आबि सकैत छथि मुदा जखन नरेन्द्र अपन परिचय देलन्हि तँ शंकरजी नरेन्द्रकेँ आदरपूर्वक बैसौलथिन्ह आ कहलथिन्ह, ''बाबूजी अहाँक विषयमे कहैत छथि । अहाँक बड़ बड़ाइ करैत छथि । से सुनि हमरो इच्छा अहाँसँ भेट करबाक होइत छल । तखन एहिठाम अयबाक प्रयोजन ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "कोनो खास प्रयोजन नहि । अपनेक विषयमे सुनैत छलहुँ, तेँ परिचयक उद्देश्यसँ आयल छी । तावत् बालिका सभ अपन अभ्यास क' क' जा चुकल छलीह । नरेन्द्र देखलन्हि जे गप-सपक लेल एहिसँ सुन्नर मौका नहि भेटत । ओ कहलथिन्ह, "शंकरजी ! एकटा गप पुछू ?"

"अवश्य पुछू," शंकरजी कहलथिन्ह ।

नरेन्द्र पुछलथिन्ह, "अपने एखन धरि विवाह किएक नहि कयल अछि ?"

शंकरजी उत्तर देलथिन्ह, "कोनो खास गप नहि छैक । एखन धरि एहि पर गम्भीरतासँ विचार नहि कयल अछि । विवाह तँ होयबे ने करतैक । कोनो भागल थोड़हि जा रहल छैक । पता नहि बाबूजी किएक अधीर भ' रहल छथि ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "ओ अधीर नहि भ' रहल छथि । ओ अपना जिबैत पितृ ऋणसँ उरिन होअय चाहैत छथि ।"

शंकरजी पुछलथिन्ह, "ई पितृऋण की भेलैक ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "हमरा लोकनिक ई दायित्व अछि जे बच्चाक विवाह समय पर करा क' ओहिसँ अगिला पीढ़ीक निर्माण कराबी । तैखन ओ पितृ ऋणसँ उरिन भ' सकैत छथि । सैह गुरुजीक चिंताक कारण भ' सकैत छन्हि ।"

शंकरजी हँसैत बजलाह, "ठीक छै, ठीक छै, हम एहि विषय पर सोचैत छी ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "शंकरजी, हम अहाँक समस्यासँ अनभिज्ञ नहि छी । हमरा सब किछु बूझल अछि । अहाँक मोनमे जे बसल अछि, से अहाँसँ विवाह नहि करत । जँ केओ अन्य रहैत तँ कइओ सकैत छल मुदा ओ बंगाली थिक आ बंगाली सबसँ बेसी स्वार्थी, कृतघ्न आ मतलबी होइत अछि । ओ अपन काज निकालबाक लेल अपन सर्वस्व दाव पर लगा दैत अछि आ काज भेलाक बाद ओकर व्यवहार एहन बुझायत जेना कहिओ भेटो भेल होअय वा नहि ।"

एतेक सुनलाक बाद शंकरजीक जेना भाङ्गक निसाँ टूटल हो, तहिना छटपटाइत बजलाह, "ई अहाँ कोना कहि सकैत छी जे ओ विवाह नहि करत । एकर की आधार अहाँक लग अछि ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "एकर आधारतँ इतिहास साक्षी अछि । अहाँ की थिकहुँ । जखन ओ राजेन्द्र बाबूक नहि भेल, जे वर्गमे प्रथम अबैत छलाह, तँ अहाँक कोना होयत ? ओ जाहि कार्यसँ अहाँक ओहि ठाम आयल छल, से पूर्ण भ' गेलैक, बस । एहिसँ बेसी ओकरा किछु नहि चाहियैक ।"

शंकरजी पुछलथिन्ह, "की अपनेकेँ बाबूजी पठौने छथि ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "जी, पठौने तँ छथि । की अपनेकेँ कोनो आपत्ति ?"

शंकरजी पुछलथिन्ह, "जी नहि, कोनो आपति नहि । हमरा दू मासक समय देल जाए । हम अपन निर्णय कहि देब ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "कोनो हर्ज नहि । हम दू मास धरि अहाँक

निर्णय केर प्रतीक्षा क' सकैत छी । अर्थात् दुर्गापूजाक बादे हम पुनः अहाँ लग आयब ।"

नरेन्द्र सब गप सँ गुरुजीकेँ अवगत करा देलथिन्ह । गुरुजी सेहो आश्वस्त भेलाह जे किछु तँ बाट पर आयल । पुनः नरेन्द्र कालीपूजाक बाद शंकरजी लग पहुँचलाह ।

शंकरजी कहलथिन्ह, "अहूँ एकदम भिड़िये गेल छी । अहाँ बिसरैत नहि छियैक की ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "औ जी, हमतँ विलम्बेसँ आयल छी, एहि लेल जे अपने कहितहुँ दुर्गापूजाक बाद कालीपूजा धरि समय चाही । तेँ हम सबटा पूजा बिताइये क' आयल छी । हमरा आशा अछि जे अहूँ किछु ने किछु निर्णय अवश्य लेने होयब ।"

शंकरजी कहलथिन्ह, "पहिने ई कहू जे कालीपूजाक गप अहाँक मनमे कोना आयल । अहाँ किछु तंत्र-मंत्र जनैत छी की ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "भाय सेहेब ! हम कोनो तंत्र-मंत्र नहि जनैत छी । ई सभ तँ हम अपना अनुभवक आधार पर कहि रहल छी । एकटा गप कहू तँ, ई काज जे एखन हम क' रहल छी, केओ दोसरो तँ क' सकैत छल । तखन गुरुजी हमरे किएक एहि लेल चयनित कयलन्हि ?"

शंकरजी कहलथिन्ह, "ओ तँ बहुतो गोटेकेँ चयनित कयलथिन्ह । बहुतो गोटे प्रयास कयलन्हि, मुदा सफल केओ नहि भेलाह ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "मुदा हम दावाक संग कहैत छी, हम अवश्य सफल होयब, खाहे समय जे लागओ । हम आइ धरि जहियासँ ज्ञान भेल अछि, कोनो काजमे विफल नहि भेल छी ।"

शंकरजी कहलथिन्ह, "अहाँकेँ अपना पर एतेक विश्वास अछि ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "जी, एहि लेल जे दोसर जे केओ अहाँ लग अयलाह से अयलाह आ गेलाह । पुनः दोबारा नहि आयल होयताह मुदा हम कतेक बेर आयब-जायब, ई हमहूँ नहि जनैत छी । हम कोनो काजकेँ

अपन काज बूझि क' करैत छी, कोनो समदिया बनिक' नहि । इएह फर्क अछि हमरा मे आ दोसरामे ।

शंकरजी कहलथिन्ह, "हमहूँ आइ धरि बहुत गोटेकेँ देखल, मुदा अहाँ सनक लगनशील आ तत्पर आइ प्रथमे देखल अछि ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "तखन देरी कोन बातक । अपन निर्णय शीघ्र सुना देल जाओ, जाहि लेल हम आयल छी । की अपने तैयार छी वा आर समय चाही...।"

शंकरजी कहलथिन्ह, "जँ हम कही जे आर समय चाही...।"

नरेन्द्र गपकेँ बिचहिमे काटैत कहलथिन्ह, "कोनो बात नहि, देखू भाय सेहेब ! ई जीवन भरिक प्रश्न अछि । एकरा तँ जीवन भरि निमाह' पड़त । एहिमे जतेक सोच-विचार करी, ओतेक नीक । हम पुनः आयब मुदा कतेक दिनक बाद, से कहि देल जाओ ।"

शंकरजी हँसैत कहलथिन्ह, "अहाँकेँ पुनः अयबाक आवश्यकता नहि पड़त । हम तैयार छी । बाबूजीकेँ कहिऔन्ह, ओ जेना चाहथि, जत' चाहथि, जहिया चाहथि, हमर विवाह करा सकैत छथि ।"

नरेन्द्र आ शंकरजी दुनू गोटे गला मिललाह आ ओही दिनसँ दुनू गोटेमे कसगर मित्रता भ' गेलन्हि । नरेन्द्र विद्यालय आबि सबटा गप सांगोपांग गुरुजीकेँ सुनौलथिन्ह । गुरुजी नरेन्द्रकेँ अपना हृदयसँ लगा लेलथिन्ह आ खूब आशीर्वाद देलथिन्ह । गुरुजीक प्रसन्नताक सीमा नहि छलन्हि । ओ एकटा विद्यार्थीकेँ एक सय टाका देलथिन्ह मधुर अनबाक लेल । सभ केओ मधुर खा' क' अपन-अपन घर गेलाह । तकर बाद गुरुजी पता नहि पहिने सँ तकने छलाह वा तुरंत ताकि लेलन्हि, ठीक पन्द्रह दिनक बाद शंकरजीक विवाह शर्मिला नामक बालिकासँ करा देलथिन्ह । शर्मिला रूप आ गुण दुनू मे अपूर्व छलीह । शंकरजी अपना गृहस्थीमे रमि गेलाह आ गुरुजीक माथ परसँ बूझू बड़का बोझ उतरि गेलन्हि । गुरुजीक एकटा भातिज जे शंकरजीक समवयस्के छलाह गुरुजीसँ पुछलथिन्ह, "कका । ई चमत्कार कोना भेलैक । शंकर तँ विवाह करबाक पक्षेमे नहि छल ।"

तखन गुरुजी सभक संग नरेन्द्रक परिचय कराबैत कहलथिन्ह, "ई चमत्कार नरेन्द्रक प्रयासे भेल ।"

एक बेर गुरुजीकेँ धनबाद आ बोकारो जयबाक छलन्हि । ओ संगीतक परीक्षक सेहो छलाह । अचानक गुरुजीक पेटमे दर्द उठलन्हि । डाक्टर जाँच कयलक तँ अलसर बहरायल जकर तुरंत आपरेशन आवश्यक छलैक । हुनका पेटक आपरेशन भेल । आब समस्या छलैक जे परीक्षा कोना होयत । परीक्षा लेबाक लेल तँ शंकरजी सेहो जा सकैत छलाह मुदा ई डर छलनि जे कतहु देखार नहि भ' जाथि । गुरुजी सोचलनि जे शंकरजीक संग नरेन्द्र सेहो जाथि तँ बात बनि सकैत अछि । गुरुजीक आदेश पर शंकरजी आ नरेन्द्र पहिने धनबाद गेलाह । ओहि ठाम केन्द्राधीक्षक दुनू प्राणी दृष्टिहीन छलाह आ हिनका दुनू गोटेकेँ खूब आगत-भागत कयलथिन्ह । केन्द्राधीक्षक सँ जखन शंकरजीक परिचय भेल तँ ओ कहलथिन्ह, "हम तँ बुझैत छलहुँ जे परीक्षक बूढ़ होयताह मुदा अहाँ तँ जुआन लागि रहल छी ।"

हिनका सभकेँ आश्चर्य भेलनि एकटा दृष्टिहीन लोकक गप सुनि क', मुदा नरेन्द्रकेँ ई गप बुझल छलन्हि जे दृष्टिहीन लोक केवल आवाजे सुनिक' सब किछु बुझि जाइत छथि । ओ तुरंत कहलथिन्ह, "की जुआन लोक परीक्षक नहि भ' सकैत छथि ? परीक्षक तँ गुण आ विद्वताक आधार पर बनाओल जाइत छथि ।"

ओ कहलथिन्ह, "से तँ सही गप अछि । ई तँ मात्र हमर अनुमान छल ।" शंकरजी नरेन्द्रक मुँह तकिते रहि गेलाह । अही लेल तँ गुरुजी नरेन्द्रकेँ पठौने छलथिन्ह । ओ जनैत छलाह, यावत् नरेन्द्रक संग रहतनि, तावत् कतहु उबान नहि भ' सकैत छथि ।

जखन ओ सब बोकारो पहुँचलाह, तँ हुनकर भेट सुबोध बाबूसँ भेलन्हि । सुबोध बाबू बोकारो सेन्ट्रल स्कूलमे आध्यापक छलाह आ गुरुजीक पुरान शिष्य सेहो । ओ पुछलथिन्ह, "मुन्नू ! अहाँ एहि ठाम ?"

शंकरजी कहलथिन्ह, "हँ, संगीतक परीक्षा लेबाक लेल आयल छी ।"

सुबोधजी कहलथिन्ह, "मुदा परीक्षक तँ आर.एन. मिश्रा अर्थात् गुरुजी छथि ?"

शंकरजी अकबका गेलाह । यावत् ओ किछु कहितथिन, नरेन्द्र बाजि उठलाह "पहिने ई कहू श्रीमान् जे अहाँकेँ हिनक नाम बुझल अछि ?"

सुबोध बाबू कहलथिन्ह, "हँ, बुझल अछि, हिनकर नाम मुन्नूजी थिकैन्हि । हम सब तँ हिनका अही नामसँ सम्बोधित करैत छलियन्हि ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "औजी, मुन्नूजी कोनो नाम भेलैक । ई तँ घरौआ नाम छन्हि । हिनकर असली नाम थिकैन्हि राजनाथ मिश्र । अपनेकेँ आर.एन. सँ भ्रम भेल । आर.एन.क मतलब रामनाथ, राजनाथ, रामनारायण, राजनारायण किछुओ भ' सकैत अछि । ओ व्यक्ति नरेन्द्रक' मुँह तकिते रहि गेलाह आ शंकरजी भीतरे-भीतर नरेन्द्रसँ खुश छलाह । जखन नरेन्द्र आ शंकरजी आपस चाइबासा पहुँचलाह, तँ सभ वृतान्त सुनलाक बाद गुरुजी प्रसन्न होइत कहलथिन्ह, "हम अहीक लेल ने नरेन्द्रकेँ अहाँक संग पठौने रहियन्हि । ओ चतुरताक संग गपसँ गप जोड़बामे माहिर छथि । शंकर संगीतमे पटु छथि तँ नरेन्द्र व्यवहार कुशलतामे । दुनू एक दोसरक पूरक छथि । दुनू मिलिक' किछु क' सकैत छथि ।"

किछु दिनक उपरान्त विश्वविद्यालयसँ संगीतक व्याख्याताक विज्ञापन बहरायल । ओहिमे आवेदक लेल संगीतमे एम.ए. आ सामान्य विषयमे कमसँ कम बी.ए. होयब आवश्यक छलैक । शंकरजी संगीतमे तँ एम.ए. छलाह मुदा सामान्यमे मात्र प्रवेशिकोत्तीर्ण । ओ ई गप नरेन्द्रसँ बजलाह । नरेन्द्र हुनका आइ.ए. आ बी.ए. करबाक लेल प्रेरित कर' लगलाह मुदा शंकरजी कहलथिन्ह, "आब एहि वयसमे की परीक्षा देब ? कोना की पढ़ब आ लोक देखत तँ की कहत ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "भाइ सेहेब ! पढ़ाइक लेल कोनो उम्र सीमा नहि अछि । कतेको लोकतँ जीवन पर्यन्त पढ़ैत रहैत छथि । अहूँसँ बेसी वयसबला लोक पढ़ैत छथि आ परीक्षा दैत छथि । अहाँ केवल मनसँ

परीक्षा देबाक लेल तैयार होउ आ फार्म भरि दिऔक । शेष कार्य हम क' लेब ।"

शंकरजीकेँ बूझल छलन्हि जे नरेन्द्र सेहो मैट्रिके पास छथि । ओ कहलथिन्ह, "जँ अहूँ संग दी, तँ हम एहि विषयमे सोचि सकैत दी ।

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "औजी ! हमरा एकर कोनो आवश्यकता नहि अछि । अहाँ जँ बी.ए. पास क' लैत छी, तँ कतहु उच्च पद पर संगीतक सेवा क' सकैत छी । अहाँ सनक संगीतक जानकार लोक जखन ऊपर पहुँचत, तखने संगीतक संग न्याय होयतैक, अन्यथा एहन-एहन लोक ऊपर छथि, जिनका सामान्य क्षेत्रमे तँ नीक ज्ञान छन्हि मुदा संगीतमे मात्र खानापुरी कयने छथि । सोचि सकैत छी, एहिसँ संगीतक कतेक उत्कर्ष होयतैक ?

एक बेर शंकरजी संगीतक परीक्षा लेबाक लेल देवघर कालेज गेल छलाह । देवघर जयबासँ पूर्व ओ नरेन्द्रकेँ संग चलबाक आग्रह कयलथिन्ह । नरेन्द्र अपन किछु असमर्थता देखौलन्हि मुदा शंकरजी नहि मानलथिन्ह । नरेन्द्र सेहो एकटा शर्त्त राखि देलथिन्ह । शर्त्तक मोताबिक परीक्षा शंकरजी लेताह आ मूल्यांकन नरेन्द्र करताह । शंकरजी शर्त्त मानि लेलथिन्ह । दुनू गोटे देवघर गेलाह । परीक्षाक बाद मूल्यांकनक बारी आयल । नरेन्द्र केन्द्राधीक्षकसँ कहलथिन्ह, ''एहिमे अहाँक कोनो खास लोक होथि तँ हुनकर नाम कहल जाओ आ इहो कहल जाओ जे हुनका कतेक नम्बर चाहियनि ।" केन्द्राधीक्षक खुश होइत चारि-पाँच गोटेक नाम कहलथिन्ह आ हुनका लोकनिकेँ पैसठिसँ पचहत्तरि नम्बर दिऔलन्हि । तकर बाद नरेन्द्र एकटा विद्यार्थीकेँ अस्सी आ दोसरकेँ पचासी नम्बर देलथिन्ह । ताहि पर केन्द्राधीक्षक भड़कि उठलाह आ शंकरजीसँ शिकायत कयलथिन्ह । शंकरजी हँसैत कहलथिन्ह, "अहाँक अनुसार मूल्यांकन कयलासँ बिना पैरवीबलाक संग अन्याय नहि होयतैक की ? नरेन्द्र जकरा पचासी नम्बर देलथिन्ह ओ उचितमे ओहि अनुरूप नहि अछि, मुदा अपने जकरा पचहत्तरि दियाओल, ओ तँ पचासो जोगरक नहि अछि । नरेन्द्र शंकरजीक सोझाँ एहि घटनाक स्मरण कराबैत हुनका परीक्षा देबाक लेल आग्रह कयलथिन्ह ।

शंकरजी कहलथिन्ह, "हमरा एसकर लाज होइत अछि । जँ अहूँ संग दी तँ हम सोचि सकैत छी ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "ठीक छै, जँ अहाँक इएह इच्छा अछि, तँ हम अहाँक संग देबाक लेल तैयार छी ।" दुनू गोटे तैयारी मे लागि गेलाह । किछु गेस पेपर ल' क' दुनू गोटे पढ़' लगलाह । परीक्षा देबा काल नरेन्द्र देखलनि जे एकटा परीक्षार्थी जिनकर सभटा केश पाकल छलन्हि, सेहो प्रेमसँ परीक्षा द' रहल छलाह । नरेन्द्र ई दृश्य शंकरजीकेँ देखौलन्हि । शंकरजी ओकरा देखि हतप्रभ रहि गेलाह । सम्भवतः ओहो अपन प्रमोशनक लेल उपाधि अर्जित करबामे लागल छलाह । परीक्षा खतम भेल । परिणाम बहरायल । शंकरजी आ नरेन्द्र दुनू गोटे द्वितीय श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाह । तकर बाद बी.ए.क परीक्षामे लागि गेलाह पुनः बी.ए.क परीक्षा शुरू भेल । बी.ए.क परीक्षामे एकटा विद्यार्थी नकल क' रहल छल । परीक्षक ओकर कापी आर किताब दुनू छीनि लेलथिन्ह । ओ विद्यार्थी टुक-टुक ताकि रहल छलाह आ आँखिसँ भकर-भकर नोर चूबि रहल छलन्हि । हुनको संग समस्या छलन्हि । ओहो अधवयसू छलाह आ केवल डिग्रीक लेल परीक्षा द' रहल छलाह, मुदा तैयारी तँ किछु छलन्हिये नहि । ओ तँ किताबेक भरोसे आयल छलाह मुदा बिना कापीक कथी पर लिखताह आ बिना किताबे की लिखताह । हुनकर स्थिति देखि नरेन्द्र आ शंकरजीकेँ दया आबि गेलन्हि । ओ परीक्षक महोदयसँ कहलथिन्ह, "श्रीमान् ! ई विद्यार्थी नहि, विद्यार्थीक बाप थिकाह । कनेक हिनका वयस पर तँ ख्याल करिऔन्ह ।"

एहि गप पर परीक्षक सेहो पिघलि गेलाह आ कहलथिन्ह, "की कहैत छी ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "श्रीमान् ! हुनकर सामग्री तँ द' दिऔन्ह । एकटा घर डायनो बकसि दैत छैक ।" परीक्षक नरेन्द्र आ शंकरजीक गप करबाक ढंगसँ बड़ प्रभावित भेलाह आ हँसैत-हँसैत किताब आ कापी ओहि विद्यार्थीकेँ द' देलथिन्ह । ओ विद्यार्थी बादमे नरेन्द्र आ शंकरजीक अभिन्न मित्र बनि गेलाह । ओहो द्वितीय श्रेणीसँ बी.ए.पास कयलन्हि ।

गुरुजी नरेन्द्रक व्यवहारसँ एतेक प्रसन्न भेलाह जे हुनकासँ विद्यालयक फीसो नहि लैत छलाह । एक दिन गुरुजी स्वयं नरेन्द्रसँ पुछलथिन्ह, "नरेन्द्र ! अहाँ विद्यालयमे रहबाक अनुमति चाहैत छलहुँ । की अहाँ विद्यालयमे रह' चाहैत छी ?"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "श्रीमान् ! आब तँ हम डेरा ल' क' सपरिवार रहि रहल छी । ओहि समयमे एसकरे रहैत छलहुँ, तेँ आग्रह कयने छलहुँ ।"

नरेन्द्र गुरुजीक सानिध्यमे प्रयाग संगीत समिति इलाहाबादसँ आयोजित संगीत परीक्षामे "संगीत प्रभाकर" कयलन्हि मुदा समयाभाव आ परिवारिक बोझक कारण ओतेक अभ्यास नहि क' सकलाह । तेँ प्रस्तुतिमे निपुण नहि भेलाह । संगीतक स्वर तँ अभ्यासेसँ निखरैत छैक । संगीतक प्रभावे मैथिलीमे छोट-मोट रचना कर' लगलाह आ बादमे कविक रूपमे विख्यात भेलाह । नरेन्द्रक गीत आकाशवाणीसँ सेहो प्रसारित होइत रहल । दस वर्षक बाद पुर्नपरीक्षणमे हुनका अनुतीर्ण क' देल गेलन्हि । ओ आकाशवाणीक अधिकारीसँ रुष्ट आ क्षुब्ध छलाह । एहि लेल जे हुनको सँ कमजोर स्तरक गायककेँ पास क' देल गेल रहैक । आकाशवाणीयेमे एकटा अधिकारी छलाह शुक्लाजी । ओ नरेन्द्रक आचार-विचारसँ बड़ प्रभावित छलाह । एतेक गुणतँ नरेन्द्रमे अवश्य छलन्हि जे ओ अपन वाक् चातुर्यसँ ककरो मोहित क' सकैत छलाह । शुक्लाजी नरेन्द्रकेँ कविता रचनाक लेल प्रेरित कयलथिन्ह आ कहलथिन्ह, "अहाँ जतेक कविताक रचना करब, हम ओकर प्रसारण आकाशवाणी सँ करायब ।" नरेन्द्र प्रयासमे लागि गेलाह । ओ कहुना क' तीनटा कविताक रचना कयलन्हि, जेकर प्रसारण आकाशवाणीसँ भेल, मुदा अगिला प्रसारणक लेल नरेन्द्र शुक्लाजी लग हाथ जोड़ि लेलथिन्ह । ''श्रीमान् ! हम कोनो काज क' सकैत छी, ई छोड़िक' । ई हमरा लेल अत्यन्त कठिन बुझना जाइछ,'' नरेन्द्र कहने छलथिन्ह ।

सहीमे ओहि तीन रचनाक बाद नरेन्द्रक कलम स्थिर भ' गेल छलन्हि । पुनः वर्ष 1991 मे मायक मरणोपरान्त अंतःकरणक दर्द कलमक

स्याहीसँ प्रकट भेलन्हि । से आइ धरि निरंतर चलि रहल छन्हि । ओ चाइबासाक सुदूर क्षेत्रमे कविताक माध्यमे मैथिलीक झंडा फहरौलन्हि । सभ भाय आ धिया-पूताकेँ ओतहि राखि पढ़ौलन्हि-लिखौलन्हि । सम्भवतः एतेक पैघ उपलब्धि दरभंगामे रहि नहि होइतन्हि । विभिन्न प्रकारक क्रीड़ाक सेहो आनन्द उठौलन्हि आ तीस वर्षक अनवरत प्रयाससँ मिथिला-मैथिलीक संगठन ठाढ़ कयलन्हि । जाहि ठाम प्रत्येक वर्ष विद्यापति स्मृति-पर्व समारोहक आयोजन होइत रहल । तकर मंच संचालन नौ वर्ष धरि नरेन्द्रजी कयलन्हि । गाममे सेहो नवाह रामायण, दुर्गा पूजा वा काली पूजामे नरेन्द्रक सहभागिता सबसँ बेसी रहैत छन्हि । नरेन्द्र जखन पढ़ैत छलाह तँ कतहु नवाह रामायण देखबाक सौभाग्य भेटल छलन्हि । हुनको मनमे ई भाव जागृत भेल जे कदाचित् हमरो गाममे नवाह रामायण होइत । ओ गाममे कतेको ठाम एकर चर्चा कयलन्हि । सभ केओ नरेन्द्रक गपक समर्थन कयलन्हि मुदा एहि लेल जखन बैसारक आयोजन भेल तँ सभ केओ गायब । केओ गोटे बैसारमे नहि अयलाह । सभ कोनो ने कोनो बहन्ना बना लेलन्हि । हलाँकि एहि पक्षमे सभ केओ छलाह जे गाममे नवाह-रामायण होयबाक चाही मुदा चन्दाक नामे सब सुटुकि जाइत छलाह । किछु दिनक उपरान्त नरेन्द्रक बदली दरभंगा भेलन्हि । ओ रवि दिनक' गामेमे रहैत छलाह । अही क्रममे ओ गामक एकटा वृद्धसँ संपर्क कयलन्हि, जे पूजा-पाठमे विशेष रमल रहैत छलाह । जखन नरेन्द्र हुनका सोझाँ अपन प्रस्ताव रखलनि, तँ ओ बड़ आह्लादित होइत नरेन्द्रकेँ नवाह रामायणक प्रतिफल सुनाब' लगलथिन्ह आ कहलथिन्ह, "पहिल गप रामक विषयमे ओकरे लग चर्चा करबाक चाही जे एकर अधिकारी होथि वा जिनका ई नीक लगैत होन्हि । एहन व्यक्ति जे एकर मखौल उड़बथि, कखनो हुनका लग एहन चर्चा नहि करबाक चाही । अहाँक मोनमे जँ एहन भाव आयल अछि, तँ अवश्य ई प्रभुक कृपा थीक । नवाह रामायण अवश्य होयतैक ।"

"होयतैक कोना, से ने कहल जाओ" नरेन्द्र पुछने छलथिन्ह ?

ओ कहलथिन्ह, "जेना करबैक, तेना होयतैक ।"

नरेन्द्र पुनः पुछलथिन्ह, "गामक लोक तँ चंदा देबाक पक्षमे नहि छथि ?"

ओ कहलथिन्ह, "जँ अहाँ पाठ कर' चाहैत छी, तखन तँ कोनो चंदाक आवश्यकता नहि छैक मुदा जँ आडम्बर करी, तखन तँ चंदा चाही। तेँ पहिने अहीँ कहूँ जे की कर' चाहैत छी।"

एहि तरहेँ ओहि वृद्धक सानिध्यमे सफलता पूर्वक गाममे नवाह रामायण बिना कोनो चंदा-चुटकीक सम्पन्न भेल आ तकर श्रेय नरेन्द्रकेँ भेटलन्हि। गामक लोकक उत्साह बढ़ल आ जत' तत' दुर्गा पूजाक चर्चा शुरू भ' गेल। गामक स्त्रीगण दुर्गा पूजा देखबाक लेल आन गाम जाइत छलीह। ओ लोकनि अपनाकेँ असुरक्षित महसूस करैत छलीह। कतेको गोटे नरेन्द्रकेँ सेहो कहने छलथिन्ह। हुनका सभकेँ एहेन विश्वास छलन्हि, जे नरेन्द्र जँ चाहि लेताह तँ अवश्य गाममे दुर्गा पूजा भ' सकैत अछि। नरेन्द्र अपना मनमे संकल्प कयलन्हि जे जल्दीये दुर्गा पूजा सेहो शुरू करब। नरेन्द्र ओहि प्रयासमे लागि गेलाह। किछु दिनक पश्चात् हुनकर मित्र मंडली बाबा बैद्यनाथक पूजा करबाक लेल काँवर ल' क' देवघर जा रहल छलाह। ओ लोकनि नरेन्द्रसँ सेहो चलबाक आग्रह कयलन्हि। नरेन्द्र किछु अपन असमर्थता देखौलथिन्ह। मित्र कहलथिन्ह, "की अहाँ एहि समाजसँ बाहर छी ? की अहाँपर हमरा सभक अधिकार नहि अछि ?"

"अवश्य अछि", नरेन्द्र कहने छलथिन्ह।

मित्र कहलथिन्ह, "तखन चलू, बाबाक पूजा क' अबैत छी।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "जँ हमरा पर अहाँ सभक अधिकार अछि, तँ हमरो ने अहाँ सभपर अधिकार होयबाक चाही।"

मित्र कहलथिन्ह, "अहाँ की कह' चाहैत छी स्पष्ट कहू।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "हम अही शर्त्त पर देवघर जायब जे ओहि ठामसँ अयलाक बाद सभ केओ मिलिक' गाममे दुर्गा पूजाक आयोजन करी।" सभ केओ मानि गेलाह। देवघरसँ अयलाक बाद दुर्गापूजाक

गप-सप शुरू भेल, मुदा किछु लोक ओकरा ततेक ने भयाबह बना देलन्हि, जे गप ओही ठामक, ओही ठाम रहि गेल। अधिकांश लोक नरेन्द्रक समर्थन करैत छलाह मुदा सब पर्दाक पाछूये सँ। बैसारमे ठाढ़ भेनिहार केओ नहि। तीन चारि वर्ष अहिना चलैत रहल मुदा आगाँ बढ़बाक लेल केओ तैयार नहि। सामान्यतः लोक कोनो काजक प्रयास दू-चारि बेर कयलाक बाद थकथकाक' ओकरा छोड़ि दैत छथि, मुदा नरेन्द्र ओकर विपरीत छलाह। ओ अपन हारक समीक्षा करैत छलाह आ पुनः दुगूना उत्साहसँ ओकरा शुरू करैत छलाह। नरेन्द्र अपन मित्र सुमनकेँ कहलथिन्ह, "सुमनजी ! तोँ तँ गामे सँ आफीस अबैत-जाइत छह। तोँ मूर्ति बनबाक' रखिह'। एहि बेर पूजा अवश्य होयतैक।"

सैह भेल, सुमनजी अपना खर्चसँ मूर्ति बनबौलन्हि, आ पूजा शुरू भेल। षष्ठीक दिन बेलनोती' कयल गेल आ ओहि रातिमे बेलक गाछ तर दू-चारि गोटे के रहब आवश्यक छलैक। मुदा ओहि ठाम केओ रहबाक लेल तैयारे नहि। कारण बेलक गाछ श्मसानमे छलैक, जाहि ठाम दिनहुमे डर होइत छलैक। दुर्गा पूजामे अपना दलानो पर केओ नहि सुतैत छलैक। सभ केओ ई दस राति घरेमे सुतैत छलाह। तखन बेलक गाछ तर कोना सुतताह। नरेन्द्र पचीस गोटाक दल तैयार कयलन्हि आ प्रकाशक इन्तजाम कयल गेल। तखन सभ गोटे ओहि ठाम राति भरि कीर्त्तन-जागरण क' भोर कयलन्हि। सभ गाममे एक-आधटा दबंग लोक होइत छथि, जे गामक धारा मोड़बामे निपुण होइत छथि। हुनका संग दू-चारिटा चमचा सेहो रहैत अछि, जे हुनक गुणक बखान करैत रहैत छथि। गामक लोक हुनका दबंग बुझैत अछि मुदा नरेन्द्रक लेल एहन लोक दुष्टक श्रेणीमे अबैत छथि, जे गाममे कोनो नीक कार्य नहि होअय देब' चाहैत छथि। ओ नहि चाहैत छथि जे हमरासँ ककरो कद पैघ होअय। हलाँकि एहि पूजामे अधिकांश लोक नरेन्द्रक संग छलाह मुदा किछु विरोधी सेहो छलाह, जे षडयंत्र क' एक अन्य सम्प्रदायक लोककेँ भड़कौलन्हि। ओ सभ जुलूसक दौरान झगड़ा करबाक लेल पूर्ण रूपसँ तैयार छलैक। ओ सभ प्रतीक्षामे छलैक, जे जखन मूर्ति ल' क' आओत, तखन अचानक

प्रहार कयल जयतैक । आयोजक लोकनि एहि षड्यंत्रसँ एकदम अनभिज्ञ छलाह मुदा माँ भगवतीक असीम कृपा छलन्हि । जाहि गाड़ी पर मूर्ति राखल छलैक, तकर दुनू टायरक हवा बहरा गेलैक । सभ केओ दोसर गाड़ीक इन्तजाम लेल सोचि रहल छलाह, मुदा नरेन्द्रक बुझौलाक बाद गामक लोककेँ जुलूसक विचार त्याग' पड़लन्हि । सीधे मूर्तिकेँ उठाक' जल-प्रवाह क' देल गेलैक । बादमे सभ गोटेकेँ ओहि षड्यंत्रक विषयमे जानकारी भेटलन्हि । सभ केओ एहि पर संतोष व्यक्त कयलन्हि जे माँ भगवतीक कृपासँ आ नरेन्द्रक सूझ-बूझ सँ बड़ पैघ दुर्घटनासँ बाँचि गेलहुँ ।

किछु दिनक बाद कालीपूजाक चर्चा शुरू भेल । गाममे एकटा नेताजी छलाह जे एकर पुरजोर विरोध कयलन्हि, मुदा नरेन्द्रक लेल विरोध आर उत्साह बढ़बैत छलन्हि । पहिने तँ मात्र चर्चामे छलैक जे पूजा होअय वा नहि मुदा नेताजीक विरोधक बाद ई तय भ' गेल जे हर स्थितिमे पूजा होयबे करत । नरेन्द्र कालीपूजा करैत ओहि आयोजनक मुख्य वक्ता ओही नेताजीकेँ बना देलथिन्ह । नेताजी जे एकर विरोधी छलाह, से भाषणक क्रममे स्वीकार कयलन्हि आ कहलथिन्ह, "हम एकर विरोध करैत छलहुँ । हमरा ई विश्वास नहि छल जे तुरंत दुर्गा पूजाक बाद काली पूजामे लोक चंदा द' सकत । तेँ हम नरेन्द्रके मना करैत छलियन्हि मुदा नरेन्द्र आ हुनकर पुरा टीमकेँ हम बधाइ दैत छियैन्हि जे ओ लोकनि ककरोसँ चंदा चुटकी नहि क' एक नया प्रयोग लॉटरी सिस्टमसँ कालीपूजा कयलन्हि आ गामकेँ पुनः भक्तिमय वातावरणसँ सराबोर क' देलन्हि ।

नरेन्द्रमे एकटा विशेष गुण छलन्हि । ओ जत' जाइत छलाह, अपन परिवार बना लैत छलाह । ओ कोनहु परिस्थितिमे अपन धैर्य नहि छोड़ैत छलाह । ओ कोनो काजक लेल एसकरे विदा भ' जाइत छलाह । हुनकर काज देखि आर लोक स्वतः संग लागि जाइत छलथिन्ह ।

एक बेर नरेन्द्रक एकटा सम्बन्धी नौकरी ज्वाइन करबाक लेल हुनके आफीसमे गेलाह । नरेन्द्रक डेरामे ओतेक जगह नहि छलन्हि जे ओ ओहि सम्बन्धीकेँ रखितथिन । ओ अपन एकटा मित्र सँ आग्रह कयलथिन्ह । मित्र हुनका अपना संगे रखबाक लेल तैयार भ' गेलथिन्ह । दू दिनक बाद

ओ मित्र अयलाह आ नरेन्द्रसँ कहलथिन्ह, "अहाँ अपना सम्बन्धी के अपना ओहि ठाम वा कतहु अन्यत्र रखियन्हु । हम हुनका एक क्षण नहि राखि सकैत छियैन्हि ।"

नरेन्द्र पुछलथिन्ह, "औजी, की भेल अछि, से ने कहू ? एना किएक सातम आकाश पर चढ़ल आयल छी ?"

"हम ओ सब नहि बुझैत छियैक । अहाँ हुनकर दोसर कोनो इन्तजाम करिऔन्ह । ओ ठीक लोक नहि छथि", मित्र कहलथिन्ह ।

नरेन्द्र पुनः पुछलथिन्ह, "की कहलनि, से नहि कहब ?"

मित्र कहलथिन्ह, "हमरा तँ किछु नहि कहलनि, मुदा अहाँक विषयमे बहुत किछु कहैत छलाह । जखन ओ अहाँक सम्बन्धी भ' क' अहाँक अदखोइ-बदखोइ क' सकैत छथि, तखन काल्हि हमर नहि करताह, तकर कोन गारंटी ।"

नरेन्द्र पुनः पुछलथिन्ह, "की शिकायत करैत छलाह ? कनेक हमहूँ तँ बुझितियैक ?"

मित्र कहलथिन्ह, "ओ कहैत छलाह, जे नरेन्द्र पढ़बामे बड़ भुसकौल छलाह । स्कूलमे पछिला बेंच पर बैसैत छलाह आ एहि ठाम बड़का नेता बनि गेल छथि । स्कूलमे तँ ककरो सँ बजितहु नहि छलाह । एकेटा अंगा पहिरि क' गुजर करैत छलाह ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "ई कोनो शिकायत नहि भेल । ओ तँ एकदम सत्य कहलनि । जाहि वर्ग कमरामे बारहटा बेंच आ साठिटा विद्यार्थी रहतैक ओहिमे केओ ने केओ आगू आ केओ ने केओ तँ पाछाँ बैसबे करतैक । तेँ तेज आ भुसकौलक निर्धारण अगिला-पछिला बेंचसँ नहि भ' सकैत अछि । ओना हम सही मे भुसकौल छलहुँ आ पछिले बेंच पर बैसैत छलहुँ । नेता ओहने लोक होइत छैक मुदा ओ तँ आगू बैसैत छलाह आ सही मे तेज विद्यार्थी मे गिनती होइत छलन्हि । हुनका तँ डॉक्टर वा इनजिनियर होयबाक चाहियनि । ओ कोना किरानीक नौकरी करैत छथि ।

अवनति तँ हुनकर भेलन्हि, हमर नहि । हम तँ अपना जगह पर ठीके छी । ओ एकटा अंगाक गप कयलन्हि, अहाँ सभ जनैत छी जे हम अहू ठाम एकेटा अंगा ल' क' आयल छलहुँ, कारण जे होउक ।"

मित्र कहलथिन्ह, "से तँ ठीक छै । अहाँ तँ अपने ततेक साधारण ढंग सँ रहैत छी, जकर वर्णन नहि । लाइ-लपटमे नहि रहैत छी तेँ ने, नहि तँ ओ अपना भरि अहाँक पोल खोलबामे कोनो कसरि नहि छोड़लनि ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "जकरा पोल रहतैक, ओकरा ने खोलल जयतैक । एहि ठाम तँ कोनो पोले नहि छैक । हम तँ अपने कहैत छी, हम मैट्रिके पास छी आ सेहो थर्ड डीवीजनसँ, मुदा अहीँ सभ विश्वास नहि करैत छलहुँ । आब विश्वास भ' ने गेल ।"

मित्र कहलथिन्ह, "से तँ ठीक अछि, मुदा लोकमे किछु ने किछु कमजोरी अवश्य होइत छैक, जाहि पर ओ झाँपन दैत अछि । तेँ हुनकर ई आचरण हमरा नीक नहि लागल ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "की करबैक, ई सब बाजि ओ अपन परिचय देलनि अछि । ओ ई नहि सोचैत छथि, जे एखन हम वा अहाँ जँ आश्रय नहि दितियनि, तँ ओ कत' जइतथि । तखन तँ कहबीओ छैक "कलियुगक उपकार हत्या बरोबरि ।"

मित्र कहलथिन्ह, "आब अहाँ कहैत छी तँ हम राख'क लेल विवश छी, अन्यथा ओ रखबाक जोगरक लोक नहि छथि । ओ जाहि थारीमे खाइत छथि, ओहीमे भूर करैत छथि ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "सभक अपन अलग-अलग स्वभाव होइत छैक । कहबीओ छैक जे 'नेचर आ सिगनेचर' नहि बदलैत छैक । जँ सब एके रंगक भ' जयतैक तँ दुनियाँ चलतैक ?"

मित्र कहलथिन्ह, "अहाँ तँ भोलानाथ थिकहुँ । उपकारी आ अपकारी दुनूकेँ सम भावसँ देखैत छियैक । अहाँक लेल चोर वा इमानदारमे कोनो फर्क नहि ।"

नरेन्द्र कहलथिन्ह, "एहन गप नहि छैक । तखन तँ सब किछु देख' पड़ैत छैक ।"

मित्र चल गेलाह आ नरेन्द्र अपना काजमे लागि गेलाह । ओहुना नरेन्द्रक स्वभाव आ मित्रक स्वभाव विपरीत छलन्हि । कोनो विषय पर दुनू गोटेमे खूब तर्क-वितर्क होइत छलन्हि, खूब बहसबाजी होइत छलन्हि । से घंटो चलैत छलैक । केओ ककरोसँ हार मान'बला नहि । ओहि ठामक प्रत्यक्षदर्शीकेँ बुझाइत छलैक जे दुनू गोटेमे झगड़ा भ' रहल छैक मुदा वस्तु स्थिति ई छलैक जे दुनू गोटे एक दोसरकेँ सहोदरोसँ बेसी स्नेह करैत छलाह । इएह तँ नरेन्द्रक विशेषता छलन्हि । अपन मातृभाषा मैथिलीक लेल नरेन्द्र समर्पित लोक छलाह । मैथिली कार्यक्रम प्रस्तुत करबाक लेल वा सुनबाक लेल ओ कतेको दूर चल जाइत छलाह । अही क्रममे मैथिलीक उन्नयन लेल एकटा समितिक गठन कयलन्हि । जकर नाम छलैक मिथिला परिषद । ओहि बैसारमे नरेन्द्र वर्षो एसकरे रहलाह आ दोसर ओ रहैत छलथिन्ह जिनका ओहि ठाम बैसारक आयोजन होइत छलैक । मात्र दू गोटेक उपस्थिति पर किछु गोटे एकर उपहासो करैत छलथिन्ह मुदा नरेन्द्र पर एहि उपहासक कोनो असरि नहि भेलन्हि । उनटे ओहिसँ हुनका किछु करबाक प्रेरणा भेटैत छलन्हि । परिषद्क बैसार राजनारायणजीक ओहिठाम सभ रविक' होइत छलैक । राजनाराणजीक परिवारमे एकटा बालिका छलीह, जिनकर नाम छलन्हि, "रूबी" । रूबी नरेन्द्रकेँ चचा सेहो कहैत छलीह आ नरेन्द्रे सँ संगीतक शिक्षा सेहो पओने छलीह । रूबी बैसारक विफलता पर कटाक्ष करबामे नहि चुकैत छलीह । हुनकर शब्द-बाण नरेन्द्रक हृदयकेँ बेधि क' राखि दैत छलन्हि मुदा नरेन्द्र ओकरा प्रेरणाक रूपमे लैत छलाह । रूबी जतेक कटाक्ष करैत छलीह, नरेन्द्रक गतिविधि ओतेक तीव्र भ' जाइत छलन्हि, मुदा भीतरे-भीतर ओकरा केओ देखि नहि पबैत छलैक । ओ सतत प्रभावशाली व्यक्तिक खोजमे लागल रहैत छलाह । जे केओ नव मैथिल पदाधिकारी अबैत छलाह, नरेन्द्र अवश्य ओकर भेट करैत छलथिन्ह । ओ अपना प्रयत्नमे लगले रहलाह । ओ हिम्मत नहि हारलनि आ एक दिन सफल भेलाह ।

विद्यापति समारोह भेल आ समितिक लोकक उत्साह बढ़लैक । उपहास केनिहारक मुँह अपना सनक भेलन्हि । सर्वत्र नरेन्द्रक प्रशंसा होअय लागल आ नरेन्द्रक खुशीक सीमा नहि रहलन्हि । आब प्रत्येक वर्ष खूब नीक जकाँ विद्यापति समारोह भ' रहल अछि । जाहि संस्थामे वर्षो धरि नरेन्द्र दू टा सदस्यकेँ ल' क' छलाह, आइ ओकर जीवंत सदस्य करीब तीन सय गोटे छथि । कतेको मैथिलीक विद्वान्, डाक्टर, विधिज्ञ, समाजसेवी आ प्रशासनिक अधिकारी ओहि मंचसँ सम्मानित कयल गेलाह ।

एक बेर खड़गपुर सँ विद्यापति समारोहक निमंत्रण अयलैक । आयोजक परिचिते लोक छलथिन्ह आ समारोहो हुनके लोकनिक चरियेला पर कयल गेल छलैक । परिषदक अध्यक्ष ओही गामक छलथिन्ह आ हुनको इच्छा छलन्हि जे नरेन्द्र दू-चारि गोटेसँ अवश्य जाथि । नरेन्द्र आ हुनकर चारिटा कलाकार मित्र ओहि ठाम गेलाह । ओहि ठाम हिनका लोकनिक भव्य स्वागत भेलन्हि । भोजनक विन्यास सेहो लाजबाब । दही तँ एतेक सुन्नर छलैक, जे हाथसँ छोड़ौने नहि छुटैत छलैक । नरेन्द्र अपना जीवनमे एहन दही नहि खयने छलाह । कार्यक्रम भरि राति चललैक । लोक उठबाक नामे नहि लैत छलैक । कार्यक्रमक खूब प्रशंसा भेल मुदा आयोजक नरेन्द्रकेँ बटखर्चा नहि द' सकलाह । नरेन्द्रक एकटा मित्र बाटक खर्च उठौलनि आ नरेन्द्र हुनका आश्वस्त कयलथिन्ह जे ई राशि अहाँकेँ समितिसँ भेटि जायत । हमरो समिति तँ मैथिलीयेक उन्नयन लेल ने काज करैत अछि । एकर प्रस्ताव जखन सचिव लगमे गेल तँ ओ भड़कि उठलाह । ओ कहलथिन्ह, "एना जँ समिति उल-जुलूल खर्च करत, तखन तँ समितिक भट्ठे बैसि जायत ।" एहि पर नरेन्द्रकेँ नहि रहल गेलन्हि । ओ कहलथिन्ह," जखन ई खर्चा मैथिलीक विकासेक लेल भेलैक अछि, तँ एकर भुगतान समिति किएक नहि करत ?"

सचिव कहलथिन्ह, "एहि लेल समितिक पूर्व अनुमति आवश्यक छलैक । एना तँ सभ नियमे बिगड़ि जायत ।" नरेन्द्र कहलथिन्ह, "नियम हमहूँ सब बुझैत छियैक । चन्दा ओसूलिक' हमहीँ सब अनैत छी आ हमरहि सबकेँ नियम पढ़ाओल जाइत अछि । एहि राशिक भुगतान तँ

होयबे करतैक चाहे जेना होअय आ एहि पर सचिवक अनुमोदन सेहो होयतैक, चाहे जे करथि ।" किछु दिनक बाद चुनाव भेलैक । ओ सचिव हटाओल गेलाह आ दोसर जे सचिव भेलाह से सभसँ पहिने ओही विपत्रक अनुमोदन कयलन्हि । हलाँकि पूर्व सचिव सेहो नरेन्द्रकेँ बड़ मानैत छलथिन्ह आ नरेन्द्र सेहो हुनकर बड़ इज्जति करैत छलथिन्ह, मुदा मैथिलीक अपमान वा ओकरा प्रगतिमे बाधा नरेन्द्रकेँ सहन नहि होइत छलन्हि ।

एक बेर कोनो कार्यक्रममे बिहारक पूर्व मुख्यमंत्री गेलाह । ओ मैथिल छलाह, तेँ आयोजक लोकनि हुनका स्वागतमे मैथिली गीत गओनिहारि एकटा बंगाली बालिकाकेँ बजौने छलथिन्ह । मंच संचालक स्वागत गीत गयबाक लेल उद्घोषणा कयलन्हि । ओ बालिका मंच धरि पहुँचि गेलि । तावत् ओ पूर्व मुख्यमंत्री स्वागत गीतकेँ रोकि अपन भाषण शुरू क' देलन्हि । एहिसँ नरेन्द्रकेँ बड़ दुःख भेलन्हि आ ओ ओहि कार्यक्रमसँ आपस आबि गेलाह । पुनः कहिओ हुनका आयोजनमे नहि गेलाह । नरेन्द्रकेँ अपना दूटा बेटी आ एकटा बेटा छन्हि । बड़की बेटीक विवाह खूब पैघ घरमे भेलन्हि मुदा आजुक युगमे जमीनबलाक कोनो पूछ नहि अछि । जकरा कोनो बाहरी आमदनी नहि छैक, से भौतिक सुखसँ वंचित रहि जाइत अछि, आ ने ओकर बर-बिमारीक इलाज समुचित ढ़ंगसँ समय पर होइत छैक । सएह ओकरो सभक संग छैक आ जमाय बाबू छथिन ललबबुआ । ओहि बेटीसँ नरेन्द्रकेँ दू टा दौहित्र छन्हि । ओकरे पर आशा छन्हि जे किछु करए तँ करए । दोसर बेटी मध्यम वर्गीय परिवारमे मुदा जमाय सब तरहेँ नीक आ पढ़ल-लिखल । कमाइत सेहो नीक छथिन आ आचारो-विचार बड़ दीव । ओ बड़ नीक जकाँ अपन परिवारक भरण-पोषण क' रहल छथिन्ह । बालक सेहो दिल्लीमे कोनो कम्पनीमे कार्यरत छथिन्ह । ओहो अपन जीवन निर्वाह क' रहल छथिन्ह मुदा नरेन्द्रकेँ किछु दैत नहि छथिन आ नरेन्द्रकेँ किछु चाहबो नहि करियन्हि । हुनका अपने जीवन निर्वाहक लेल पर्याप्त पेंशन भेटैत छन्हि । नरेन्द्रक अन्य भाय सभ सेहो पढ़ि-लिखिक' प्राइवेट नौकरी करैत छथिन्ह आ

अपना ढ़ंगसँ जीवन निर्वाह क' रहल छथिन्ह । सभ भाय-बहिनमे बड़ मेधा । पाँचो भाय पाँच शहरमे छथिन्ह मुदा जखन कोनो काज-तिहारमे सभ केओ जुटैत छथिन्ह, तखनतँ कोनो पिकनिकबला दृश्य लगैत छन्हि । पाँचटा कोठली आ पचपनटा रहनिहार । केओ घरमे, तँ केओ आंगनमे । केओ ओसारा पर तँ केओ छतपर आ केओ दलानपर । सभ एक-दोसरासँ हिलल-मिलल । ककरो ककरोसँ परहेज नहि । सभ स्वचालित मशीन जकाँ कार्यरत । तखन नरेन्द्रक परिवार "परिवार" सनक लगैत छन्हि ।

●

ग्राम उफरदाहाक वंशावली

चौधरी श्रीपाल राय

(मूल- वेलौचे बहेड़ा, गोत्र- भारद्वाज)

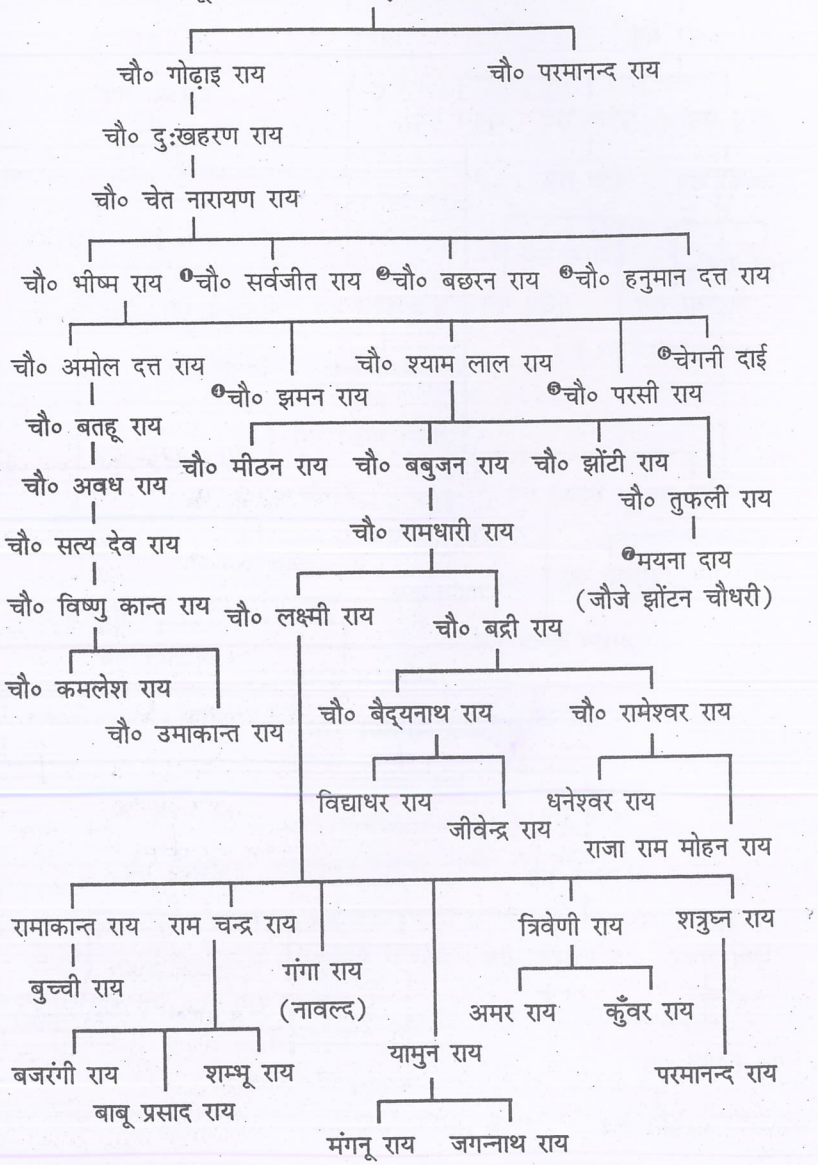

चौ० झमन राय

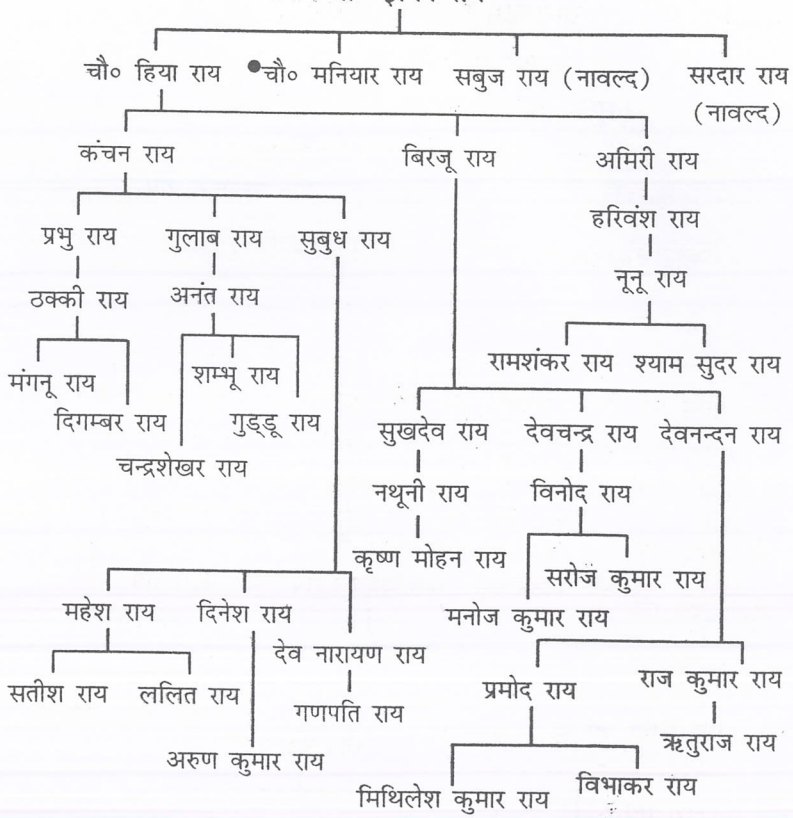

चौ० मनियार राय

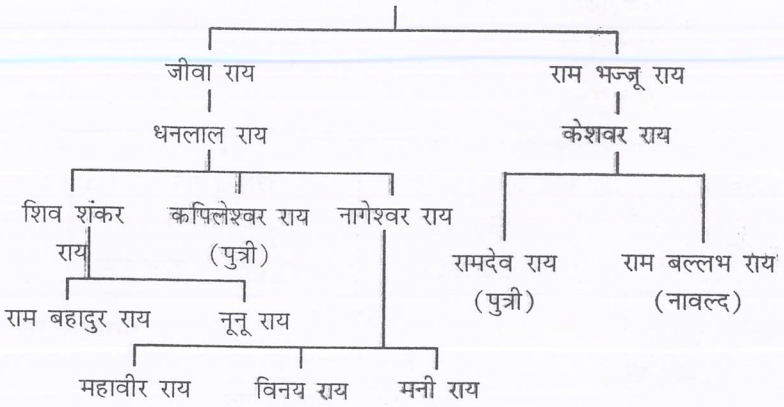

चौ० परसी राय

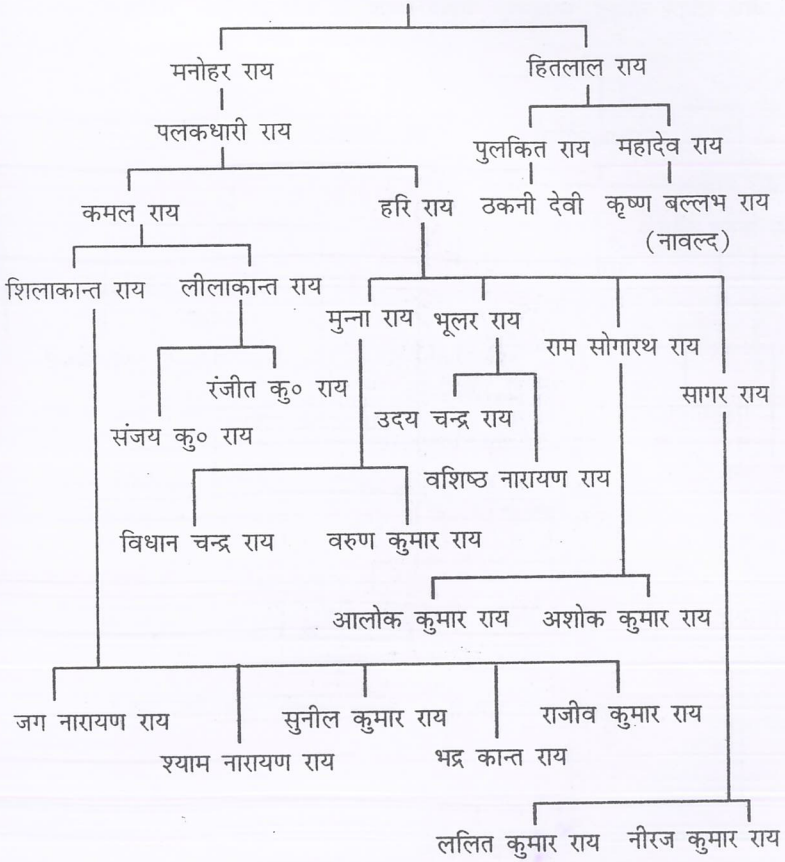

चेगनी दाई

(जौजे जयानन्द मिश्र रुद्रपुर)

(मूल- सदरपुरिये कटका, गोत्र- शाण्डिल्य)

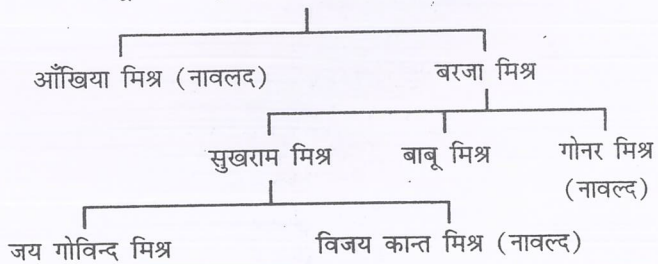

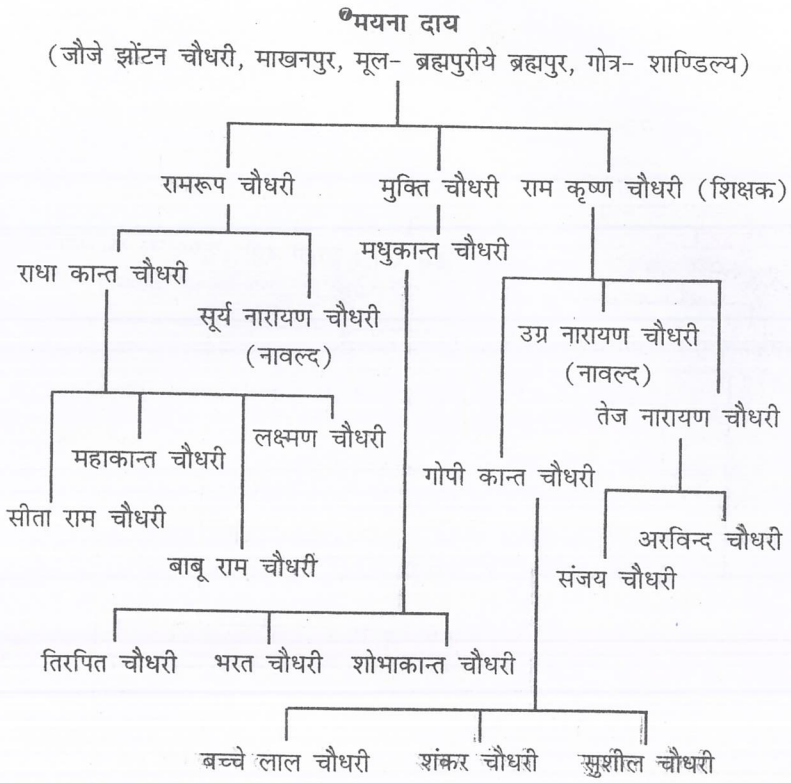
[7]मयना दाय
(जौजे झोंटन चौधरी, माखनपुर, मूल- ब्रह्मपुरीये ब्रह्मपुर, गोत्र- शाण्डिल्य)
रामरूप चौधरी
मुक्ति चौधरी
राम कृष्ण चौधरी (शिक्षक)
मधुकान्त चौधरी
राधा कान्त चौधरी
सूर्य नारायण चौधरी (नावल्द)
उग्र नारायण चौधरी (नावल्द)
तेज नारायण चौधरी
महाकान्त चौधरी
लक्ष्मण चौधरी
गोपी कान्त चौधरी
सीता राम चौधरी
अरविन्द चौधरी
बाबू राम चौधरी
संजय चौधरी
तिरपित चौधरी
भरत चौधरी
शोभाकान्त चौधरी
बच्चे लाल चौधरी
शंकर चौधरी
सुशील चौधरी

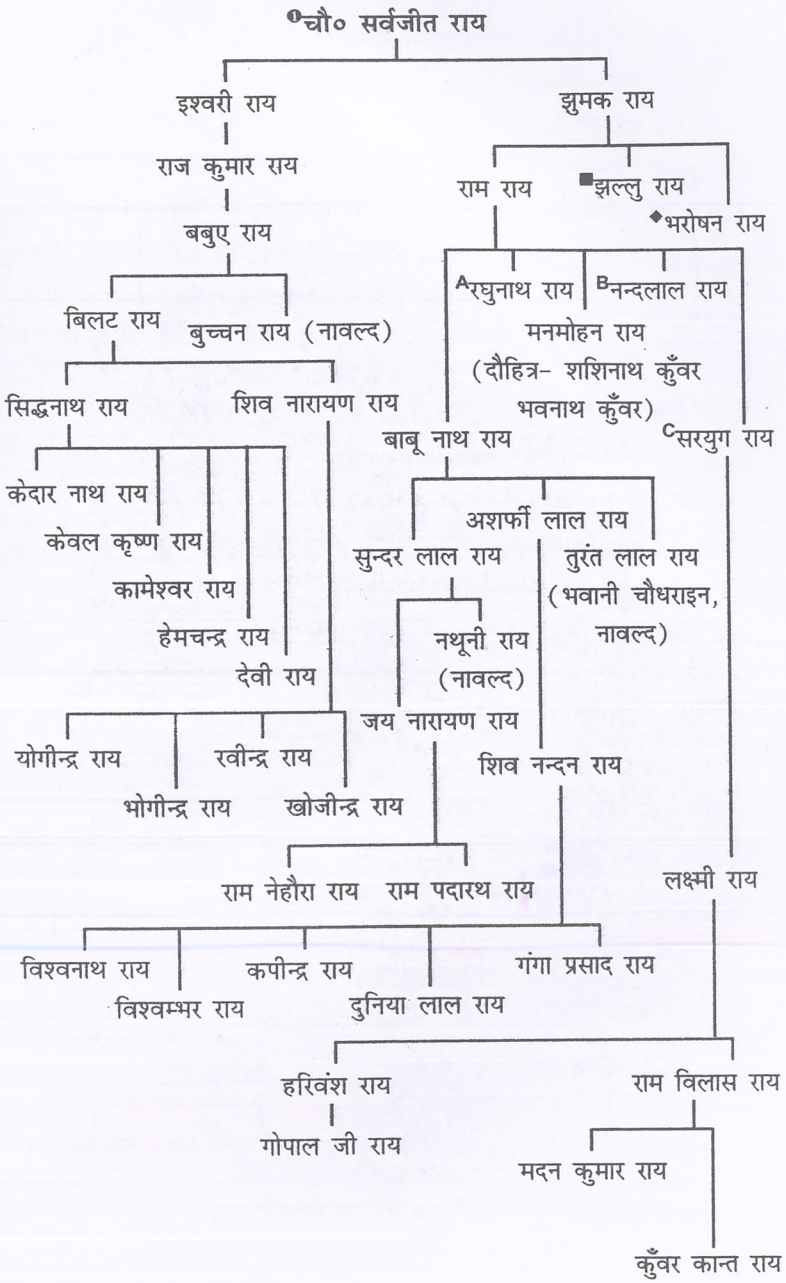
[1]चौ० सर्वजीत राय
इश्वरी राय
झुमक राय
राज कुमार राय
राम राय
■झल्लु राय
◆भरोषन राय
बबुए राय
[A]रघुनाथ राय
[B]नन्दलाल राय
बिलट राय
बुच्चन राय (नावल्द)
मनमोहन राय (दौहित्र- शशिनाथ कुँवर भवनाथ कुँवर)
सिद्धनाथ राय
शिव नारायण राय
बाबू नाथ राय
[C]सरयुग राय
केदार नाथ राय
अशर्फी लाल राय
केवल कृष्ण राय
सुन्दर लाल राय
तुरंत लाल राय (भवानी चौधराइन, नावल्द)
कामेश्वर राय
हेमचन्द्र राय
नथूनी राय (नावल्द)
देवी राय
जय नारायण राय
योगीन्द्र राय
रवीन्द्र राय
शिव नन्दन राय
भोगीन्द्र राय
खोजीन्द्र राय
राम नेहौरा राय
राम पदारथ राय
लक्ष्मी राय
विश्वनाथ राय
कपीन्द्र राय
गंगा प्रसाद राय
विश्वम्भर राय
दुनिया लाल राय
हरिवंश राय
राम विलास राय
गोपाल जी राय
मदन कुमार राय
कुँवर कान्त राय

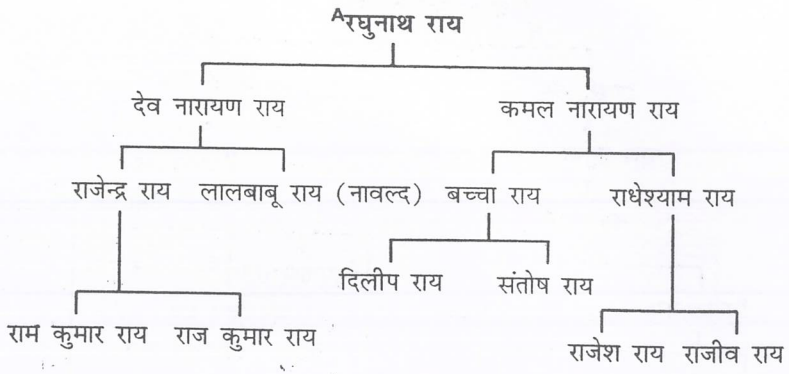
[A]रघुनाथ राय
देव नारायण राय
कमल नारायण राय
राजेन्द्र राय
लालबाबू राय (नावल्द)
बच्चा राय
राधेश्याम राय
दिलीप राय
संतोष राय
राम कुमार राय
राज कुमार राय
राजेश राय
राजीव राय

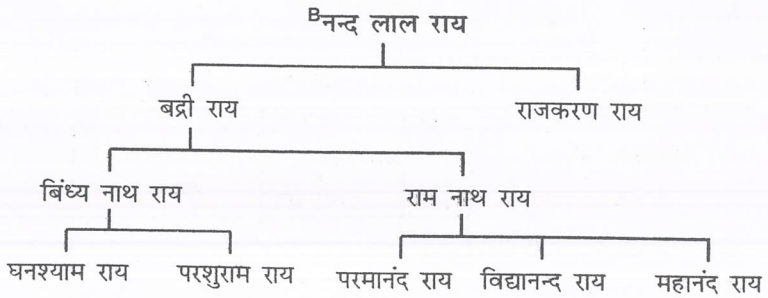
[B]नन्द लाल राय
बद्री राय
राजकरण राय
बिंध्य नाथ राय
राम नाथ राय
घनश्याम राय
परशुराम राय
परमानंद राय
विद्यानन्द राय
महानंद राय

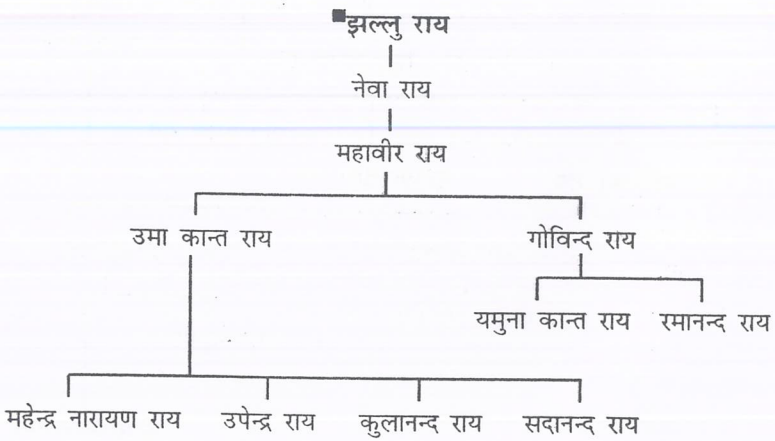
■झल्लु राय
नेवा राय
महावीर राय
उमा कान्त राय
गोविन्द राय
यमुना कान्त राय
रमानन्द राय
महेन्द्र नारायण राय
उपेन्द्र राय
कुलानन्द राय
सदानन्द राय

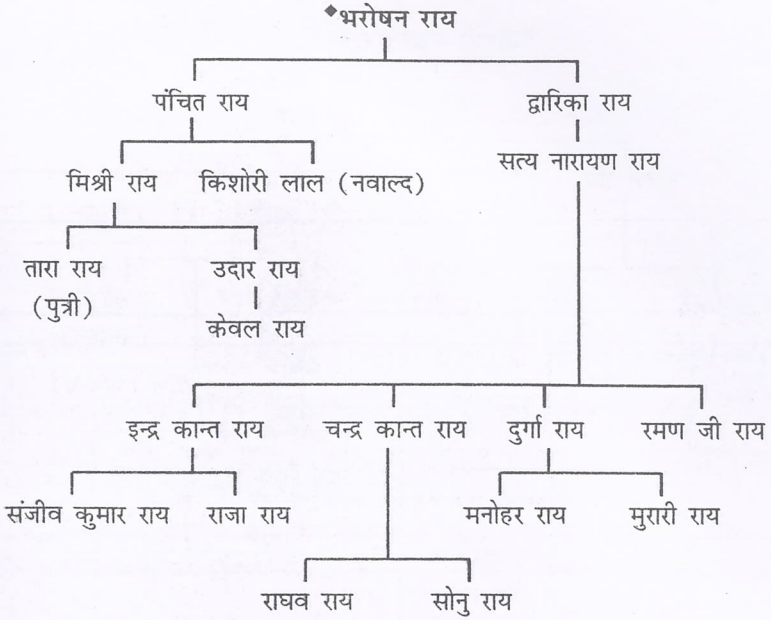
◆भरोषन राय
पंचित राय
द्वारिका राय
मिश्री राय
किशोरी लाल (नवाल्द)
सत्य नारायण राय
तारा राय
(पुत्री)
उदार राय
केवल राय
इन्द्र कान्त राय
चन्द्र कान्त राय
दुर्गा राय
रमण जी राय
संजीव कुमार राय
राजा राय
मनोहर राय
मुरारी राय
राघव राय
सोनु राय

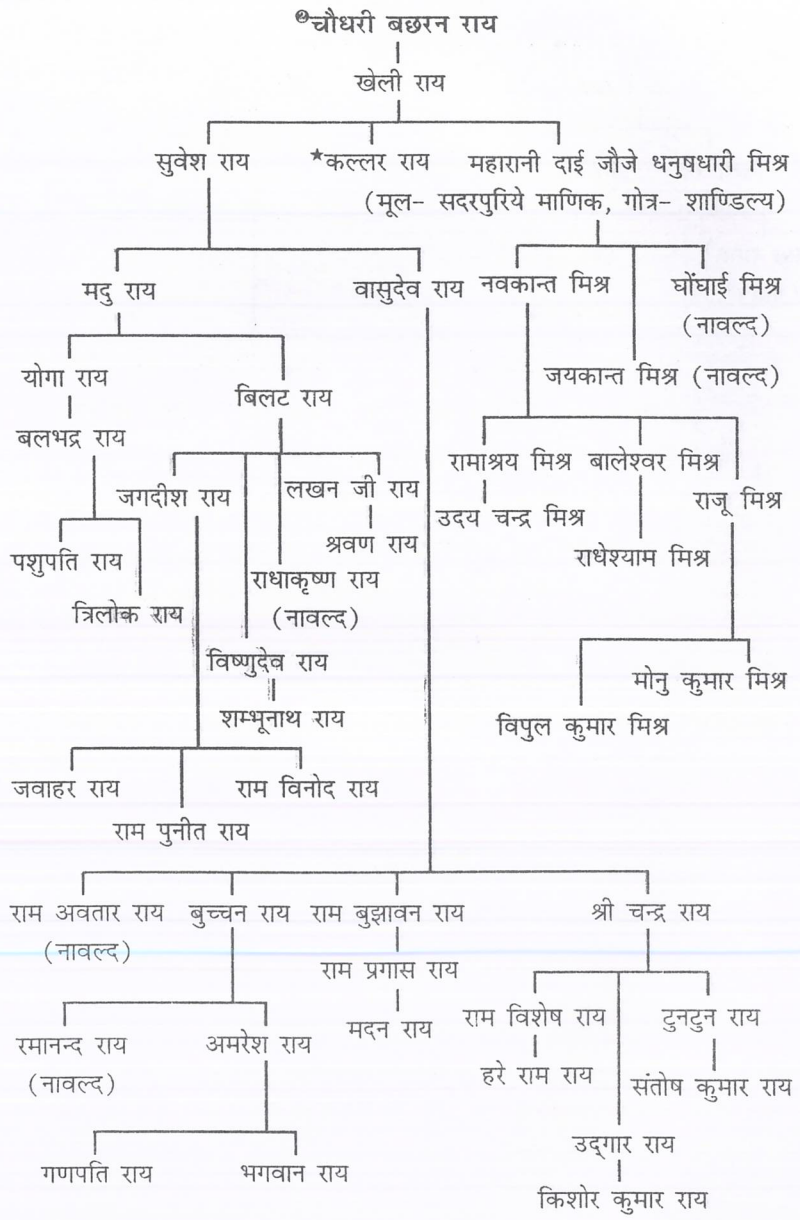
चौधरी बछरन राय
खेली राय
सुवेश राय
*कल्लर राय
महारानी दाई जौजे धनुषधारी मिश्र
(मूल- सदरपुरिये माणिक, गोत्र- शाण्डिल्य)
मदु राय
वासुदेव राय
नवकान्त मिश्र
घोंघाई मिश्र
(नावल्द)
योगा राय
बिलट राय
जयकान्त मिश्र (नावल्द)
बलभद्र राय
जगदीश राय
लखन जी राय
रामाश्रय मिश्र
बालेश्वर मिश्र
राजू मिश्र
उदय चन्द्र मिश्र
श्रवण राय
पशुपति राय
राधेश्याम मिश्र
राधाकृष्ण राय
(नावल्द)
त्रिलोक राय
विष्णुदेव राय
मोनु कुमार मिश्र
शम्भूनाथ राय
विपुल कुमार मिश्र
जवाहर राय
राम विनोद राय
राम पुनीत राय
राम अवतार राय
(नावल्द)
बुच्चन राय
राम बुझावन राय
श्री चन्द्र राय
राम प्रगास राय
रमानन्द राय
(नावल्द)
अमरेश राय
मदन राय
राम विशेष राय
टुनटुन राय
हरे राम राय
संतोष कुमार राय
उद्गार राय
गणपति राय
भगवान राय
किशोर कुमार राय

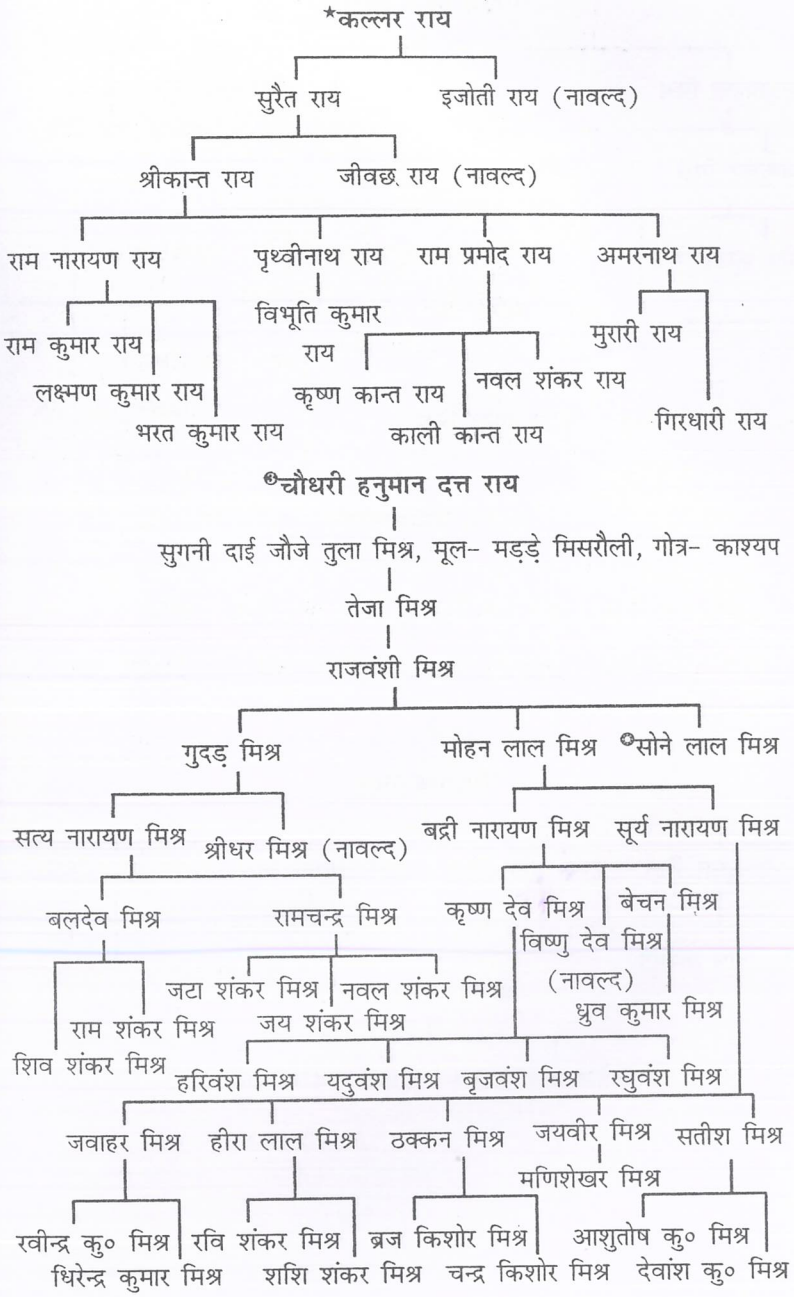
*कल्लर राय
सुरैत राय
इजोती राय (नावल्द)
श्रीकान्त राय
जीवछ राय (नावल्द)
राम नारायण राय
पृथ्वीनाथ राय
राम प्रमोद राय
अमरनाथ राय
राम कुमार राय
विभूति कुमार राय
मुरारी राय
लक्ष्मण कुमार राय
कृष्ण कान्त राय
नवल शंकर राय
भरत कुमार राय
काली कान्त राय
गिरधारी राय
चौधरी हनुमान दत्त राय
सुगनी दाई जौजे तुला मिश्र, मूल- मड़ड़े मिसरौली, गोत्र- काश्यप
तेजा मिश्र
राजवंशी मिश्र
गुदड़ मिश्र
मोहन लाल मिश्र
सोने लाल मिश्र
सत्य नारायण मिश्र
श्रीधर मिश्र (नावल्द)
बद्री नारायण मिश्र
सूर्य नारायण मिश्र
बलदेव मिश्र
रामचन्द्र मिश्र
कृष्ण देव मिश्र
बेचन मिश्र
विष्णु देव मिश्र
(नावल्द)
जटा शंकर मिश्र
नवल शंकर मिश्र
ध्रुव कुमार मिश्र
राम शंकर मिश्र
जय शंकर मिश्र
शिव शंकर मिश्र
हरिवंश मिश्र
यदुवंश मिश्र
बृजवंश मिश्र
रघुवंश मिश्र
जवाहर मिश्र
हीरा लाल मिश्र
ठक्कन मिश्र
जयवीर मिश्र
सतीश मिश्र
मणिशेखर मिश्र
रवीन्द्र कु० मिश्र
रवि शंकर मिश्र
ब्रज किशोर मिश्र
आशुतोष कु० मिश्र
धिरेन्द्र कुमार मिश्र
शशि शंकर मिश्र
चन्द्र किशोर मिश्र
देवांश कु० मिश्र

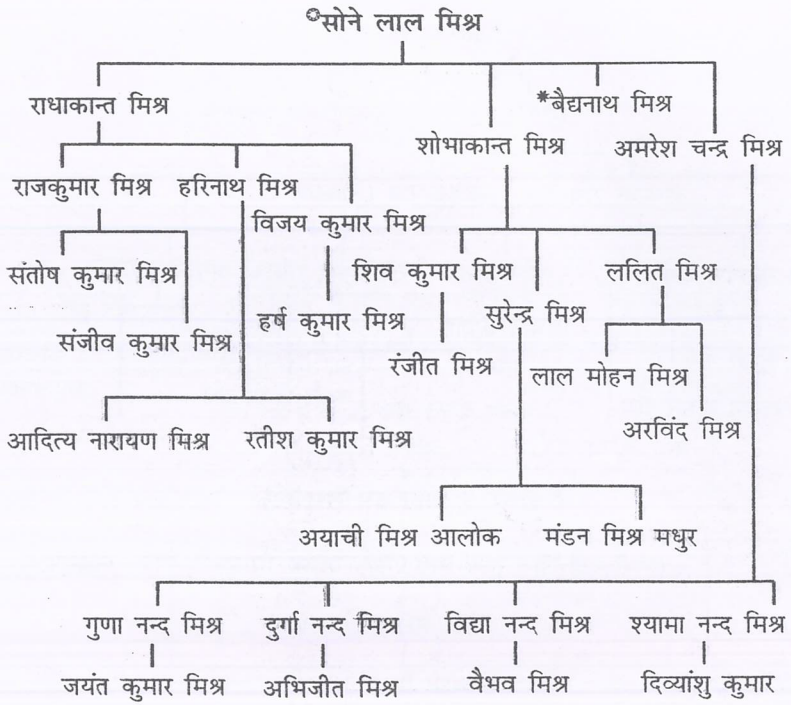
*सोने लाल मिश्र
राधाकान्त मिश्र
*बैद्यनाथ मिश्र
शोभाकान्त मिश्र
अमरेश चन्द्र मिश्र
राजकुमार मिश्र
हरिनाथ मिश्र
विजय कुमार मिश्र
संतोष कुमार मिश्र
शिव कुमार मिश्र
ललित मिश्र
हर्ष कुमार मिश्र
सुरेन्द्र मिश्र
संजीव कुमार मिश्र
रंजीत मिश्र
लाल मोहन मिश्र
आदित्य नारायण मिश्र
रतीश कुमार मिश्र
अरविंद मिश्र
अयाची मिश्र
आलोक
मंडन मिश्र
मधुर
गुणा नन्द मिश्र
दुर्गा नन्द मिश्र
विद्या नन्द मिश्र
श्यामा नन्द मिश्र
जयंत कुमार मिश्र
अभिजीत मिश्र
वैभव मिश्र
दिव्यांशु कुमार

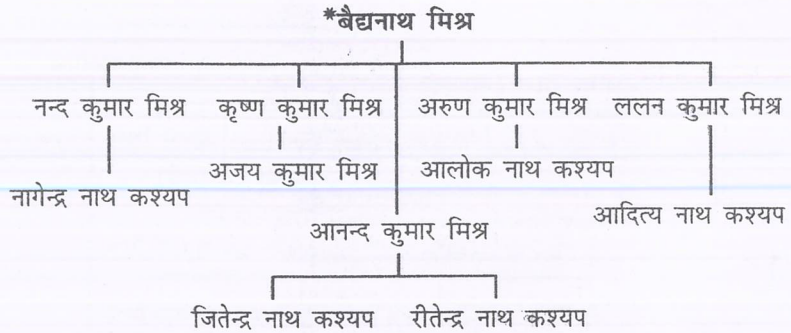
*बैद्यनाथ मिश्र
नन्द कुमार मिश्र
कृष्ण कुमार मिश्र
अरुण कुमार मिश्र
ललन कुमार मिश्र
अजय कुमार मिश्र
आलोक नाथ कश्यप
नागेन्द्र नाथ कश्यप
आदित्य नाथ कश्यप
आनन्द कुमार मिश्र
जितेन्द्र नाथ कश्यप
रीतेन्द्र नाथ कश्यप

श्री नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

जन्म : 2 जनवरी, 1950

जन्म स्थान : भैरव बलिया (मातृक)

पिता : स्व. बैद्यनाथ मिश्र
सरल चित्त, साधु स्वभाव, उदारमना एवं धर्मपरायण

माता : स्व. गोसाउनि देवी
करुणामयी, सहृदया एवं धर्मपरायणा

पत्राचारक पता : ग्राम एवं पत्रा. उफरदाहा, थाना- बहेड़ा, जिला- दरभंगा (बिहार) 847233

शिक्षा : स्नातक कला, संगीत प्रभाकर

वृत्ति : लेखापाल, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड (अवकाश प्राप्त)

रुचि : गीत-संगीत, मैथिली कथा आ कविताक माध्यमे सामाजिक कुरीति आ राजनीति पर व्यंग्य रचना

प्रकाशित पोथी : विधात्री - (गीत एवं कविता संग्रह) 2004
गामघर - (कथा संग्रह) 2005
सुजाता - (उपन्यास) 2006
महारानी कैकेयी - (प्रवचनात्मक निबंध) 2008
गुदड़ीक लाल - उपन्यास) 2008
अनठिया कुकुर - (उपन्यास) 2011
सुन्दरकाण्ड - (सम्पादन) 2015
आडम्बर - (कथा संग्रह) 2017
दिल्लीक पार्क - (शब्दचित्र) 2018
सुकन्या - (उपन्यास) 2019
स्वर्ण कमल - (बाल उपन्यास) 2019
काव्य सरिता (मैथिली काव्य संग्रह) 2019

उपाधि : 'कवि शिरोमणि' (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ; भागलपुर, बिहार)
: 'अंग प्रदेश-साहित्य-साधना सम्मान' (राजा राम मोहन राय स्मृति मंच, भागलपुर)
: 'मैथिली पराग' (उधाडीह, अजगैवीनाथ धाम, सुल्तानगंज, भागलपुर)
: वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान-2010 (मिथिला परिषद्, भागलपुर)।

सम्पर्क : 08986261756